

फरवरी 2008 ■ Rs.15 /-

1947
60
2007

चन्दामामा



PARLE

Ram and Shyam

यम्मी... पॉपिन्स!

HOUNDING KING
CREEP



नयलक्ष्मी कॉलोनी में राम और श्याम पालतू जानवरों के चोर की तलाश कर रहे थे.

पता नहीं हमारी कॉलोनी में जानवरों को कौन चुरा रहा है.

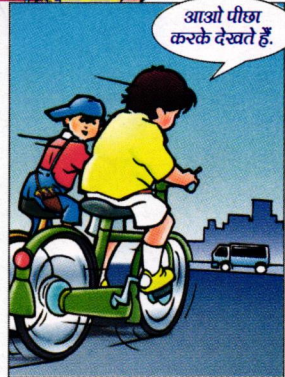


जैसा कि हर कॉलोनी में होता है लोग एक-दूसरे की गाड़ियों को पहचानते हैं. इसलिए जब एक दिन एक रहस्यमय तैल नजर आई तो...

ये अजीब सी तैल यहां क्या कर रही है?



आओ पीछा करके देखते हैं.

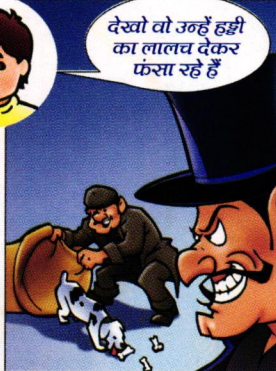


तो तैल एक घर के पास रुकती है...

ये तो किंग क्रीप और उनकी गैंग है, जो हमारे कुत्तों को चुरा रहे हैं.



देखो वो उन्हें हड्डी का लालच देकर फंसा रहे हैं



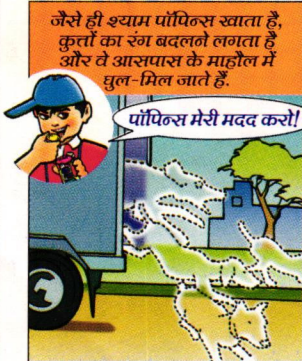
जब वे चोर अपने काम में लगे थे तब हमारे हीरो छुपकर जाते हैं और दरवाजा खोलकर सभी कुत्तों को आजाद कर देते हैं.

हम तुम्हें बचावेंगे.



जैसे ही श्याम पॉपिन्स खाता है, कुत्तों का रंग बदलने लगता है और वे आसपास के माहौल में घुल-मिल जाते हैं.

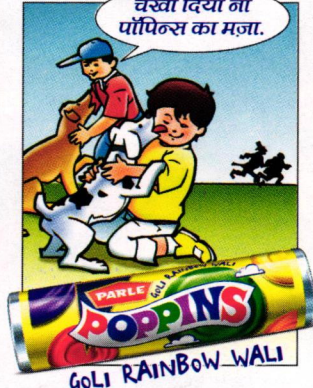
पॉपिन्स मेरी मदद करो!



कुत्ते टेबल को चोरों पर उल्ला कर देते हैं. चोर डरकर यहां-वहां भागने लगते हैं.



चस्वा दिया ना पॉपिन्स का मज़ा.



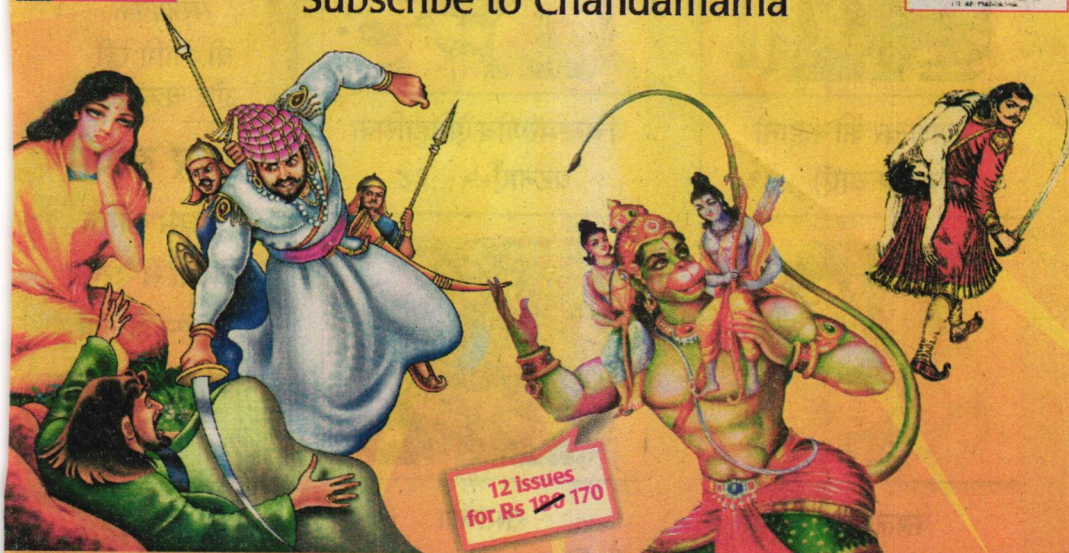
GOLI RAINBOW WALI



Here's a chance to ensure that
your child is in great company.
Every month.

Get **India's Most Loved
Magazine for Children**
at your doorstep.

Subscribe to Chandamama



12 Issues
for Rs 190 170

Chandamama stories explore our traditions, folktales, mythology, history and science in an unforgettable narrative style which captures your child's imagination. Generations of children have grown up reading Chandamama in their mother-tongue. Subscribe today and let your child's quest for knowledge stay alive forever.

Mail my issues of Chandamama ☐ English ☐ Language ☐ Junior Chandamama

Mr/Ms.....

Address.....

City.....State.....Pin.....

Telephone.....Email.....

Enclosed Cheque/DD for Rupees.....

Cheque/DD no.....Favouring **Chandamama India Ltd** on

.....bank. (Please add Rs 90 for non-Chennai cheques)

Please mail the subscription form to : (Allow 4 weeks for enrolment of your subscription)

CHANDAMAMA INDIA LTD, JVL Plaza, 6th Floor, 626 Anna Salai, Teynampet, Chennai 600 018.

Tel : 24334455 Telefax : 24322103 email : chandamama@chandamama.com

website : www.chandamama.com



चन्दा मामा

सम्पुट-५९ फरवरी २००७ सत्रिका - २

विशेष आकर्षण



गुणशेखर की कहानी
(वेताल कथाएँ) ...१९



चिरस्मरणीय ऐतिहासिक
घटनाएँ-५ ...३८



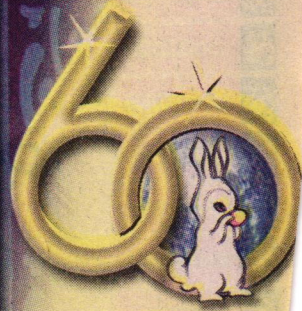
केरल की एक
लोक कथा ...४९



रामायण
(किष्किन्धा काण्ड-४) ...५७

अंतरंग

- | | |
|---|---|
| * पाठकों का पत्रा ...०६ | * महान पुरुषों के जीवन की झाँकियाँ-२६ ...४२ |
| * तीन सपने ...०७ | * चन्दा मामा प्रश्नोत्तरी-१ ...४४ |
| * अपराध-दण्ड ...११ | * बीरबल की कहानियाँ-६ ...४५ |
| * भयंकर घाटी-३० ...१३ | * जातक कथा ...५३ |
| * अजीब बीमारी ...२५ | * सोने के अण्डे ...६३ |
| * भारत दर्शक ...२९ | * अपराजेय गरुड़ ...६७ |
| * कहानी, जो मुझे सबसे अधिक पसन्द थी-८ ...३० | * भारत के धरोहर स्थल ...७१ |
| * समाचार झलक ...३४ | * बच्चे अखबार की सुर्खियों में ...७२ |
| * कोकरे बेल्यूर ...३५ | * आप के पत्रे ...७३ |
| * हमारा गाँव ...३५ | * चित्र कैप्शन प्रतियोगिता ...७४ |



संस्थापक
बी. नागि रेड्डी
और चक्रपाणि

अमर वाणी

अधम व्यक्ति
विघ्नों से डरकर
प्रयत्न ही नहीं
करते। मध्यम प्रकार
के व्यक्ति कार्य तो
प्रारंभ करते हैं, पर
विघ्न पड़ने से त्याग
देते हैं, पर उत्तम
व्यक्ति अनेक विघ्नों
के उपस्थित होने पर
भी अपने प्रयत्न
को नहीं छोड़ते।





बच्चों के लिए कौन होगा आदर्श?

बच्चों, माता-पिता तथा अध्यापकों के लिए वर्ष २००७ का अन्त एक दुःखद भाव के साथ हुआ। उन्हें यह जानकर बड़ा धक्का लगा कि गुड़गाँव (हरियाणा) के एक स्कूल में दो छात्रों ने मिलकर पुरानी दुश्मनी का बदला लेने के लिए अपने एक स्कूल-साथी की हत्या कर दी। रिपोर्ट के अनुसार एक छात्र, अपने पिता की पिस्तौल लेकर स्कूल आया और एक स्कूल साथी पर गोली चलाई। उसके बाद उसने पिस्तौल दूसरे अपराधी छात्र को दी। उसने भी घायल अभागे पर गोली चलाई। घायल छात्र ने घटना-स्थल पर ही दम तोड़ दिया।

अभी इस त्रासदी से लोग उबर नहीं पाये थे कि फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश) के एक स्कूल के प्राचार्य की अज्ञात व्यक्तियों के द्वारा हत्या कर दी गई। वे अवश्य ही बच्चों में लोकप्रिय होंगे, जिन्होंने स्वाभाविक ही अपराधी को तुरन्त पकड़ने की माँग की। पुलिस ने, स्थिति के नियन्त्रण से बाहर हो जाने के डर से, बच्चों की नाजुक आवाज को दबाने के लिए उन पर लाठी चलाई, जिससे कुछ बच्चे घायल हो गये। हम पुलिस की इस कार्रवाई की निन्दा करते हैं, क्योंकि बच्चे ऐसी कठोर कार्रवाई के पात्र नहीं थे।

इन दो घटनाओं से बच्चों की वर्तमान विद्रोही मनःस्थिति परिलक्षित होती है। इन घटनाओं से उत्तेजित होकर अपने दृष्टिकोण को सिद्ध करने के लिए उन्होंने उग्र कदम उठाये। यह बहुत कष्टप्रद है कि हमारे देश में ऐसी घटनाएँ हो रही हैं, जहाँ प्राचीन काल में भगवान बुद्ध ने अहिंसा का उपदेश दिया था। जहाँ हाल में ही, एक मसीहा ने गुलामी से अपने देश को आजाद करने के लिए 'सत्याग्रह' अथवा शान्तिपूर्ण विरोध के अस्त्र का प्रयोग किया था। उन्हें हम राष्ट्रपिता सम्बोधित कर उनका आदर करते हैं।

यह हमलोगों के लिए महसूस करना महत्वपूर्ण है कि अपने बड़ों और नायकों का अनुगमन करना बच्चों के लिए स्वाभाविक है। यह उनका कर्तव्य है कि वे बच्चों के लिए आदर्श बनें और भारत के भावी जिम्मेदार नागरिक बनने में उन्हें सही दिशा प्रदान करें।

सम्पादक : विश्वम

Visit us at : <http://www.chandamama.com>



चन्दामामा

Editor, Publisher : B. Viswanatha Reddi (Viswam)

Chief Executive Officer : L. Subramanyan

Editorial Advisors : Ruskin Bond, Manoj Das

Consultant Editor : K. Ramakrishnan

Artists : K.C. Sivasankaran (Sankar)

Gandhi Ayya, P. Mahesh

Layout Design : R. Sudha

Assistants : D. Revathy, B.A. Hemalata Malini

Research : R. Vaasugi

CIRCULATION TEAM :

Chennai : T N Ravi Shankar, *National Sales Manager*

Mobile +9199620 70014

email: ravishankar.tn@chandamama.com

Mumbai : Sanjay Thorat, *Business Development Manager*

Mobile +91 98210 17787

CHANDAMAMA INDIA LTD., B-3, Lunic Industry

Opp. State Bank of India, Near Police Station Cross Road

No.6, MIDC Andheri (East), Mumbai-400093

Phone +91 22 28312872 / 28311849

email: sanjay.thorat@chandamama.com

New Delhi : Sushil Sharma, *Circulation Manager-North*

Mobile +91 98719 30767

CHANDAMAMA INDIA LTD., Goyal Business Centre,

C-23/2 First floor, Connaught Place, New Delhi-110001

Bangalore : P. Murali, *Asst. Circulation Manager-Karnataka*

Mobile +91 94488 36952

CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street

Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage

Bangalore-560094, Phone +91 80 6655 1000

email:murali.p@chandamama.com

Kolkata : Ananth Prakash, *Circulation Manager-East*

Mobile +91 98351 82202

Advertisement : email : sales@chandamama.com

Online and Interactive : Surajit Agarwal

Mobile +91 99620 70015

email: surajit.agarwal@chandamama.com

Head Office : CHANDAMAMA INDIA LTD.,

JVL Plaza, Block-A, 6th Floor, 626, Anna Salai, Teynampet

CHENNAI-600018, Phone +91 44 2432 2101/02,

Fax +91 44 2432 2103

email : chandamama@chandamama.com

Website : www.chandamama.com

शुल्क :

भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक
₹८० रुपये। अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा 'चंदामामा इंडिया
लिमिटेड' के नाम भेजें।

पाठकों का पन्ना

पुरस्कृत पत्र :

चन्दामामा एक ऐसी मासिक पत्रिका है जिसकी मेरी दृष्टि से भारत में कोई जोड़ी नहीं है। अपनी दस वर्ष की आयु से अठारह वर्ष तक मैं चन्दामामा पढ़ता चला आ रहा हूँ। चन्दामामा के अतिरिक्त मैंने लगभग सभी भारतीय पत्रिकाएँ पढ़ी हैं। पर चन्दामामा जैसी कोई दूसरी पत्रिका नजर नहीं आई। चन्दामामा में शामिल हैं: विशुद्ध ज्ञान, उत्कृष्ट ज्ञान, उत्कृष्ट विषय वस्तु, आकर्षक तथा मर्म स्पर्शी दृश्य एवं घटनावली, भाषा की शुद्धता एवं संस्कृत शब्दों का सम्मिश्रण, जो कि पूर्ण भारतीयता का परिचायक है। इसकी पौराणिकता ही इसकी मूल विशेषता है।

मेरे विचारानुसार चन्दामामा को मात्र 'शिशु मानसिकता की पत्रिका' कहना, मूर्खता ही होगी। अपितु यह कहा जाना युक्ति युक्त होगा कि चन्दामामा की पाठ्य विषय वस्तुएँ वयस्कों को भी पर्याप्त ज्ञान प्रदान करती हैं। अपनी इष्ट देवी सरस्वती से, चन्दामामा की दीर्घायु की प्रार्थना करता हूँ।

- डा. उज्ज्वल, पटना

जब तक मुझे नौकरी नहीं मिली तब तक मैं चन्दामामा को लगातार पढ़ता रहा। मेरे दादा और दादी 'सीरियल्स' को काटते थे और सुरक्षित रखते थे। दुर्भाग्यवश मैंने उन्हें खो दिया। अब प्रकाशित होनेवाली "भयंकर घाटी" को सावधानी से सुरक्षित रख रहा हूँ।

- श्री चैतन्य, झाँसी

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

फरवरी २००८

चन्दामामा



तीन सपने

गोकर्णिक के राजा मणिकर्ण बड़े ही धार्मिक और धर्मात्मा थे। योगपुंगव व साधु संन्यासियों के प्रति वे अमित आदर भाव रखते थे। वे अक्सर महनीय योगियों के दर्शन कर उनके आशीर्वाद पाया करते थे। राजधानी में जो भी साधु संन्यासी आते थे, उनका सादर स्वागत करते थे और श्रद्धापूर्वक उनका आतिथ्य करते थे।

एक बार एक जटाधारी नामक संन्यासी राजभवन पधारे। राजा ने यथावत् उनका स्वागत-सत्कार किया और साष्टांग प्रणाम किया। राजा के विनयपूर्ण व्यवहार से वे बहुत ही प्रसन्न हुए और उन्हें कितने ही आध्यात्मिक विषयों का बोध किया। राजभवन से निकलने के पहले उन्होंने राजा से कहा, “राजन, तुमसे एक मुख्य विषय बताना चाहता हूँ। तुम आज की रात से लेकर तीन रातों तक लगातार तीन बुरे सपने देखने

जा रहे हो। सावधानी बरतना। नहीं तो आपत्ति में फँस जाओगे।” फिर वे वहाँ से चले गये।

यह सुनते ही राजा बहुत घबरा गये। उन्होंने तुरंत मंत्रियों को बुलवाया और विषय बताया। तब विवेकवर्धन नामक मंत्री ने कहा, “जटाधारी ने आपसे यह बताया कि ये बुरे सपने आप रात ही के समय देखेंगे। इसलिए आप दिन में सो जाइये और रात को जागे रहिये। तब इन सपनों को देखने की कोई गुंजाइश नहीं रहेगी। इस प्रकार बुरे सपनों के कारण आनेवाली आपत्तियों से आप बच सकते हैं।”

राजा को यह सलाह सही लगी। उनमें संगीत, शतरंज और आध्यात्मिकता के प्रति अधिकाधिक रुचि थी। शेष मंत्रियों ने भी राजा को सलाह दी कि रात को वे इनसे अपना समय बिताते रहें, जिससे नींद नहीं आयेगी।

शिवराज



राजा ने पहली रात शतरंज खेलते हुए बिताने का निर्णय किया। शतरंज में माहिर लोगों को बुलवाया। सवेरे तक वे शतरंज खेलते रहे। पर, सवेरा होते-होते महाराज को एक छोटी-सी झपकी आ गई।

इस छोटी-सी झपकी के दौरान महाराज ने एक सपना देखा। वे एक जंगल में थे। एक सर्प महाराज को देखते ही फुफकारता हुआ उनकी ओर दौड़ा। उनका पूरा शरीर पसीने से भीग गया। इतने में वे जाग उठे।

राजा ने अगले दिन निश्चय किया कि आज रात को संगीत सुनते हुए समय काटूंगा। मधुर संगीत सुनते-सुनते कुछ क्षणों के लिए उनकी आँखें बंद हो गयीं। उस दौरान सपने में उन्होंने देखा कि आकाश से धड़ाम से एक बिजली उन्हीं

पर गिरने के लिए बढ़ी आ रही है। उससे बचने के लिए वे इधर-उधर भाग रहे थे। फिर भी सपने में वह बिजली उन्हीं का पीछा कर रही थी। इतने में राजा जाग उठे।

तीसरी रात को जब वे धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा कर रहे थे, तब हल्की सी नींद आ गई। इस बार सपने में एक भयंकर सिंह उनपर टूट पड़ा। वे एक कुंड में कूद पड़े। कुंड का पानी रुधिर रंग का था। इतने में युवराणी मणिमेखला वहाँ दिखायी पड़ी और पिता को रुधिर कुंड से बाहर निकाला। इतने में राजा की आँखें खुल गयीं।

सवेरे ही, राजा ने मंत्रियों को बुलवाया और अपने सपनों के बारे में बताया। मंत्रियों ने तुरंत उन सपेरों को बुलवाया, जो साँप की काट को मंत्र शक्ति से दूर करते हैं। उन्होंने महाराज को सलाह दी कि वे शिकार करने जंगल में न जाएँ और राजभवन में ही रहें। अंतःपुर में जितने भी थे, सबको सावधान किया। फिर भी महाराज की घबराहट दूर नहीं हुई।

उस समय शिव नामक एक युवक ने महाराज के दर्शन किये और कहा, “राजन्, मैं बहुत ही अक्लमंद हूँ। किन्तु कोई भी मेरी अक्लमंदी को मानने के लिए तैयार नहीं है। कम से कम आप मेरी अक्लमंदी को जानिये, नहीं तो मैं हिमालय पर्वतों पर चला जाऊँगा।”

उसकी बातें सुनकर महाराज को लगा कि यह कोई पागल है, जो जी में आया, बक रहा है।

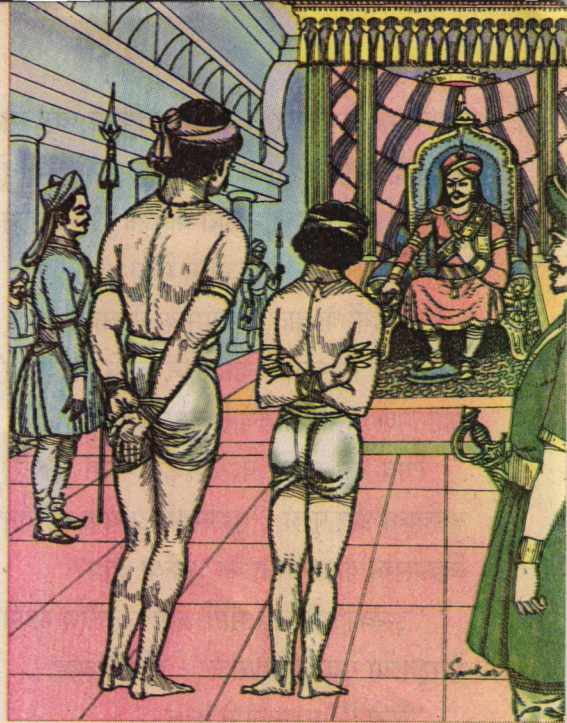
फिर उन्हें लगा कि हो सकता है, यह सचमुच ही अक्लमंद हो, इसमें कोई अपूर्व शक्ति भरी पड़ी हो। यों सोचकर उन्होंने जटाधारी के बताये तीनों सपनों के बारे में उससे बताया।

पूरा विषय सुनने के बाद और थोड़ी देर सोचने के बाद शिव ने कहा, “महाराज, योगी, संन्यासी दैवज्ञ होते हैं। उनके मुँह से निकली बात कभी भी व्यर्थ नहीं होती। लेकिन उनकी बातों में रहस्य और गूढ़ार्थ भरा होता है। जो तीन सपने आपको परेशान कर रहे हैं, उनका मैं विश्लेषण करूँगा और उनका समाधान भी बता सकूँगा। पहले, दो सपनों का विश्लेषण करूँगा। उनमें आपकी दृष्टि के अनुसार वास्तविकता हो तो तीसरे सपने पर प्रकाश डालूँगा।”

“हाँ, हाँ, जरूर बताना। देरी किस बात की?” महाराज ने कहा।

“महाराज, आपने प्रथम सपने में देखा, एक जंगल और जंगल में एक सर्प। सर्प प्रतिकार का प्रतीक है, संकेत है। इस सपने का अंतर्भाव यही है कि कोई आपसे प्रतिकार लेना चाहता है और वह मौक़े की ताल में है। अब रही बिजली की बात। बिजली हठात् गिरती है। मतलब यह हुआ कि कोई अप्रत्याशित घटना घटनेवाली है। बिजली आपका पीछा कर रही है तो इसका यह मतलब हुआ कि जो दुर्घटना घटनेवाली है, वह आपकी तरफ इंगित कर रही है, उसका निशाना आप हैं।”

शिव की अक्लमंदी पर राजा को विश्वास हो गया, क्योंकि उसके विश्लेषण बुद्धिजन्य और



तर्कसंगत थे। राजा के आदेश पर शिव के रहने के लिए आवश्यक प्रबंध किया गया। शिव के विश्लेषण के अनुसार खूब सोचने के बाद राजा की दृष्टि एक विषय पर गयी। हाल ही में राज्य में लुटेरे ज्यादा हो गये थे, इसलिए राजा ने उनपर रोक लगाने के लिए आवश्यक प्रयत्न किये। उन्हें लगा कि लुटेरों का सरदार भैरव उन्हें मार डालना चाहता है।

अब राजा ने सब लुटेरों को पकड़वा लिया, जिनमें भैरव भी था। उससे पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि भैरव ने विषैले सर्प को राजा के शयनागार में भेजने का षडयंत्र रचा था और उनका अंत कर देना चाहा था। भैरव ने यह अपराध स्वीकार भी किया।

यों यह साबित हो गया कि राजा के प्रथम

सपने का विश्लेषण शिव ने जो किया, वह सौ फी सदी सही है। राजा बेहद खुश हुए। द्वितीय सपने से संबंधित जानकारी पाने के लिए उन्होंने गुप्तचरों को चारों दिशाओं में भेजा।

दो दिनों के बाद एक गुप्तचर ने आकर कहा, “सिंहपुरी के राजा विक्रमसेन हमारे राज्य पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहे हैं।”

शिव की बातों पर चकित राजा ने उसे बुलवाया और पूछा, “मुझसे भी अधिक बलवान विक्रमसेन का सामना कैसे किया जाए?”

“इसका परिष्कार मार्ग आपके तृतीय सपने में सुझाया गया है महाराज”, शिव ने कहा।

“कैसे?” महाराज ने पूछा।

“महाराज, आपने सपने में जिस सिंह को देखा, वह सिंहपुरी का राजा विक्रमसेन है। आपका रक्त से भरे कुंड में गिरना होनेवाले रक्तपात का संकेत है। युवराणी ने आपको उस कुंड से निकाला और आपकी रक्षा की। वही युवराणी आपको इस विपत्ति से बचा सकती है”, शिव ने कहा। “यह कैसे संभव है?” महाराज ने संदेह व्यक्त किया।

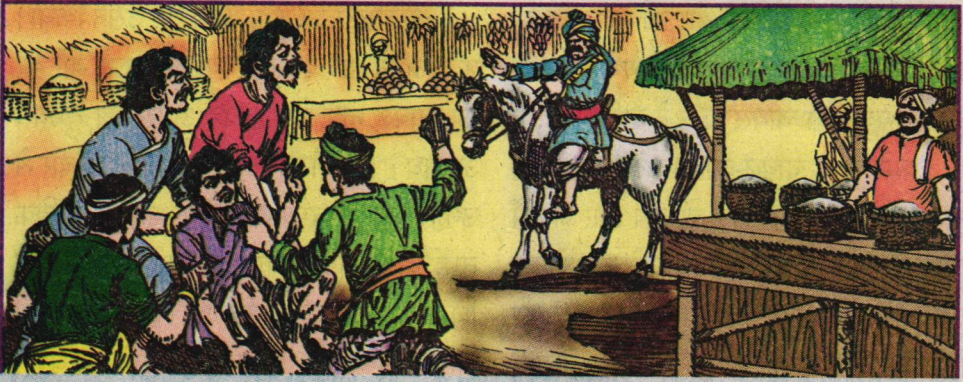
“सिंहपुरी के राजा का एक बालिग बेटा है। युवराणी का विवाह उससे करायेंगे तो युद्ध की बात ही नहीं उठेगी।” शिव ने स्पष्ट किया।

राजा मणिकर्ण ने उसकी बातों में छिपी वास्तविकता को पहचाना। उन्होंने दूसरे ही दिन अपनी पुत्री का छायाचित्र विक्रमसेन को भेजा और पत्र में लिखा, “आप सहमत हों तो मेरी पुत्री को आप की बहू बनने का सौभाग्य प्रदान कीजिये। यह मेरी हार्दिक इच्छा है।”

मणिमेखला के अद्भुत सौंदर्य पर मुग्ध सिंहपुरी के युवराज ने यह प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार किया। अब विक्रमसेन ने गोकर्णिक पर आक्रमण करने का विचार त्यज दिया और अपने बेटे की शादी की तैयारियों में लग गया। फिर उनका विवाह बहुत बड़े पैमाने पर संपन्न हुआ।

शिव ने राजा के तीनों सपनों का विश्लेषण बड़ी ही सक्षमता से की। उसी की वजह से राज्य घोर विपत्तियों से बच पाया। शिव की समझदारी की राजा ने भरपूर प्रशंसा की और उसे अपने आन्तरिक सलाहकार के पद पर नियुक्त किया।





अपराध-दण्ड

कोतवाल संगमेश्वर एक दिन शाम को घोड़े पर नगर की गलियों में घूम रहा था तो उसने देखा कि चार लोग एक युवक को पीट रहे हैं। उन्होंने उनसे पूछा, “इसे क्यों पीट रहे हो?”

“इसने परमेश्वर सेठ की दुकान में चोरी की है,” उन चारों में से एक ने कहा।

“यह चोरी करे तो इसे पीटने का अधिकार तुम्हें किसने दिया?” कोतवाल ने पूछा।

“चोरी अपराध है न? इसीलिए हमने इसे पीटा”, धीमे स्वर में एक ने कहा।

“अपराधियों को पहरेदारों के हवाले करना चाहिये। सुनवाई होनी चाहिये। जुर्म साबित हो तो सजा होगी। न्यायाधिकारी का काम तुम लोग कैसे कर सकते हो?” फिर कोतवाल ने पहरेदारों को बुलाया और अपराधी के साथ उन लोगों को भी थाना ले जाने की आज्ञा दी।

दूसरे दिन कोतवाल ने न्यायाधिकारी के सामने उन चारों को खड़ा किया।

न्यायाधिकारी ने युवक से पूछा, “तुम्हारा नाम क्या है?” “वीर”, युवक ने कहा।

“तुम पर आरोप है कि तुमने परमेश्वर सेठ की दुकान से चावलों के एक बोरे की चोरी की। क्या यह सच है?” न्यायाधिकारी ने पूछा।

“महोदय, मैंने एक हफ्ते तक परमेश्वर की चहारदीवारी को बनाने का काम किया। यह उनके बताने पर ही काम किया कि हफ्ते भर का काम करने पर चावल का एक बोरा दूंगा। इसीलिए मैंने यह काम पूरा किया। इस बीच उन्होंने कहा, ‘पिछवाड़ में जो कुआँ है, उसके चारों ओर की दीवार गिरने ही वाली है। उस पुरानी दीवार को गिरा दो और नयी दीवार बना दो। उसके निर्माण में दो दिन लगेगे।’ मैंने उनसे कहा कि स्वग्राम

वाणी श्री

जाकर दो दिनों में लौटूँगा और जो काम किया, उसकी मजदूरी के लिए पहले दिये गये वचन के अनुसार एक बोरा चावल पहले दे दीजिये।

“परमेश्वर ने चावल का बोरा देने से इनकार कर दिया। इसपर मैं नाराज हो उठा और जब मैं दुकान से एक बोरा चावल लेकर जाने लगा तो वह ‘चोर चोर’ जोर से चिल्लाया। ये चारों मिलकर मुझे पीटने लगे तो कोतवाल ने मुझे इनसे छुड़वाया”, यों वीर ने विवरण दिया।

“परमेश्वर सेठ, तुमने वीर का कहा सुना है न?, यह जो कह रहा है, क्या वह सच है?” न्यायाधिकारी ने पूछा।

“मेरी दुकान से एक बोरे चावल की इसने चोरी की, यह सच है”, परमेश्वर ने कहा।

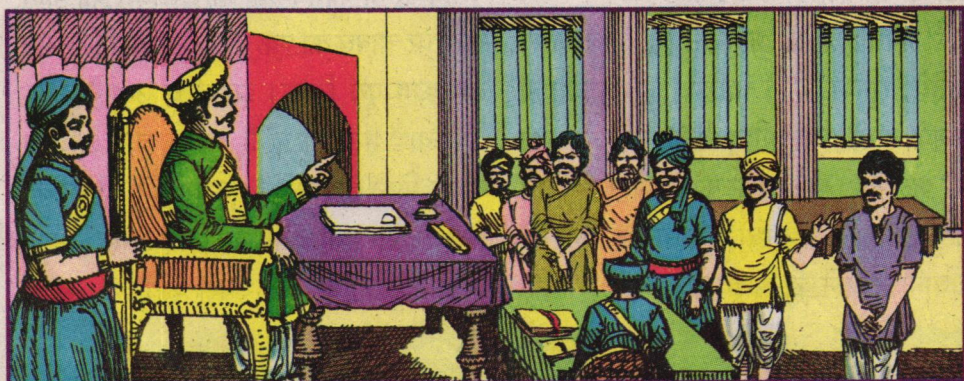
“उसने एक हफ्ते भर तक मजदूरी की और तुमने इस काम के लिए रकम नहीं दी। यह क्या तुम्हारी गलती नहीं है?” न्यायाधिकारी ने पूछा।

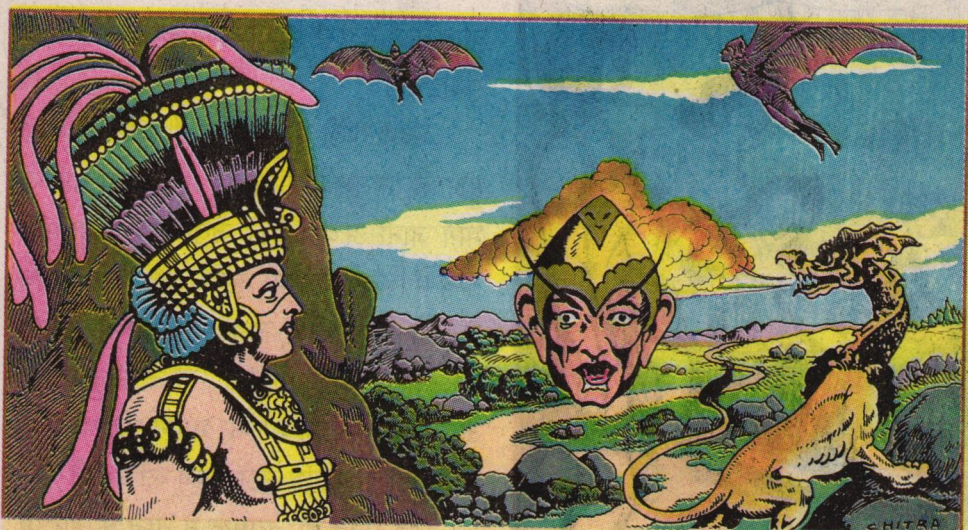
“मैंने थोड़े ही कहा कि नहीं दूँगा। इतना ही कहा कि काम पूरा करने पर ही रकम दूँगा”, परमेश्वर ने कहा।

“इसे पहले जो काम सौंपा था, उसने किया। परंतु अपने वादे के मुताबिक तुमने उसे बोरे भर का चावल नहीं दिया। यह अवश्य ही तुम्हारा अपराध है।” न्यायाधिकारी ने कहा। बाद वीर से उन्होंने कहा, “परमेश्वर ने अपने वादे के मुताबिक तुम्हें चावल नहीं दिया। तब तुम्हें कोतवाल को शिकायत करनी थी। उसे डरा-धमका कर तुम चावल का बोरा ले गये। यह तुम्हारा अपराध है। स्वग्राम जाओ और लौटकर उस कुएँ की दीवार बनाना। तब बोरे भर का चावल और दस अशर्फियाँ परमेश्वर से पा सकते हो।”

वीर ने न्यायाधिकारी का यह निर्णय मान लिया। बाद न्यायाधिकारी ने कहा, “परमेश्वर ‘चोर-चोर’ कहकर क्यों चिल्लाया? इन चारों ने सच्चाई जाने बिना वीर को क्यों पीटा? उस अपराध के लिए इन चारों को एक हफ्ते की जेल की सजा भुगतनी होगी। यों हर कोई कानून को अपने हाथ में लेने लगेगा, तो न्याय-व्यवस्था अस्तव्यस्त हो जायेगी।”

न्यायाधिकारी का फैसला सुनकर सबने तालियाँ बजायीं।





भयंकर घाटी

30

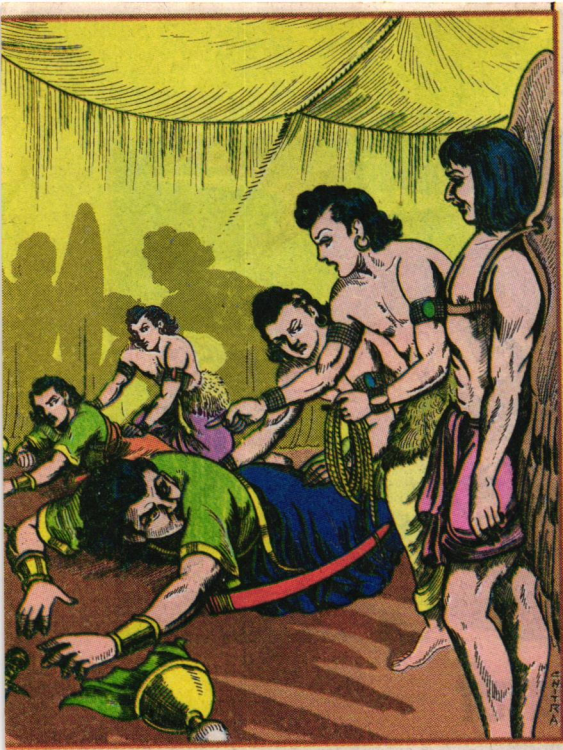
(गरुड़ के मुँहवाले सरदार के मनुष्यों को केशव और उसके साथी मिल गये। पर उस दिन रात को केशव के तम्बू में बिड़ाली और श्वानकर्णी के गिरोहों के दो जंगली आदमी आये। तम्बू के सामने जित और शक्तिवर्मा थे। उन्होंने उनको पहिचाना। “रुको” वे चिल्लाये और उनकी ओर बढ़े। बाद में-)

शक्तिवर्मा को तलवार लेकर सामने जाते देख, जितवर्मा ने भी तलवार निकालकर जंगलियों का रास्ता रोका। परन्तु दोनों जंगली लोगों ने अपने हाथों से उनको एक तरफ हटाते हुए कहा, “ज्यादा शोर न करो। गरुड़ के मुँहवाले सरदार ने इन तीनों को चुपचाप लाने के लिए कहा है। पास के तम्बू में ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक और मोटू हैं, उनको यह नहीं मालूम होना चाहिए।”

यह सुन, जित और शक्तिवर्मा एक दूसरे का मुँह देखने लगे। शक्तिवर्मा ने तलवार म्यान में रखते हुए कहा, “यदि सरदार ने तीनों हत्यारों को अपने पास बुलाया है, तो मुझे कोई एतराज नहीं है। परन्तु तुम्हारा नाक-नक्शा देखकर ऐसा लगता है कि तुम पंखवाले लोगों की जाति के नहीं हो। क्यों?”

शक्तिवर्मा के इस प्रकार कहते ही जंगली

चन्दामामा



आदमियों में से एक ने हँसकर कहा, “हमने किसी खास मकसद से ही जंगली आदमियों के मुँह लगा रखे हैं। तुम अपना काम देखो और हटो रास्ते से।” वह यह कहकर आगे चला गया।

जितवर्मा चौंका, उसे जंगलियों की बातों पर विश्वास नहीं हुआ। वह तलवार लेकर उनकी और दौड़ने ही वाला था कि केशव ने पीछे से उसके दोनों पैर खींचे और वह धड़ाम से आगे गिरा। तुरंत जंगली गोमान्ग ने शक्तिवर्मा को पकड़कर आगे धकेल दिया।

जयमल ने एक रस्सी लेकर उन दोनों के पास आकर कहा, “चीं, चाँ की तो तुम दोनों की जान निकाल दूँगा। तुम दोनों बिना मुँह खोले ऐसे पड़े रहो, जैसे मर गये हो।” कहकर उसने रस्सी से दोनों के हाथ पैर बाँध दिये। इतने में

बगल के तम्बू में से ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक की आवाज सुनाई दी।

“ब्रह्मदण्डी को, लगता है, यहाँ जो कुछ हुआ है, मालूम हो गया है। अब हमारा यहाँ से भाग जाना अच्छा है।” जयमल ने कहा और तम्बू में जितने हथियार उसे दिखाई दिये, वे सब ले लिये। इस बीच, ब्रह्मदण्डी और स्थूलकाय जोर-जोर से चिल्लाने लगे, “वे तीनों दुष्ट जित और शक्तिवर्मा को मारकर भागने की सोच रहे हैं। गरुड़ों के सरदार उठो, तम्बू को घेर लो।”

यह सुनते ही जयमल ने तम्बू के द्वार पर रुककर जंगलियों से कहा, “जब तुम दोनों अन्दर आये थे, तभी मैं जान गया था कि तुम कौन हो। हमने पहले तुम्हें बिड़ाली और श्वानकर्णी के साथ देखा था। लेकिन तुम लोगों को किसने इधर भेजा? क्या बिड़ाली और श्वानकर्णी को मालूम पड़ गया है कि हम लोग पंखवालों के बीच फँसे हुए हैं?”

एक जंगली ने कहा, “हाँ, आप लोगों के पीछे-पीछे गुफा में हमलोग भी आ रहे थे। हमलोगों ने देखा कि आप लोग पंखवाले मनुष्यों के चंगुल में फँस गये हैं। बिड़ाली और श्वानकर्णी ने इसीलिए हमें भेजा है।” “अब बताओ कि क्या किया जाये? क्या तुम्हारे गिरोहवाले बड़ी सेना लेकर हमला करने आ रहे हैं?” तब जयमल ने पूछा।

“नहीं, ऐसी बात तो कोई नहीं, हमें उन्होंने सिर्फ यह जानने के लिए भेजा है कि आप लोगों की क्या हालत है।” एक जंगली आदमी ने कहा।

केशव तम्बू से बाहर निकला। ब्रह्मदण्डी की जगह की ओर एक बार देखा। जयमल्ल से उसने कुछ कहना ही चाहा था कि स्थूलकाय चाबुक घुमाता उनकी ओर आने लगा। यह देखते ही जंगली गोमान्ना तलवार लेकर उस पर हमला करने वाला था कि वह जोर से चिल्लाने लगा, “इन तीनों के साथ दो पंखवाले भी मिल गये हैं। गरुड़ों के सरदार के गिरोह में फूट पैदा हो गई है। स्वामी द्रोह... गरुड़ों के सरदार, स्वामी द्रोह।”

जयमल्ल ने एक बार चारों ओर देखा। हर तम्बू के सामने पंखवाले मनुष्य झुण्डों में जमा हो रहे थे? कुछ लोग “दगा, स्वामी... दगा, स्वामी” कहते हुए इधर उधर भाग रहे थे और जो कोई सामने आता उसके कान में कुछ कह रहे थे।

“केशव, गोमान्ना, हमें अब भाग जाने के लिए एक ही उपाय दिखाई देता है। अब तक हमारे सब शत्रु जान गये होंगे कि हम तम्बुओं में से निकलकर भाग गये हैं। वे अब फौरन हमें पकड़ने के लिए आयेंगे। हम कहाँ हैं, किधर भाग रहे हैं, उन्हें नहीं मालूम होना चाहिए, इसलिए हम आपको धोखा देने के लिए एक काम करेंगे। इन जलती मशालों को लेकर जितने तम्बुओं को हम आग लगा सकें उतनों को लगा देंगे। तब जो भागदौड़ मचेगी उसमें हम आसानी से भाग निकलेंगे।” जयमल्ल ने कहा।

जयमल्ल ने अभी अपनी बात पूरी भी न की थी कि केशव, गोमान्ना और दोनों जंगली चमकती मशालों को लेकर “स्वामी द्रोह ... स्वामी द्रोह”



चिल्लाते आस पास के तम्बुओं को आग लगाने लगे। तुरंत वे धाँय धाँय जलने लगे।

ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक और स्थूलकाय को आग देखकर काठ-सा मार गया। ब्रह्मदण्डी ने जादू के डण्डे को ऊपर उठाकर कहा, “हे कालभैरव! क्या मुझे अग्नि में नहलाओगे? क्या भक्त की परीक्षा कर रहे हो?” कहता वह लपटों से बचता भागा जा रहा था। भागते भागते उसने स्थूलकाय से कहा, “वीरो! प्रताप दिखाने का समय यही है। दिखाओ। देखो, ये दुष्ट किस तरफ भागे जा रहे हैं। हाँ, ध्यान रहे कि केशव को कुछ न हो। उसे सही सलामत पकड़ लाना। उसके शरीर को कुछ हानि नहीं पहुँचनी चाहिये। मैं उस गरुड़ के मुँहवाले को उठाता हूँ।” वह सरदार के डेरे के पास गया।



ब्रह्मदण्डी को हड़बड़ाता अपनी ओर भागता आता देख गरुड़ के मुँहवाला सरदार जोर से हँसा। “क्यों मान्त्रिक! क्यों यों सुधबुध खोये गिद्ध की तरह भागे आ रहे हो! क्या बात है?”

“क्या बात है? प्रभो! क्या हम सब की अक्ल मारी गई है? वे दुष्ट हमारे तम्बुओं को आग लगाकर भागे जा रहे हैं, और आप यहाँ बैठे-बैठे हँस रहे हैं। फिर आपके कुछ सेवक भी स्वामी द्रोह करके उन लोगों से जा मिले हैं।” ब्रह्मदण्डी ने हँसते हुए कहा।

“उन स्वामी द्रोहियों को और उन तीनों को जाल में फँसाकर लाने के लिए मैं कभी का आदमी भेज चुका हूँ। तुम मत घबराओ। आराम से बैठो। तुम्हारे अंगरक्षक जित और शक्तिवर्मा कहाँ है? वह मोटू गुलामों का सरदार कहाँ गया?

कहीं वे उन दुष्टों के साथ मिलकर भागने की तो नहीं सोच रहे हैं?” गरुड़ के मुँहवाले सरदार ने मान्त्रिक की ओर घूर घूरकर देखते हुए कहा।

ब्रह्मदण्डी यह प्रश्न सुनकर चौंका। उसने चारों ओर देखते हुए कहा, “नहीं, ऐसा कुछ नहीं होगा। वे भी तुम्हारे अनुचरों के साथ उन दुष्टों को पकड़ने गये होंगे।”

इतने में चार पंखवाले मनुष्य वहाँ भागते हुए आये। उनको देखते ही गरुड़ के मुँहवाले ने पूछा, “क्या वे तीनों मिल गये हैं? स्वामी द्रोह करनेवाले दुष्ट कितने हैं?”

उनमें से एक ने अपने सरदार को झुक झुककर सलाम करते हुए कहा, “सरदार, वे सब मिलाकर पाँच हैं। उन्होंने हमारे लोगों में से कुछ को मार दिया है। वे हमारे व्यूह में से निकलकर सीधे मगरवाली झील की ओर भागे जा रहे हैं।”

“तो, हमारा काम और भी हल्का हो गया। तुम इस तरह रास्ता रोको कि वे झील का चक्कर लगाकर न भाग निकलें। यदि उन्होंने झील में उतरकर पार जाने की सोची तो मगर उनको खा जायेंगे। यदि किनारे पर रुके, तो वे हमारे जाल में फँसकर रहेंगे। यह हमारी चाल है, समझे? अब जाओ।” गरुड़ के मुँहवाले ने कहा।

“पर.. प्रभो! यह देखिये कि कहीं केशव को मगर निगल न जायें। उसे न मरने दीजिये। भयंकर घाटी की धन राशि का वही एक मात्र उत्तराधिकारी है। यदि वह जीवित और सकुशल नहीं पकड़ा गया तो हमारी सारी मेहनत पर पानी

फिर जायेगा और भयंकर घाटी की हमारी इतनी कष्टकर यात्रा निष्फल हो जायेगी। आप लोगों का इतना परिश्रम भी व्यर्थ हो जायेगा।” ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक रह रहकर कहने लगा।

वह सरदार इस तरह उठा जैसे उसने ब्रह्मदण्डी की कोई बात सुनी ही न हो। उसने अपने अनुचरों से कहा, “चलो, देखें, उन्हें मगर खा गये हैं या वे हमारे लोगों के हाथ फँस गये हैं।” फिर वह झील की ओर निकल पड़ा। ब्रह्मदण्डी उनके पीछे-पीछे चलने लगा।

जब वे मगरोंवाली झील के पास पहुँचे तो वह सारी जगह भागनेवालों के चिह्नाने से गूँज रही थी। उसने अपने अनुचरों में दो तीन को पास बुलाकर कहा, “क्या हुआ? क्या वे हमारे जालों में से निकलकर भाग गये हैं?”

“नहीं सरदार, उनको जाल में फँसाने के

लिए हमने चारों तरफ जाल बिछा दिये हैं। वे और कहीं तो जा नहीं सकते थे, इसलिए झील के पास के पेड़ों के झुरमुट में घुस गये हैं। अब हमें उन्हें खोजना होगा और खरगोशों की तरह उनको पकड़कर बाहर निकालना होगा।” उनमें से एक ने कहा।

“शाबाश! अच्छा किया। इस काम को करके दिखाओ।” कहता सरदार एक ढूँढ पर उछलकर खड़ा हो गया। उसके अनुचर मशाल लेकर सब जगह खोजने निकले।

यह सब देखते हुए, ब्रह्मदण्डी ने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि केशव मगरोंवाली झील में कूदकर आत्म हत्या करने का प्रयत्न करे। इस प्रकार सोचने के तुरंत उसने जोर से कहा, “बेटा केशव, तुम्हें प्राणों का भय नहीं है। तुम अपने साथ के द्रोहियों को छोड़कर हमारी ओर चले



आओ। दयालु गरुड़ महाराजा तुम्हें अवश्य माफ़ कर देंगे।”

ब्रह्मदण्डी की आवाज़ के जवाब में चारों ओर से आवाज़ आने लगी, “बिड़ाली की जय! श्वानकर्णी की जय! साथ ही लम्बे भाले पंखवाले मनुष्यों के ऊपर पड़ने लगे।

सरदार ने ठूँठ पर से कूदते हुए कहा, “इन जंगलियों ने हमारे व्यूह के चारों ओर एक और व्यूह बना दिया है। कोई फ़ायदा नहीं है। भागो, गरुड़ पक्षियों की तरह उड़ो।” पीछे मुड़कर वे भागने लगे।

ब्रह्मदण्डी भी उनके पीछे भागने लगा। “जित, शक्ति कहाँ हो?” वह चिल्लाने लगा।

बिड़ाली और श्वानकर्णी ने जब देखा कि झोंपड़ियों को आग लगा दी गई है, तो उन्होंने इसे अच्छा मौका जान पंखवाले मनुष्यों पर हमला कर दिया। जब उनके भाले लगने पर पंखवाले मनुष्य भागने लगे तो उनका हौसला और भी बढ़ा। परन्तु वे यह न जान सके कि केशव और उसके साथी कहाँ हैं। इसलिए श्वानकर्णी और बिड़ाली को यह भी सन्देह हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि

उनके फेंके हुए भाले उनको लगे। तुरंत उन्होंने अपने साथियों को भाले न फेंकने की आज्ञा दी। फिर वे जोर से चिल्लाये, “केशव! जयमल्ल! कहाँ हो?”

बिड़ाली और श्वानकर्णी का चिल्लाना मगरों की झील के किनारे के पौधों में छिपे हुए केशव, उसके साथी और उन जंगलियों को सुनाई दिया। परन्तु वे जवाब देने ही वाले थे कि पंखवाले मनुष्य भागते-भागते उस तरफ़ आये। यह सोच कि वे उनका रास्ता रोकेंगे, वे उनसे लड़ने लगे।

केशव आदि को अपनी तलवारों का उपयोग करने का मौका नहीं मिला। एक तरफ़ मगरों से भरी झील थी और दूसरी ओर पौधे थे। उस परिस्थिति में वे किसी की भी परवाह न करके पंखवाले मनुष्यों से हाथापाई करने लगे।

इस लड़ाई में जो घायल हुए या जिनके पैर फ़िसले, वे झील में जा गिरे। केशव, गोमान्ग आदि भी दो बार गिरे, पर फिर वे किनारे पर आकर पंखवाले मनुष्यों को उसमें धकेलने लगे। दूर बिड़ाली और श्वानकर्णी का चिल्लाना उन्हें सुनाई पड़ रहा था।

(अभी है)



गुणशेखर की कहानी

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया; पेड़ पर से शव को उतारा; उसे अपने कंधे पर डाल लिया और यथावत् श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, “राजन्, क्या साधने की तीव्र इच्छा को लेकर इस भयंकर आधी रात को इतना कठोर परिश्रम कर रहे हो? किन्तु मैंने कुछ ऐसे लापरवाह व्यक्तियों को भी देखा, जिनकी अपनी कोई इच्छा नहीं होती, जिनका कोई लक्ष्य नहीं होता, जो निरुद्देश्य ही कुछ काम करते रहते हैं। परंतु ऐसे व्यक्ति कभी-कभी अपना मन बदल लेते हैं और अद्भुत विजय प्राप्त करते हैं। उन व्यक्तियों के हाथों से ये विजय वे छीन लेते हैं, जो इसके लिए प्रयत्नशील हैं, तत्पर हैं, जिनका जीवन-लक्ष्य ही इस विजय को प्राप्त

वेताल कथाएँ





करना है। मुझे डर है कि कोई तुमसे भी तुम्हारा लक्ष्य छीन न ले और तुम्हारी आशा निराशा में परिवर्तित न हो जाए। तुम्हें सावधान करने के लिए दो भाइयों की कहानी सुनाने जा रहा हूँ, जिसे ध्यानपूर्वक सुनो और निर्णय लो।” फिर वेताल उन दो भाइयों की कहानी यों सुनाने लगा:

विरागदेश के शासक चंद्रशेखर के दो जुड़वाँ पुत्र थे। बड़े का नाम कुलशेखर और छोटे का नाम गुणशेखर था। उन दोनों की परवरिश बड़े ही लाड़-प्यार से होने लगी। यद्यपि वे दोनों समान उम्र के थे, परंतु उनकी व्यवहार शैलियाँ भिन्न-भिन्न थीं। बड़ा कुलशेखर बचपन से ही ऐसा व्यवहार करता था, मानों वही राजा हो। छोटा गुणशेखर दास-दासियों और उनकी संतान को भी समान मानता था और उनसे ऐसा ही व्यवहार

करता था। दादा राजशेखर दोनों को राजवंश संबंधी वीरोचित गाथाएँ सुनाते थे तो गुणशेखर उन गाथाओं को सुनकर संतुष्ट होता था। पर कुलशेखर उन कहानियों को सुनकर डींगें हाँकने लगता था कि बड़ा होने के बाद इससे भी अधिक साहस-भरे काम करके दिखाऊँगा।

चंद्रशेखर हर साल पुत्रों का जन्म-दिनोत्सव बड़े पैमाने पर मनाता था। उनके दसवें साल के जन्म-दिनोत्सव के अवसर पर सुप्रसिद्ध उनके कुलगुरु शंभुनाथ ने पक्षिराज गरुड़ की एक गुडिया अपने शिष्यों के द्वारा भेंट स्वरूप भेजी। वह गुडिया बिल्कुल ही सजीव लगती थी। उसकी पीठ पर इतनी जगह भी थी, जिसपर एक आदमी बैठ सके। बैठकर गले के पास की चाभी घुमाने पर यंत्र की वह गुडिया थोड़ी दूरी तक आगे जाती थी और उसके बाद दस फुट तक की ऊँचाई तक उड़कर जमीन पर लौट आती थी।

उस गुडिया को लेकर दोनों भाई उद्यानवन में गये। यंत्र की गुडिये के करतबों को देखने अंतःपुर की स्त्रियाँ भी अपने बच्चों सहित उस उद्यानवन में आयीं। पहले कुलशेखर उस गुडिये पर बैठा और कुछ समय तक हवा में घूमता रहा। एक दासी का बेटा शरभ भी उस गुडिये पर बैठने के लिए माँ से बार-बार पूछ रहा था। उसकी माँ ने यह कहकर उसे समझाया कि एक दासी के बेटे को ऐसी आशा नहीं रखनी चाहिये। गुणशेखर ने शरभ की ये बातें सुनीं और उसने शरभ से कहा, “तुम भी मेरी ही उम्र के हो। तुम्हारी इच्छा अस्वाभाविक

नहीं है। भाई जब गुडिया मुझे सौंपेंगे तब तुम ही उसपर पहले बैठना और उड़ना।”

थोड़ी देर बाद कुलशेखर ने यंत्र की वह गुडिया भाई को दी। तब गुणशेखर ने शरभ को उसपर बिठाया। कुलशेखर ने तुरंत इसपर आपत्ति जताते हुए कहा कि राजकुमारों की गुडिया पर सेवकों को बैठना नहीं चाहिये। माता-पिता और दादा ने भी बड़े भाई का समर्थन किया तो गुणशेखर ने कहा, “शरभ को इसपर बैठना नहीं चाहिये तो इसपर बैठने का मेरा भी कोई अधिकार नहीं है। मैं इसपर नहीं बैटूंगा। इसे बनानेवाले शंभुनाथ का शिष्य बनूंगा और ऐसी गुडिया का निर्माण करूंगा।” यों कहकर वह वहाँ से तुरंत चला गया।

शंभुनाथ का नाम सुनते ही चंद्रशेखर को लगा कि वे उनके पुत्रों को राजोचित विद्याओं को सिखाने के लिए बिल्कुल सही व्यक्ति हैं। उसने अपने दोनों पुत्रों को शंभुनाथ के गुरुकुलाश्रम भेजा। शंभुनाथ उन्हें सभी विद्याएँ सिखाने लगे। गुणशेखर ने राजोचित विद्याओं के साथ-साथ यंत्र की गुडिया की निर्माण-कला भी सीखी। एक साल के अंदर ही उसने स्वयं एक पक्षिराज गरुड की गुडिया बनायी। शरभ को वहाँ बुलाया और गरुड पक्षी पर बैठकर हवा में उड़ने की उसकी इच्छा पूरी की। बड़े भाई ने इसपर आपत्ति उठायी तो उसने कहा, “यह राजकुमारों के लिए किसी की बनायी गुडिया नहीं है। शरभ के लिए मैंने स्वयं इसका निर्माण किया।” गुणशेखर की बातों को सुनकर शंभुनाथ ने उसकी प्रशंसा करते हुए



कहा, “तुम कोई साधारण मानव नहीं हो। भविष्य में तुम महान बनोगे।”

गुरुकुल में जो-जो हो रहा है, तत्संबंधी विवरण चंद्रशेखर को लगातार मालूम हो रहे थे। दस सालों के विद्याभ्यास की पूर्ति के बाद वह गुरुकुल गया और गुरु से मिलकर कहा, “कुलशेखर में जो राजलक्षण हैं, वे गुणशेखर में नहीं हैं। क्या आपने कभी इसपर ध्यान दिया?”

शंभुनाथ ने मुस्कुराते हुए कहा, “कुलशेखर भविष्य में देश का होनेवाला राजा है। चूँकि गुणशेखर के राजा होने की गुंजाइश नहीं है, इसलिए शायद वह ऐसा व्यवहार कर रहा है।”

राजधानी लौटने के बाद चंद्रशेखर ने पिता से कहा, “चूँकि गुणशेखर को राजा बनने का अधिकार नहीं है, इसलिए शायद वह अपने को



इसके योग्य समझ नहीं रहा है। यह मेरे लिए असहनीय है। राज्य को दो भागों में विभाजित किया जाए तो दोनों को राजा बनने का अवसर मिलेगा।”

“हमें यह राज्य विरासत में मिला है। इसपर शासन चलाने का ही हमें हक है। इसे विभाजित करने का हमें हक नहीं है। अगर चाहो तो तुम किसी अन्य राज्य पर आक्रमण करो और गुणशेखर को उसका राजा बनाओ।” पिता ने सलाह दी।

चंद्रशेखर को पिता की सलाह सही लगी। पड़ोसी देश विरूप पर आक्रमण करने की वह तैयारियाँ करने लगा। गुणशेखर को जब यह मालूम हुआ, तब पिता से मिलकर उसने कहा, “विरूप देश के राजा हमारे शत्रु नहीं हैं। युद्ध में दोनों देशों को हानि होगी। राजा बनने की मेरी कोई आकांक्षा

नहीं है। मेरे लिए आप यह अन्याय मत कीजिये।” चंद्रशेखर ने बेटे की बात मान ली और युद्ध के प्रयत्नों को रोक दिया।

उस दौरान विशाल देश के राजा वीरगुप्त ने अपनी इकलौती पुत्री चंद्रकला के स्वयंवर की घोषणा की। कुलशेखर उस स्वयंवर में भाग लेना चाहा। पर माँ ने उसे जाने से रोका और गुणशेखर को वहाँ जाने के लिए कहा। उसकी आशा थी कि चंद्रकला के साथ गुणशेखर का विवाह संपन्न हो तो वह उस देश का राजा बनेगा। पर गुणशेखर ने माँ से कहा, “स्वयंवर में जीत मेरे सामर्थ्य पर नहीं बल्कि चंद्रकला की इच्छा-अनिच्छा पर निर्भर है। ऐसी होड़ मुझे पसंद नहीं।” यों कहकर उसने स्वयंवर में भाग लेने से इनकार कर दिया। पर कुलशेखर यह कहते हुए स्वयंवर में भाग लेने निकल पड़ा कि “स्वयंवर राजोचित प्रथा है।”

उस स्वयंवर में भाग लेने के लिए विविध देशों से राजकुमार आये। चंद्रकला जैसे ही वरमाला लिये स्वयंवर मंडप में पहुँची, तभी अकस्मात एक युवक आगे आया और कहने लगा, “मेरा नाम मित्रबिंद है। मैं अब, चंद्रकला को अपने साथ महापर्वत ले जा रहा हूँ। आप में से जो चाहें वहाँ आयें और मुझे हराकर चंद्रकला को ले जा सकें तो ले जाएँ।” कहता हुआ वह चंद्रकला को लेकर गायब हो गया।

राजा वीरगुप्त अवाक् रह गया। उसने उसी क्षण घोषणा की कि जो उसकी पुत्री की रक्षा करके लायेगा, उसके साथ उसका विवाह

रचाऊंगा और पूरा राज्य उसे समर्पित करूँगा। यह घोषणा सुनते ही वहाँ उपस्थित सभी राजकुमार महापर्वत जाने निकल पड़े। कुछ दिनों के बाद बिराग देश को समाचार मिला कि वहाँ जितने भी राजकुमार गये, वे सबके सब मारे गये, जिनमें कुलशेखर भी एक था। माता-पिता व दादा के मना करने के बावजूद गुणशेखर वहाँ जाने निकल पड़ा। वह पहले गुरुकुल गया, गुरु से मिला और उनसे मित्रबिंद के बारे में जानकारी पायी।

मित्रबिंद विशाल देश के मंत्री का बेटा था। चंद्रकला से विवाह कर महाराज बनने के लिए अपने पंद्रहवें साल में ही उसने कुछ मंत्र शक्तियाँ पायीं। महापर्वत पर रहकर वह रुधिरभैरवी की उपासना कर रहा था। उसकी इच्छा की पूर्ति के लिए रुधिरभैरवी ने एक शर्त रखी। उस शर्त के अनुसार सौ राजकुमारों की बलि देनी होगी। इसके लिए उसने उसे कुछ विशिष्ट शक्तियाँ भी प्रदान कीं। भूमि पर का कोई भी मामूली आयुध या प्राणी मित्रबिंद को मार नहीं सकता था। मनुष्य न होते हुए भी जो मनुष्य है, वही रुधिरभैरवी के शूल से उसका अंत कर सकता था। गुरु से यह रहस्य जानकर उनका आशीर्वाद पाकर गुणशेखर महापर्वत पहुँचा।

वहाँ मित्रबिंद और चंद्रकला दिखाई पड़े। गुणशेखर ने रुधिरभैरवी की मूर्ति को प्रणाम किया, उसके हाथ से शूल निकाला और एक ही बार में मित्रबिंद का सिर काट दिया। रुधिरभैरवी के पैरों को उसकी बलि चढ़ायी। तब तक सौ पूरा होने



में एक ही वीर शेष था। मित्रबिंद के मारे जाने से सौ पूरा हो गया। तत्क्षण ही रुधिरभैरवी प्रत्यक्ष हुई और कहा, “तुम्हारे इस अदभुत साहस की प्रशंसा करती हूँ। कोई वरदान माँगो।”

गुणशेखर ने हाथ जोड़कर रुधिरभैरवी से विनती की कि वे सौ के सौ युवक जीवित हो जायें, जिनकी बलि चढ़ायी जा चुकी है। भैरवी ने उन सबको प्राण-दान दिया और कहा, “गुणशेखर आम मनुष्यों में से नहीं है, पर है मनुष्य। इसी की वजह से तुम सबको पुनर्जन्म प्राप्त हुआ है। चंद्रकला से इसका विवाह होगा और यह विशाल देश का राजा बनेगा। तुम सबके सब इसके सामंत राजा बनकर इसे चक्रवर्ती मानकर इसकी सेवा करो।”

वेताल ने कहानी कह चुकने के बाद राजा

विक्रमार्क से पूछा, “राजन्, पहले ही से गुणशेखर में न ही राजा बनने के लक्षण थे और न उसमें राजा बनने की आकांक्षा थी। फिर भी चंद्रकला से उसका विवाह करना और उसे सम्राट बनाना क्या न्यायसंगत है? उसने इनके लिए अपनी स्वीकृति क्यों दी? तिसपर रुधिरभैरवी ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा कि वह मनुष्य न होते हुए भी महान मनुष्य है। इसका अंतरार्थ क्या है? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रहोगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।”

विक्रमार्क ने कहा, “यह कहना सही नहीं है कि गुणशेखर में राज लक्षण नहीं हैं। उसका बड़ा भाई कुलशेखर पहले ही स्वयंवर में भाग लेने निकल चुका था। ऐसी स्थिति में भाई से ही होड़ लेना उसे बिल्कुल पसंद नहीं था। वह वीरगुप्त की इस घोषणा के बारे में भी सुन चुका था कि जो उसकी पुत्री की रक्षा करेगा, उसका विवाह उससे किया जायेगा। यह जानकर भी चंद्रकला से विवाह न करना अनुचित होता। अब राजलक्षणों की बात ही लो। जिनमें ये लक्षण हैं, वे ही केवल नायक

बन सकते हैं। मनुष्यों को समभाव से देखनेवाले चक्रवर्ती बनते हैं। दासी के बेटे की इच्छा पूरी करने के लिए ही गुणशेखर ने यंत्र विद्या सीखी। न ही केवल युवराणी के लिए बल्कि सौ वीरों को पुनः जीवन प्रदान करने के लिए, एक दुष्ट के अत्याचारों को रोकने के लिए, अपनी जान की भी परवाह किये बिना अपूर्व साहस का प्रदर्शन किया, गुणशेखर ने। इसीलिए रुधिरभैरवी ने कहा कि मनुष्य होते हुए भी उसमें साधारण मनुष्यों के स्वार्थ, लोभ उसमें नाम मात्र के लिए भी नहीं हैं। उसने यह साबित भी कर दिखाया कि आशय जब महान हो तब बेकार आयुध भी काम करने लगते हैं। गुणशेखर वह शूर, वीर, धीर है, जिसने यह भी साबित किया कि विशाल क्षेम चाहनेवाले निस्वार्थ के सम्मुख संकुचित स्वार्थ की शक्तियाँ निर्वीर्य हो जाती हैं। इसी कारण वह चक्रवर्ती बनने के सर्वथा योग्य है।”

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित गायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधार: ‘वसुंधरा’ की रचना)





अजीब बीमारी

सारंग नगर में सेठ आनंद की गहनों की एक बहुत बड़ी दुकान थी। वह दुकान उसे उसके दादा परदादा से प्राप्त नहीं हुई थी।

बचपन में ही उसके माँ-बाप गुजर गये। जीवन निर्वाह के लिए वह गहनों की एक दुकान में काम पर लग गया। ईमानदारी से काम करने की वजह से वह मालिक का विश्वास पात्र बना। दस सालों तक अपने मालिक के बोलने की पद्धति, व्यापार की दक्षता व बारीकियों को उसने बखूबी सीख लिया।

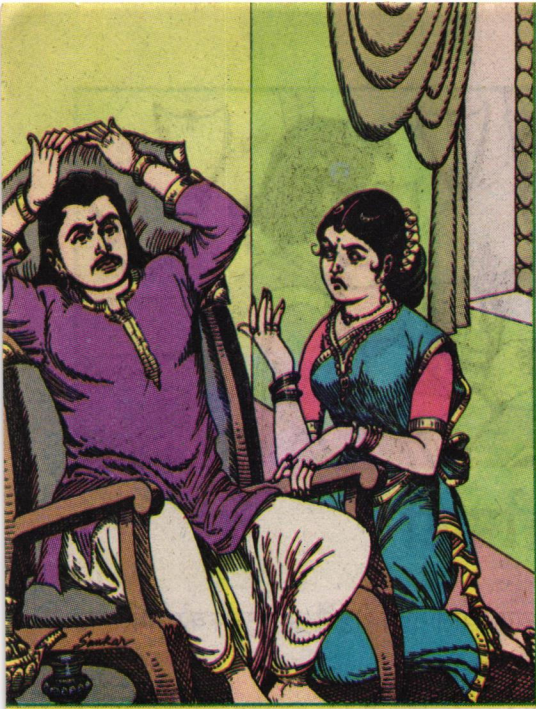
फिर उसने नौकरी छोड़ दी और जो धन कमाया, उससे नगर में गहनों की एक दुकान खोली। इसमें उस नगर के सुनारों की सहायता भी मिली। व्यापार बढ़ता गया और पाँच सालों के अंदर ही वह दुकान नगर भर में प्रख्यात हो गयी। सबका यही कहना था कि उस दुकान में

बिकनेवाले गहने श्रेष्ठ हैं और उनमें कोई मिलावट नहीं होती।

एक धनी परिवार की कन्या नागाबलि से उसका विवाह हुआ। दहेज में वह अपने साथ बहुत सारा धन भी ले आयी। इस वजह से वह काम करनेवालों पर धाक जमाने लगी। धन को सोने के सिक्कों में बदलकर छिपा भी देती थी।

हालांकि वह पति को चाहती थी, पर धन पर ही उसका ध्यान केंद्रित होता था, इसलिए पति को एक क्षण भर के लिए भी घर में रहने नहीं देती थी। सवेरे ही पति को जगाती और स्नान, पूजा कराकर उसे दुकान भेज देती थी। दुपहर को भोजन करने उसे आने नहीं देती थी, भोजन वहीं दुकान पर भेज देती थी। वह बारंबार पति से कहा करती थी, “इस जमाने में किसी का विश्वास नहीं किया जा सकता, सबके सब चोर हैं। हमें

रामेश्वर शास्त्री



आपको अनाथ समझकर क्यों दुखी होते रहते हैं। छोड़िये, ये बेतुकी बातें। आपने तो मुझे पहले वचन दिया था कि नगर में एक और दुकान खोलेंगे, जिसकी मालकिन मैं हूँगी। क्या आप उसे भूल गये?" नागाबलि ने जान-बूझकर बात बदलने के उद्देश्य से ऐसा कहा।

आनंद ने इसका कोई जवाब नहीं दिया। वह चुप रहा।

तभी एक साधु उस नगर में आया। वह भक्तों की समस्याओं को सुलझाता था और उपयोगी सलाहें दिया करता था। एक दिन शाम को सेठ आनंद साधु के दर्शन करने गया। सब भक्तों के चले जाने के बाद आनंद ने साधु से अपना दुखड़ा सुनाया और कहा, "जीवन निर्वाह के लिए जब कहीं काम करता था, तब संतुष्ट था। अब संपत्ति भरी पड़ी है, किन्तु वह आनंद व सन्तोष नहीं रहे।" दुख भरे स्वर में उसने कहा।

साधु ने ध्यान से सब सुना और कहा, "कुछ भी हो, जीवन में बड़ा बनूँ, यह उत्साह उस समय तुममें भरा पड़ा था। वही तुम्हारे आनंद का स्रोत था। अब तुम्हारे सम्मुख कोई लक्ष्य नहीं रहा। औरों की सहायता करने का प्रयत्न करो। वह प्रयत्न पहले पहल अपनी दुकान में काम करनेवालों के लिए शुरू करो। दूसरों के लिए जीना सीख जाओगे तो इससे बढ़कर कोई आनंद नहीं होगा। तब जाकर जीवन का माधुर्य तुम स्वयं जान जाओगे।"

"मेरी पत्नी इसके लिए कदापि तैयार नहीं

हर पल सावधान रहना चाहिये। हम किसी मुसीबत में फंस जाएँ तो हमारी मदद करनेवाला कौन है? काम करनेवालों पर नज़र रखिये, नहीं तो वे हमें धोखा देंगे।"

व्यापार के प्रति पत्नी की श्रद्धा को देखते हुए आनंद पहले खुश तो हुआ, पर समय बीतते-बीतते उसकी बातें उसे बहुत ही खटकने लगीं। पर वह अपने मन की बात उससे बता नहीं सका। थोड़े और दिनों के बाद उसमें आनंद बिल्कुल लुप्त हो गया और अकथनीय दुख ने घर कर लिया।

इसके बारे में एक बार उसने पत्नी से कहा भी तो पत्नी ने इसपर ध्यान ही नहीं दिया और उल्टे कहा, "यह कैसी अजीब बीमारी है। नगर भर में आपकी शोहरत है, बड़े व्यापारी माने जा रहे हैं, फिर यह परेशानी किसलिए? आप अपने

है। उसपर धन का भूत सवार है”, आनंद ने कहा।

“तुम्हें अपनी पत्नी को समझाना होगा कि जीवन में इससे बढ़कर कई मूल्यवान विषय हैं। उसे ऐसे अनुभवों से गुजरने के लिए बाध्य करो।

“अकलमंद व्यापारी हो। तुम्हारे लिए यह कोई कठिन व असंभव कार्य नहीं है। इसपर खूब सोचो और कोई रास्ता निकालो।” साधु ने कहा।

“हाँ, ऐसा ही करूँगा स्वामी”, कहकर वह उठा। साधु ने उसे भस्म देते हुए आशीर्वाद दिया।

उस रात को आनंद पलंग पर सोता ही रहा। वह पलंग पर से उठा ही नहीं। घबराकर नागाबलि ने वैद्य को बुलवाया। वैद्यों ने उसकी परीक्षा की, पर वे किसी निर्णय पर नहीं आ पाये। बड़े-बड़े वैद्यों से भी उसने परीक्षा करवायी, पर कोई फ़ायदा

नहीं हुआ। आनंद बहुत ही कम मात्रा में खाने लगा। पति के कमजोर हो जाने के कारण नागाबलि में भय उत्पन्न हो गया। वह श्रद्धापूर्वक पूजाएँ अर्चनाएँ करने लगी। वह नगर के सभी मन्दिरों में जाकर पति के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करने लगी। फिर भी आनंद में कोई परिवर्तन नहीं आया। इस स्थिति में पति को छोड़कर दुकान भी जाना उसने बंद कर दिया।

कुछ दिनों के बाद नागाबलि का छोटा नाना उसे देखने आया। उसने सलाह दी कि पति समेत तीर्थयात्रा पर जाने से कल्याण होगा।

नागाबलि पहले संकोच में पड़ गयी कि बीमार पति को लेकर कैसे तीर्थयात्रा पर जाऊँ। परंतु, नाना की बातों का विश्वास करके वह एक नौकर के साथ पति को लेकर तीर्थयात्रा पर निकली।



तीर्थ यात्रा पर निकलने के पहले उसने दुकान का काम वहाँ के कर्मचारियों को सौंपा।

तीन महीनों की तीर्थ यात्राओं में उसने बाहर की दुनिया देखी, तरह-तरह के आदमियों से वह मिली। मंदिरों में प्रवचन सुनती रही। पति के स्वास्थ्य में सुधार होता रहा, साथ ही उसका मन भी परिपक्व हुआ। घर लौटने के बाद जब उसने देखा कि गहनों का व्यापार पहले से भी और अच्छा चल रहा है तो वह बेहद खुश हुई।

एक दिन नागाबलि ने पति को दूध को गिलास देते हुए कहा, “हमारी दुकान में काम करनेवाले नरसिंह ने समय पर हमारी दुकान को बहुत अच्छी तरह से संभाला। हमारी तीर्थयात्रा के दौरान हमारे कर्मचारियों ने दुकान को भली-भांति चलाया। हमें उनकी सहायता करनी चाहिये।”

“नागाबलि” कहते हुए वह आश्चर्य में डूब गया और उसे अपार आनंद हुआ। पत्नी के दृष्टिकोण में अचानक ऐसी उदारता देखकर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसने अनुभव

किया कि जो काम वह स्वयं न कर सका, तीर्थयात्रा ने कर दिया।

“हमारे पास कितना ही धन पड़ा हुआ है। अब हमें चाहिये, अच्छा नाम, दया गुण। मैंने तो समझा था कि यह भी कैसी अजीब बीमारी है। पर यह बीमारी है ही नहीं। धन का व्यामोह नामक यह अजीब बीमारी आपकी नहीं, मेरी है।” पत्नी की बातें सुनकर आनंद की आँखें चमक उठीं। उसके मन की परेशानी दूर हो गयी।

“हमें अच्छा रहना है, सुखी रहना है। साथ ही उन्हें भी सुखी रखना है, जो हमारे लिए काम करते हैं।” आनंद ने हँसते हुए कहा।

लंबे अर्से के बाद पति के मुख पर खिली मुस्कान को देखकर नागाबलि की आँखों में आनंद भरे आँसू उमड़ आये।

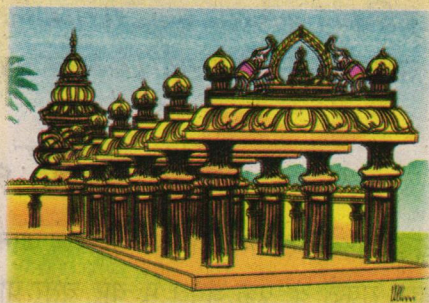
फिर भी आनंद ने निश्चय कर लिया कि उसकी बीमारी का रहस्य न खुले और पत्नी को यह मालूम न हो कि इतने दिनों तक वह भूखा क्यों रहा, कमजोर क्यों हो गया और बीमारी का नाटक उसने क्यों किया।





स्वर्ण-मन्दिर

तुम सब ने सिक्खों के पावनतम पूजा स्थल पंजाब में अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर के विषय में सुना है। अब दक्षिण भारत में भी एक स्वर्ण मन्दिर है। तमिलनाडु में वेल्डोर के निकट श्रीपुरम के विष्णुप्रिया लक्ष्मी के मन्दिर में गर्भगृह के चारों ओर के पथ को छोड़कर बाकी सभी स्थानों पर सोने का आवरण है। दर्शनार्थियों की पूजा के लिए मन्दिर को २४ अगस्त से खोल दिया गया है। सोने का आवरण चढ़ाने के लिए डेढ़ टन स्वर्ण का उपयोग किया गया है।

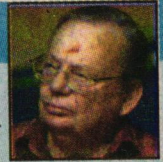


ऐतिहासिक रेल पुल

पाक जलडमरूमध्य के ऊपर प्रसिद्ध पाम्बन रेल पुल, जो रामेश्वरम द्वीप को मुख्य भूमि से जोड़ता है, गेज परिवर्तन के बाद, यातायात के लिए फिर से खोल दिया गया है। यह मिटर गेज लाइन के साथ सन् १९१३ में निर्मित किया गया था। ब्रॉड गेज लाइन का २,०६५ मी. लम्बा पुल अधिक यात्रियों को ढोने के लिए बड़े डिब्बों के योग्य है। पुल में १४६ मेहराब हैं। इसका मुख्य आकर्षण यह है कि पुल का एक हिस्सा ऊपर उठाया जा सकता है जिससे जहाज पुल के दूसरी ओर जा सके। इस भाग का नाम इसके डिजाइन इंजीनियर शरजर के ऊपर रखा गया है। यूनेस्को ने पुल को विश्व विरासत सूची में सम्मिलित करने के लिए विस्तृत विवरण एकत्र करना आरम्भ कर दिया है।



कहानी, जो मुझे सबसे अधिक पसन्द थी - ८



श्री रस्किन बॉण्ड निस्सन्देह बाल साहित्य के अग्रणी लेखक हैं। उनकी कहानियाँ साहसिकता, प्रकृति, रहस्य, पर्यटन तथा शिकार के इर्द-गिर्द घूमती हैं। उन्होंने अपना पहला उपन्यास तब लिखा जब वे मुश्किल से १७ के रहे होंगे, लेकिन उस पुस्तक पर उन्हें प्रतिष्ठित जॉन लेवेलिन रीस पुरस्कार प्रदान किया गया। साहित्य अकादमी से पुरस्कृत रस्किन बॉण्ड को १९९८ में आई बी बी वाई द्वारा हंस कृश्चियन अण्डरसन एवार्ड से सम्मानित किया गया। सन् १९९९ में इन्हें पद्मश्री पाने का सम्मान प्रदान किया गया। ये अनेक वर्षों से चंदामामा के सम्पादकीय परामर्शदाता हैं।

चाँद में खरगोश

बहुत पहले उस समय की बात है, जब जानवर बोल सकते थे, एक जंगल में चार चतुर प्राणी रहते थे—एक खरगोश, एक सियार, एक ऊदबिलाव तथा एक बन्दर।

वे अच्छे दोस्त थे, और हर शाम को वे जंगल के एक खुले मैदान में बैठकर दिन भर की घटनाओं पर चर्चा करते, परामर्श का आदान-प्रदान करते और अच्छे-अच्छे संकल्प लेते। खरगोश चारों में सबसे अधिक उदार हृदय और बुद्धिमान था। वह पुरुषों और स्त्रियों की श्रेष्ठता में विश्वास करता था और अपने दोस्तों को हमेशा मानव की अच्छाई और बुद्धिमानी की कहानियाँ सुनाता रहता था।

एक शाम को, जब आसमान में चाँद उगा और उन दिनों चाँद का चेहरा साफ और बेदाग था, “खरगोश ने उस पर बड़ी सावधानी से नजर डाली और कहा, “कल अच्छे लोग उपवास रखेंगे

क्योंकि कल अमावास्या मालूम पड़ती है। वे सूर्यास्त से पहले कुछ नहीं खायेंगे और दिन में किसी भिखारी अथवा साधु सन्त को दान देंगे। हमलोग भी वैसा ही करने की प्रतिज्ञा करें। इस प्रकार हमलोग मान-मर्यादा और ज्ञान में मानव के अधिक निकट आ सकेंगे।” सब सहमत हो गये और फिर अपने अलग-अलग रास्ते चले गये।

दूसरे दिन ऊदबिलाव उठा और अंगड़ाई लेकर नाश्ते का इन्तजाम करने की तैयारी करने लगा। पर तभी उसे अपने दोस्तों के साथ ली गई शपथ की याद आई।

“यदि मैं अपने वचन का पालन करूँ तो शाम तक मुझे भूख लग जायेगी”, उसने सोचा। “अच्छा होगा यदि मैं उपवास के बाद खाने के लिए पहले से ही पर्याप्त भोजन का कुछ इन्तजाम करके रख लूँ।”

वह नदी की तरफ चल पड़ा।

एक मछुआरे ने तड़के सबेरे ढेर सारी बड़ी-बड़ी मछलियाँ पकड़ी थीं और वापसी में ले जाने के लिए रेत में छिपाकर उन्हें रख दी थीं। ऊदबिलाव को उनकी गंध मिल गई।

‘मेरा रात्रि भोजन पहले से तैयार है।’ उसने मन में सोचा। “पर आज के पवित्र दिन पर मुझे चोरी नहीं करनी चाहिये।” उसने आवाज लगाई, “क्या इस मछली का कोई मालिक है?”

कोई उत्तर नहीं आया। ऊदबिलाव उसे शाम के भोजन के लिए अपने घर ले गया। फिर वह अपने सामने के दरवाजे पर ताला लगाकर भिखारियों या साधु-सन्तों से निर्विघ्न दिन भर सोया रहा।

बन्दर और सियार ने भी सुबह उठकर वैसा ही महसूस किया। उन्हें अपनी शपथ का स्मरण

हुआ और उन्होंने सोचा कि शाम के लिए भोजन तैयार रखना सबसे अच्छा रहेगा। सियार को किसी के पिछवाड़े में कुछ बासी माँस मिल गया।

‘आह! उम्र के साथ इसमें सुधार होना चाहिये।’ उसने सोचा और रात्रि भोजन के लिए उसे घर ले गया। और बन्दर ने एक आम वृक्ष से आमों का एक गुच्छा तोड़ा। ऊदबिलाव के समान बन्दर और सियार दोनों ने दिन भर सोये रहने का निश्चय किया।

खरगोश जल्दी उठ गया। वह लम्बे कानों को झाड़ता अपने बिल से बाहर आया। ओस से नम घास की खुशबू उसे अच्छी लगी।

‘शाम होते ही मैं घास का भोजन कर लूंगा।’ उसने सोचा। “लेकिन कोई भिखारी या सन्त-महात्मा मिल जाये तो दान में क्या दूँगा? मैं उसे



घास नहीं दे सकता और देने के लिए मेरे पास कुछ और भी नहीं है। मुझे अपने आप को देना होगा। अधिकतर लोग खरगोश का मांस पसन्द करते हैं। सुना है, खाने में हमलोग स्वादिष्ट लगते हैं।” और इस समाधान से प्रसन्न होकर वह दौड़ पड़ा।

भगवान साक्षा पास ही एक बादल पर आराम कर रहे थे। उन्होंने खरगोश को बोलते हुए सुन लिया था।

“मैं उसकी परीक्षा लूंगा”, भगवान ने कहा। “निस्सन्देह कोई खरगोश इतना उदार और निःस्वार्थ नहीं हो सकता!”

शाम होने पर भगवान साक्षा अपने बादल से बीच उतरे और एक बूढ़े पुजारी का वेश बनाकर खरगोश के बिल के निकट बैठ गये। जब खरगोश उछल-कूदकर वापस आया तब उसने कहा, “नमस्कार नन्हें खरगोश, क्या खाने के लिए कुछ

मिल जायेगा? मैं दिन भर उपवास करता रहा और अब मैं इतना भूखा हूँ कि प्रार्थना भी नहीं कर सकता।”

खरगोश ने अपनी शपथ को याद करते हुए कहा, “क्या यह सच है कि मनुष्य को खरगोश का मांस अच्छा लगता है?”

“बिल्कुल सच”, पुजारी बोला।

“तब तो,” खरगोश ने कहा, “तुम मुझे खा सकते हो, क्योंकि मेरे पास तुम्हें देने के लिए और दूसरा भोजन नहीं है।”

“परन्तु मैं धार्मिक व्यक्ति हूँ और आज का दिन पवित्र पर्व का है, इसलिए अपने हाथों से किसी प्राणी को मार नहीं सकता।”

“तब कुछ सूखी लकड़ियाँ एकत्र करके उन्हें जला लो। मैं आग की ज्वाला में कूद पड़ूंगा। जब मैं भुन जाऊँ तब तुम खा लेना।” भगवान साक्षा इन शब्दों को सुनकर चमत्कृत रह गये। पर फिर

चन्दामामा इण्डिया प्रश्नोत्तरी-११ (दिसम्बर २००७) उत्तर :

१. भीमाबाई सकपाल; २. कस्तूरबा तथा मोहनदास गाँधी-१८६९;
३. रबीन्द्रनाथ टैगोर; ४. कमलादेवी चट्टोपाध्याय;
५. विनोबा भावे।

चन्दामामा इण्डिया प्रश्नोत्तरी-११ (दिसम्बर २००७)

हमारे हिन्दी संस्करण के पाठकों की कोई प्रविष्टि सर्वशुद्ध नहीं पाई गई। इसलिए कोई पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है। पाठकों के हित में प्रश्नोत्तरी के उत्तर ऊपर दिये जाते हैं। चन्दामामा की सभी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहिये।

भी उन्हें पूरा विश्वास नहीं हुआ। इसलिए उन्होंने धरती से ज्वाला उत्पन्न कर अग्नि बनाई। खरगोश, बिना आगा-पीछा किये, आग की लपटों में कूद पड़ा।

“यह क्या हो रहा है?” कुछ देर के बाद खरगोश चकित होकर बोला, “मेरे ऊपर आग ही आग है, पर हमारा एक बाल भी झुलस नहीं रहा। सच तो यह है कि मैं काफी ठण्ड महसूस कर रहा हूँ।”

खरगोश जैसे ही यह बोला, अग्नि शान्त हो गई। और शीतल मधुर घास पर उसने अपने को बैठा हुआ देखा। बूढ़े पुजारी की जगह पर उसके सामने अपने सम्पूर्ण प्रकाश मण्डल से अलंकृत भगवान साक्षा खड़े थे।

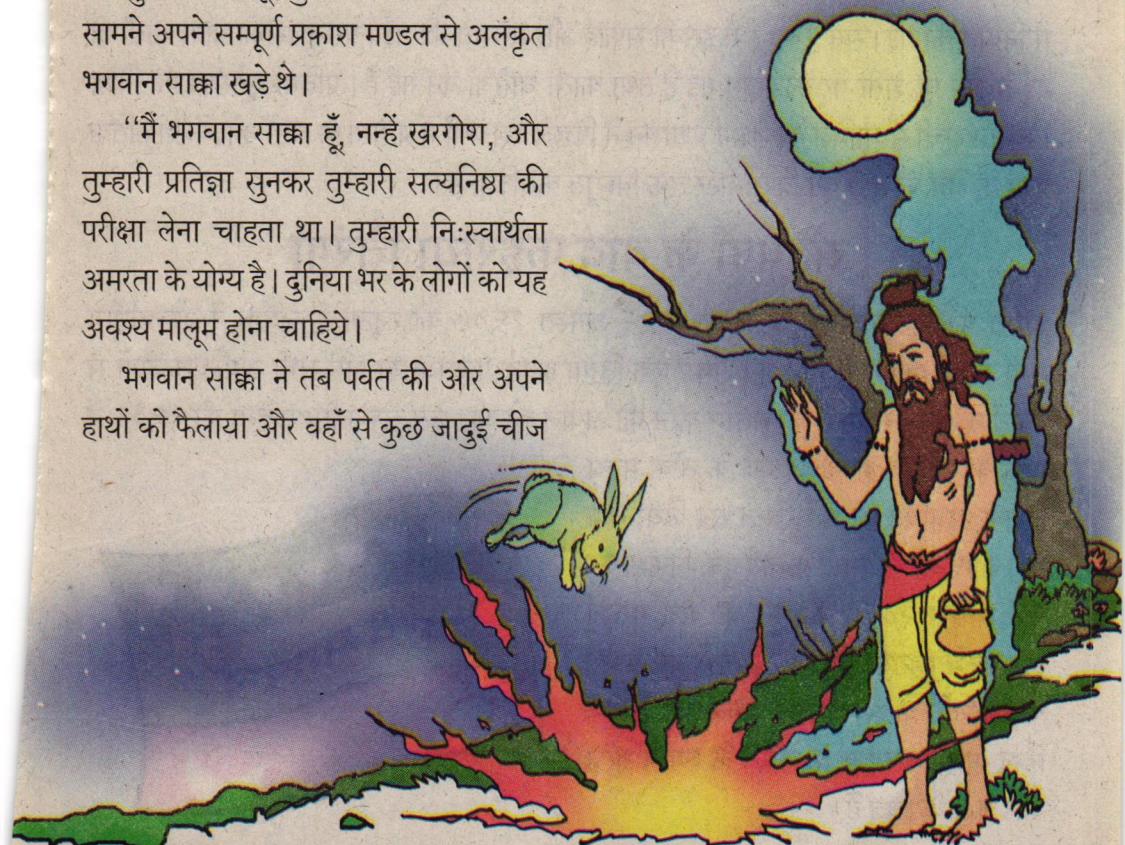
“मैं भगवान साक्षा हूँ, नन्हें खरगोश, और तुम्हारी प्रतिज्ञा सुनकर तुम्हारी सत्यनिष्ठा की परीक्षा लेना चाहता था। तुम्हारी निःस्वार्थता अमरता के योग्य है। दुनिया भर के लोगों को यह अवश्य मालूम होना चाहिये।

भगवान साक्षा ने तब पर्वत की ओर अपने हाथों को फैलाया और वहाँ से कुछ जादुई चीज

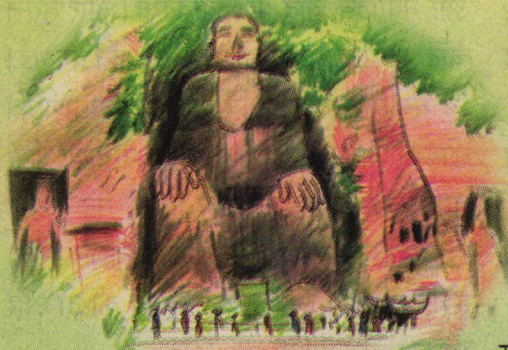
निकाली। फिर उन्होंने उस चीज को ऊपर की ओर नवोदित चाँद पर फेंक दिया। और तुरन्त चाँद की सतह पर खरगोश की आकृति बन गई।

तब मधुर घास के बिछावन पर खरगोश को छोड़कर जाते हुए उन्होंने कहा, “हे नन्हें खरगोश, तुम सदा सदा के लिए चाँद पर से, मनुष्यों को इस सनातन सत्य का स्मरण दिलाने के लिए नीचे संसार को देखते रहोगे कि “दूसरों को दो और भगवान तुम्हें देंगे।”

(बौद्ध जनश्रुति के आधार पर)



ओलम्पिक पर्यटकों के आकर्षण होंगे-बुद्ध



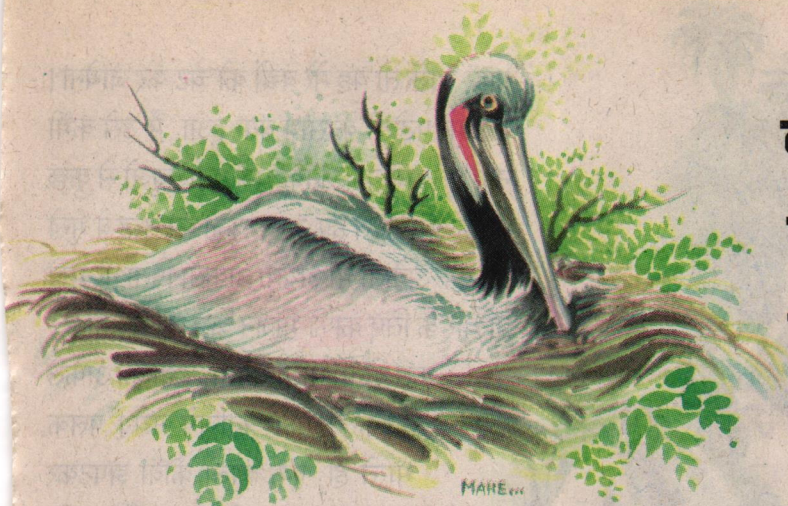
चीन द्वारा, वर्ष २००८ में होनेवाले अगले ओलम्पिक खेलों के, आतिथ्य की तैयारी के सिलसिले में, उसके सिचुअन प्रांत स्थित बुद्ध की प्रतिमा में ऊपरी सुधार किया जा रहा है। यह विश्व की सबसे ऊँची बुद्ध की प्रतिमा है।

मौसम तथा अम्लीय वर्षा के कारण विक्षत प्रतिमा की मरम्मत की सख्त जरूरत है। लेशन पर्वत की चोटी में उत्कीर्ण की गई ७१ मीटर ऊँची यह प्रतिमा तांग वंश की अवधि में सन् ७१३ से ९० वर्षों में निर्मित की गई। सन २००१ में इसकी सफाई और मरम्मत की गई। परन्तु इसकी नाक काली हो गई है और पूरे शरीर पर कई जम गई हैं तथा काली धारियाँ बन गई हैं। प्रतिमा यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल है। लेशन प्रशासन ने पिछले दस वर्षों में प्रतिमा के चारों ओर के प्राकृतिक दृश्य के क्षेत्र को १७ वर्ग किलोमीटर तक विस्तृत कर दिया है।

सौ वर्षों के बाद फहराया तिरंगा

भारत की मादाम भीखा जी कामा ने २२ अगस्त १९०७ को स्टूटगार्ट, जर्मनी में अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस में भाग लेते समय एक तिरंगा झण्डा फहराया था और सभी उपस्थित लोगों से स्वाधीन भारत के झण्डे को सलाम करने की अपील की थी। उस सम्मानीय महिला की १९३६ में मृत्यु के पश्चात झण्डे को पुणे के लोक मान्य तिलक अजायब घर में सुरक्षित रख दिया गया था। झण्डे को सौ सालों के बाद पुनः निकाल कर २२ अगस्त २००७ को पुणे के बाल गन्धर्व सभागार में फहराया गया। इस तिरंगे में आठ प्रान्तों के प्रतिनिधि के रूप में आठ कमल पुष्प हैं तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता के संकेत के रूप में सूरज और चाँद के चित्र हैं।





कोकरे बेल्यूर हमारा गाँव

नीचे के शोरगुल से कान फटे जा रहे हैं, यह उस गुलगपाड़े से भी अधिक बदतर है जो हम अपनी कॉलोनी में हर शाम करते हैं, जब पूरा झुण्ड घर लौट आता है और साथ-साथ बातें भी करता रहता है।

मुझे अब तक इस शोरगुल का अभ्यस्त हो जाना चाहिये था, क्योंकि इस ऋतु में यह इतना सामान्य है।

हमारी कॉलोनी में, एक दूसरे का ध्यान आकृष्ट करने की कोशिश में जोड़ियों का, कान को बहरा कर देने वाला, शोरगुल, और नीचे गाँव में शादी के बाजे! आज का गुलगपाड़ा हमेशा की अपेक्षा अधिक है, क्योंकि ठीक हमारे पेड़ के नीचे विवाह हो रहा है। हमारे चूजे बेचैन हो रहे हैं। इस दुनिया में उनके आगमन पर कितना कोलाहलपूर्ण स्वागत!

तुमने अब तक अनुमान लगा लिया होगा कि मैं एक पक्षी हूँ। मैंने दयालु लड़की तथा मेरी सबसे प्यारी दोस्त मालू को एक बार यह कहते सुना है

कि वे हमलोगों को स्पॉट-बिल्ड पेलिकन्स कहते हैं। हमारी कॉलोनी में सैकड़ों पेलिकन्स और जांघिल रहते हैं। इसी आश्चर्यजनक गाँव में, जिसे हम प्यार करते हैं! हम इसे हमारा गाँव—कोकरे बेल्यूर कहते हैं। यह मैसूर के निकट है, मैं जानती हूँ, क्योंकि मालू अक्सर मैसूर जाती है।

हमलोग हर साल यहाँ छः महीने बिताते हैं, अपने बच्चों को जन्म देते हैं, कुछ दिनों तक पालते-पोषते हैं, फिर अगले छः महीनों के लिए अपने गर्म मैदानों में उड़ जाते हैं। ग्रीष्म-गृहों से इस स्थान तक की उड़ान खतरों से भरी होती है, पर जैसे ही कोकरे बेल्यूर पहुँचते हैं, हम सुरक्षित महसूस करते हैं। मानों हम अभयारण्य में हों।

यहाँ बहुत से इमली और नीम के पेड़ हैं। हमें उन पर घोंसले बनाना अच्छा लगता है। हम सैकड़ों की संख्या में इनमें बस जाते हैं। जब हम यहाँ पहुँच जाते हैं तब ग्रामीणों के आनन्द और खुशी को महसूस कर सकते हैं। वे हमें अपने सौभाग्य के अग्रदूत समझते हैं। हम जानते हैं कि



बाहर जाऊँ तो वह मेरे बच्चों को चट कर जायेगा। कल मेरे पड़ोसी के साथ क्या हुआ, मैं उसे कभी नहीं भूल सकता। उनके चूजे हमारे चूजों से कुछ बड़े हैं और बढ़ते हुए अन्य चूजों की तरह वे भूखे थे। एक अकेली माँ अथवा अकेला पिता पूरे भूखे परिवार के लिए काफी भोजन कैसे ला सकता है?

कल दोनों, माता-पिता, बच्चों को अकेले छोड़कर शिकार खोजने गये। पलक मारते ही, एक काला कौवा झपटकर एक चूजा उड़ा ले गया। घोंसला के हिलने से बाकी चूजे नीचे गिर गये जिन्हें घात लगाये गली के भुक्खड़ कुत्तों ने निगल लिया। चन्द मिनटों में मेरे पड़ोसी का पूरा परिवार विनष्ट हो गया।

वे किसी को हमें हानि पहुँचाने नहीं देंगे और उन वृक्षों को भी काटने नहीं देंगे जिन पर हम घोंसले बनाते हैं। कभी-कभी वे उन पेड़ों से जिन पर हमारे घोंसले हैं, इमली की फसल नहीं तोड़ते। इन गरीब ग्रामीणों के लिए यह बड़ा नुकसान होता होगा, फिर भी वे हमारे बच्चों को नष्ट नहीं करना चाहते। वे हमारे परम मित्र हैं।

ऐसी ही एक घटना में, बहुत वर्ष पहले, मैं अपने मानव मित्र, मालू के करीब आई। मेरी प्रिय मालू! क्या मैंने कहा कि आज वह दुलहन है? आज उसी की हमारे पेड़ के नीचे शादी हो रही है।

क्या तुम विश्वास करोगे? वे हमारे बीट का भी उपयोग करते हैं जिसे वे गुआनो कहते हैं और इसे अपने खेतों के लिए श्रेष्ठ उर्वरक मानते हैं।

ओह! मैं पहले कह लूँ कि अनेक वर्ष पहले जब कौवे ने आक्रमण किया था तब क्या हुआ। मैं इतनी छोटी थी कि उड़ नहीं सकती थी। मैं जमीन पर पड़ी थी, मैं भयभीत थी। बड़े-बड़े कुत्ते मुँह बाये और आँखें फाड़े मेरे पीछे दौड़ रहे थे। मेरी हृदय-गति लगभग बन्द हो गई थी। तभी किसी ने मुझे जमीन पर से उठा लिया।

क्या मैंने यह कहा कि हम यहाँ सुरक्षित अनुभव करते हैं? ठीक है... करीब-करीब! यह कौवा जो मेरी शाखा के सामने बैठा है, सुबह से मेरे बच्चों पर नज़र गड़ाये हुए है। यदि मैं क्षण भर के लिए भी

मैं करुणा के आँसुओं से ओतप्रोत दो आँखों को देख रही थी। वह मालू थी। उस दिन उसने मुझे कुत्तों से बचाया। मैं डरी हुई थी और अपने

माता-पिता को याद कर रही थी जो मछली का शिकार करने गये थे।

मालू मुझे मनु नाम के एक खूबसूरत आदमी के पास ले गई। वह कुछ दिन पहले पक्षियों और मनुष्यों के अनोखे संबंध के बारे में अधिक जानने के लिए गाँव में आया था। उसकी सहायता से मालू ने मुझे खाना खिलाया और मेरे जख्मों पर पट्टी बाँधी। मैं इतनी कमजोर थी कि आँखें भी नहीं खोल सकती थी।

उसने कहा कि कोकरे बेल्यूर एक बहुत विशिष्ट गाँव है, “पर यही एक मात्र गाँव नहीं है जहाँ पशु-पक्षियों को प्यार किया जाता है। भारत में ऐसे बहुत गाँव हैं जहाँ उन पक्षियों की देखभाल करते हैं जो उनके पेड़ों में घोंसले बनाने आते हैं।”

मालू ने मुझे देखा और पूछा, “ऐसे चूजों के लिए हम क्या कर सकते हैं?” थोड़ी देर के लिए स्तब्धता छा गई। फिर मनु ने कहा, “हम एक अनाथालय और एक अस्पताल क्यों न शुरू करें?”

हरेक को यह विचार पसन्द आया। सब उत्साहपूर्वक इसकी योजना बनाने में जुट गये।

यह बहुत वर्ष पहले की बात है। अब हमलोगों के लिए गाँव में एक अनाथालय और एक अस्पताल है। इसे युवक चलाते हैं। आज मालू की शादी हो रही है और वह जा रही है, पर मैं जानती हूँ कि अनाथालय चलता रहेगा...। उसके दोस्त और मनु यह सुनिश्चित करेंगे कि यह चलता रहे।

मुझे जाकर अवश्य देखना चाहिये कि दुलहन के रूप में मालू कैसी लगती है। कल वह मुझे देखने आई थी। हमलोगों ने एक दूसरे की आँखों में देखा। उसकी आँखों में आँसू थे। उसने कहा कि वह बहुत दूर जा रही है..बहुत दूर, आगरा और वह नहीं जानती कि वह कब वापस लौटेगी। मैं उसे ढेर सारी बातें कहना चाहती थी, लेकिन मुझे मालूम है, वह नहीं समझेगी।

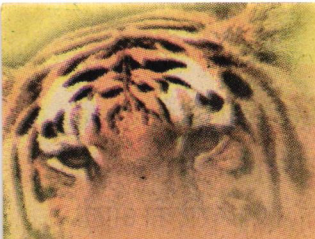
मैं कहना चाहती थी कि शायद वह कभी ऊपर उड़ते हुए हमें देख ले।

अरे! ठहरो जरा! क्या उसने आगरा कहा था? हम म! क्या वह वही स्थान नहीं है जहाँ हम यहाँ से जाते हैं?...क्या यह खूबसूरत जलाशय, जिसे भरतपुर कहते हैं, आगरा के आसपास कहीं है?

ठीक है, जब हमारे चूजे बड़े हो जाते हैं तब वहीं तो जाते हैं।

मैं उसे कहूँगी...अवश्य कहूँगी कि हम पुनः मिलेंगे...शीघ्र ही।





चिरस्मरणीय ऐतिहासिक घटनाएँ-५

मृत्यु के चौखट से...

एक दिन औरंगजेब ने, महाराज जसवंत सिंह के साथ उद्यानवन में टहलते हुए कहा, “क्या इतने भयंकर बाघ को इसके पहले आपने कभी देखा?” यह कहते हुए उन्होंने एक पिंजड़ा दिखाया, जिसमें एक बाघ था।

“हमारी शौर्य भूमि में छोटे-छोटे बालक भी ऐसे बाघों से खेला करते हैं।” यह कहते हुए उन्होंने दूर खड़े अपने पुत्र पृथ्वीसिंह को बुलाया और बाघ से लड़ने को कहा। सोलह साल का युवक पृथ्वीसिंह बड़े ही उत्साह के साथ पिंजड़े में घुसा और बाघ पर पिल पड़ा। थोड़ी देर तक वह उससे भिड़ता रहा और फिर अपनी कमर से खंजर निकालकर उसकी छाती में भोंक दिया। बाघ दर्द के मारे चिल्लाता हुआ मर गया।

औरंगजेब देखता रहा। वह सोच भी नहीं सकता था कि ऐसा भी हो सकता है। उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। औरंगजेब

अंदर ही अंदर भयभीत हुआ। बेटा ही इतना साहसी हो तो पिता कितना साहसी होगा? इस सोच ने उसके मन को परेशान कर दिया।

जसवंत सिंह मारवाड़ (अब जोधपुर) का राजा था। यह राजस्थान के थार रेगिस्तान से सटा हुआ राज्य था। मारवाड़ का अर्थ है-मरण भूमि। मानव के निवास के लिए यह असुविधाजनक स्थल है। यहाँ पानी की बड़ी कमी है। रेत से भरी ज़मीन के रूप को ही बदल डालनेवाले तूफान यहाँ आते रहते हैं। यहाँ अधिकाधिक अकाल पड़ते हैं। फिर भी यहाँ के वीर शासकों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए कितनी ही लड़ाइयाँ लड़ीं, क्योंकि वे अपनी मातृभूमि को जान से ज़्यादा प्यार करते थे।

मारवाड़ का शासक जसवंत सिंह असमान पराक्रमशाली था। फिर भी स्वार्थवश उसने किसी नियम का पालन नहीं किया, मित्रों को भी मार डालने में वह नहीं हिचकिचाया। इस कारण से वह बदनाम भी था। वह औरंगजेब के लिए खतरा

बन गया। उस राजपूत राजा का अंत करने

के लिए औरंगजेब ने कितने ही प्रयत्न

किये, पर वह विफल ही रहा। एक

बार आखिरी क्षण में उसे धोखा

देकर वह सुरक्षित भाग

गया। वह मौत से बच

गया।



मारवाड़ के राजा को मारने के लिए मुगल बादशाह ने कितने ही षडयंत्र रचे। इनका भंग करता आया मुकुंद दास, जो राजा का विश्वासपात्र था। वह कुंपावत वंश का नायक था। औरंगजेब ने एक बार उसे संदेश भेजा तो उसने उसकी परवाह ही नहीं की, जिसके कारण वह उसपर नाराज हो उठा। प्रतिकार लेने का बादशाह को एक अच्छा मौका मिला। उसे सजा देने की आड़ में उसने उसे भूखे बाघ के पिंजड़े में निरायुध भेजा और उससे लड़ने का हुक्म दिया।

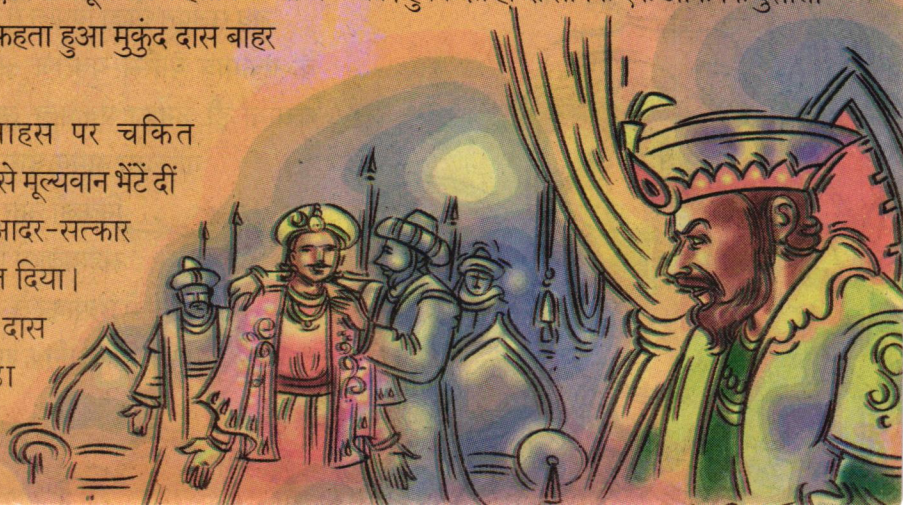
मुकुंद दास ने निर्भय होकर उसमें प्रवेश किया। बाघ जब गुराँकर उसे देख रहा था, तब उसने उससे कहा, “अरे ओ बाघ, इस जसवंत बाघ का सामना करके देख, मज़ा चखाऊँगा” और, क्रोध भरी आँखों से उसे देखता रहा। अजीब आगंतुक के विचित्र व्यवहार को देखकर चकित बाघ सिर झुकाकर पीछे हट गया। “उसमें मेरा सामना करने का साहस नहीं है। जो शत्रु सामना नहीं करता, उससे लड़ना राजपूतों के सिद्धांतों के विरुद्ध है। ऐसा राजपूत वीर कहलाने के योग्य भी नहीं है”, कहता हुआ मुकुंद दास बाहर आ गया।

उसके साहस पर चकित औरंगजेब ने उसे मूल्यवान भेंटें दीं और उसका आदर-सत्कार करके उसे भेज दिया। तब से मुकुंद दास का नाम पड़ा

नाहारखान (बाघ राजा)। ऐसे असमान वीर जसवंत सिंह के रक्षा कवच थे, इसीलिए औरंगजेब उसे मार नहीं सका। अनेकों प्रयत्न करने पर भी वह असफल ही रहा। उसके सारे के सारे षडयंत्र व्यर्थ हो गये। इस वजह से उसने दोस्ती का हाथ बढ़ाया। जसवंत सिंह को अपनी सेना का अधिपति बनाकर विद्रोहियों को कुचल डालने के लिए उसे काबुल भेजा।

चूँकि वह बादशाह का हुक्म था, जसवंत सिंह उसे टाल नहीं सका। अपने शासन भार को उसने बड़े बेटे पृथ्वीसिंह को सौंपा और अपने परिवार के कुछ सदस्यों व विश्वासपात्र मित्रों को लेकर वह काबुल गया। जल्दी ही वह उस प्रांत का गवर्नर घोषित किया गया।

औरंगजेब ने एक बार मारवाड़ के युववारिस पृथ्वीसिंह को अपने दरबार में बुलवाया। वह यह नहीं भूला कि कुछ सालों पहले यही युवक भयंकर बाघ से भिड़ पड़ा और उसे मार डाला। उसने उस साहस-भरे काम के लिए अब उसकी प्रशंसा की। हुक्म देते ही दो सैनिक एक आकर्षक दुशाला



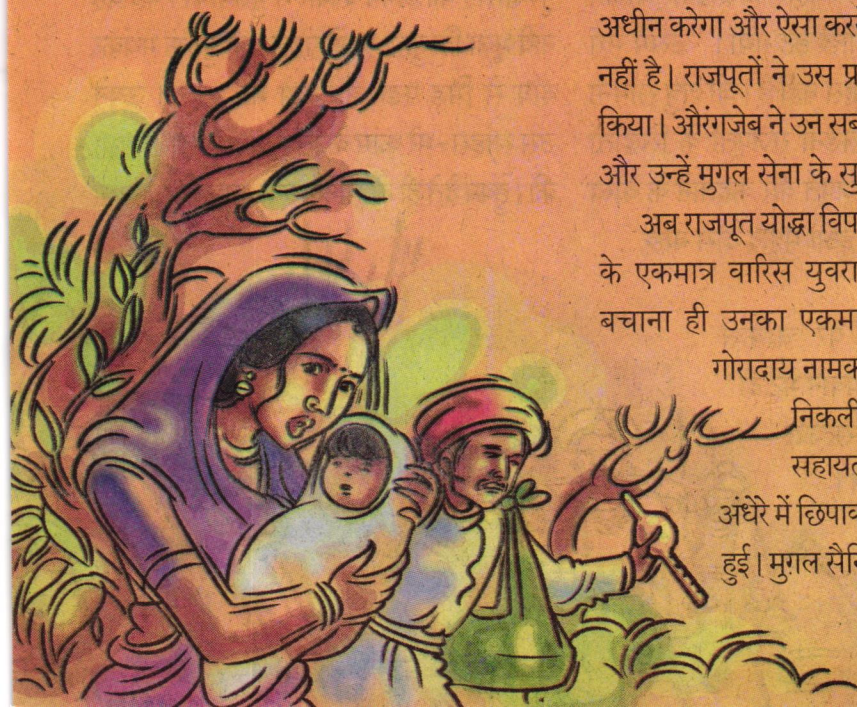
ले आये और पृथ्वीसिंह पर ओढ़ा दिया। पृथ्वीसिंह बहुत ही खुश होते हुए वहाँ से निकल पड़ा। परंतु उसका आनंद क्षणिक साबित हुआ। थोड़ी ही देर में पूरा शरीर फफोलों से भर गया और एक ही घंटे के अंदर वह मर गया। औरंगजेब में प्रत्यक्ष रूप से उसका सामना करने का साहस नहीं था। इसीलिए उस दुशाले पर विष पोता और उसे धोखा देकर मार डाला।

पुत्र की मृत्यु का समाचार जसवंत सिंह को मिला तो वह चिंतित हो उठा। उसके दो और पुत्र काबुल में ही मर गये। बेवारिस मारवाड़ राजा जसवंत सिंह १६७२ में स्वस्थल से दूर मर गया। शत्रु का समूल नाश करने पर औरंगजेब बहुत खुश हुआ और उसने मारवाड़ को अपने वश में कर लिया। उसने वहाँ के मंदिरों का ध्वंस कर दिया। राजभवन की निधियों को लूट लिया।

किन्तु, बहुत ही कम समय में ही बादशाह को एक आश्चर्यजनक समाचार मिला, जिसे सुनकर वह परेशान हो उठा। समाचार था, जसवंत सिंह के साथ जो योद्धा काबुल गये थे वे वापस लौट रहे थे। उनमें से जसवंत सिंह की गर्भिनी पत्नी भी थी, जिसने थोड़े ही दिनों में पुत्र को जन्म दिया। शिशु अजित सिंह को राजपूत अपना राजा मानने लगे और वे उसे माँ सहित स्वस्थल ले आ रहे थे। औरंगजेब ने इस विषय पर खूब सोचा और उनका अंत करने के लिए एक नया षडयंत्र रचा। शिशु अजित सिंह के साथ लौटे राजपूतों का स्वागत उसने बड़े पैमाने पर किया और उन्हें दिल्ली के दरबार में आने के लिए न्योता दिया। उसने उन राजपूत योद्धाओं से बताया कि युवराजा अजितसिंह की रक्षा की जिम्मेदारी उसे सौंपी जाये तो मारवाड़ राज्य को वह उनके अधीन करेगा और ऐसा करने में उसे कोई आपत्ति नहीं है। राजपूतों ने उस प्रस्ताव को अस्वीकार किया। औरंगजेब ने उन सबको जेल में डाल दिया और उन्हें मुगल सेना के सुपुर्द कर दिया।

अब राजपूत योद्धा विपत्ति में फँस गये। राज्य के एकमात्र वारिस युवराज अजित सिंह को बचाना ही उनका एकमात्र लक्ष्य बन गया।

गोरादाय नामक दाय, संपेरे के वेष में निकली और मुकुंद दास की सहायता से शिशु युवराज को अंधेरे में छिपाकर ले जाने में कामयाब हुई। मुगल सैनिक शक न करें, इसके



लिए वह अपने बेटे को उस जगह पर छोड़कर चली गयी।

राजपूत योद्धा दुर्गादास राठौड़ तत्काल ही युद्ध के लिए सन्नद्ध हो गया। इसके पहले राजपरिवार की सभी स्त्रियाँ उस कमरे में पहुँच गयीं, जहाँ बड़ी तादाद में तोपों की बारूद थी। उन्होंने उसमें आग लगा दी, जिसके कारण राजमाता को छोड़कर सबके सब अग्नि की आहुति बनीं।

जलते हुए भवन से बाहर आये दुर्गादास राठौड़ ने अपने अनुचरों के साथ मुगल सेना का सामना किया। शिशु युवराज को लेकर कुछ लोग भाग रहे हैं, उसे भांपते ही चंद मुगल सैनिक उनका पीछा करने लगे। पर राजपूतों ने उन्हें आगे बढ़ने से रोका और इतने में गोरादाय शिशु को लेकर भाग गयी। तीन सौ राजपूत वीरों ने मुगल सेना से जो लड़ाई की, उनमें से अब केवल सात ही राजपूत जिन्दा बच गये। शत्रु सेना बड़ी ही तेजी से आगे बढ़ने लगी। राजपूतों को समझ में नहीं आया कि राजमाता को कैसे बचाया जाए। दुर्गादास ने अपनी तलवार राजमाता के हाथ में थमा दी। राजमाता चाहती थी कि किसी भी हालत में वह शत्रु सेना के हाथ न आये। जब कोई दूसरा मार्ग न रहा, तब राजमाता ने वह तलवार अपनी छाती में भोंक ली और प्राण त्याग कर दिया। बहुत ही घायल दुर्गादास, शेष अनुचरों के साथ वहाँ से बचकर निकल गया।

बहुत ही दूर के पर्वतों में युवराज को पहुँचाया गया और अब उसकी रक्षा का पूरा विश्वास हो गया। अब युवराज अजित विश्वासपात्र राजपूतों के बीच पलने लगा। राजपूतों में यह खबर फैल भी गयी कि युवराज अब कहाँ पल रहे हैं। जब युवराज आठ साल की उम्र के थे तब कुछ प्रमुख वहाँ गये और उनसे मिले। सबने मिलकर दृढ़ निश्चय कर लिया कि मुगलों के अधिकार बंधन से हमें छुटकारा पाना चाहिये और इसके लिए युद्ध की तैयारी करनी चाहिये। कुछ ही समय के अंदर उन्होंने अनेक प्रांतों को अपने वश में कर लिया।

औरंगजेब बूढ़ा हो गया। उसने देखा कि राजपूत योद्धा अब बलवान होते जा रहे हैं। अंतिम शासक और शक्तिवान बादशाह के नाम से प्रख्यात औरंगजेब १७०७ मार्च में मर गया। अजित सिंह, दुर्गादास आदि ने आक्रामकों को मातृभूमि से खदेड़ दिया। युवराज अजित सिंह मारवाड़ का महाराज बना।

(ए.के.डि.)



गरजते बादल बरसते भी हैं

ईसा पूर्व पाँचवीं शताब्दी में एथेन्सवासी सुविख्यात यूनानी दार्शनिक सुकरात ने अपना जीवन अपने नगर के युवकों को शिक्षित करने, उनमें सामान्य बुद्धि और विवेक विकसित करने में निवेदित कर दिया था। जिसने भी उसे सुना, रोमांचित हो गया। वह नई पद्धति से सिखाता था। वह युवकों के सामने प्रश्न करता और उत्तर खोजने में उन्हें मार्गदर्शित करता था। उसमें ऊँचे विचारों को सरल शैली में प्रस्तुत करने की कला थी।

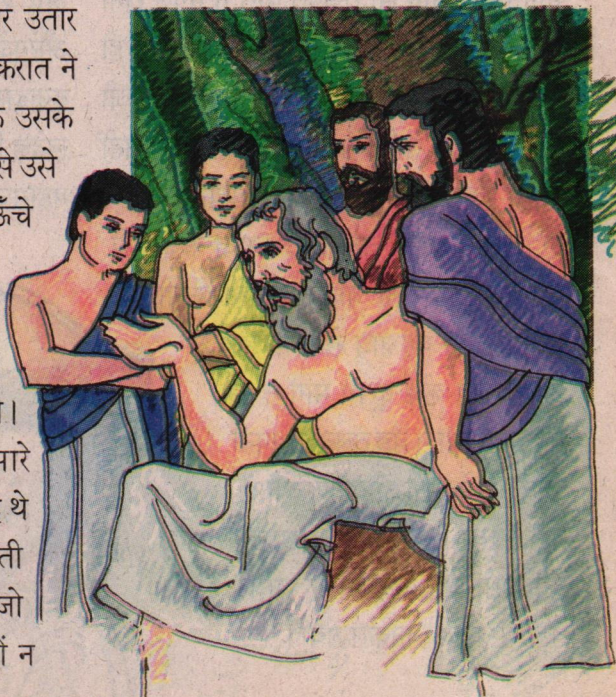
प्रसिद्ध वक्ता और चिन्तक सिसरो के विचार में “उसने दर्शन को स्वर्ग से धरती पर उतार दिया।” सिसरो का तात्पर्य था कि सुकरात ने दर्शन को इस प्रकार प्रस्तुत किया कि उसके श्रोता जीवन की व्यावहारिक समस्याओं से उसे जोड़ सकते थे। दर्शन उनके लिए मात्र ऊँचे विचारों का विषय नहीं रह जाता था।

इस महान दार्शनिक को सत्ताधारी लोग बिल्कुल नहीं पसन्द करते थे। वास्तव में वे इससे अधिक डरने लगे। राजनीतिज्ञ और पादरी उन ढेर सारे अंधविश्वासों के बल पर शासन कर रहे थे जिनके कारण आम जनता आतंकित रहती थी। वे किसी विधि या विधान को, जो कितना भी नृशंस अथवा निरंकुश क्यों न

हो, चुनौती देने को तैयार नहीं थे। सुकरात के प्रभाव के कारण लोग अपनी समस्याओं पर एक नये आलोक में विचार करने लगे। वे शासकों के कार्यों पर उंगली उठाने लगे। एथेन्स के वातावरण में विचारों की एक नई लहर उमड़ने लगी।

अन्त में, शासकों ने उनके युवा नागरिकों को भ्रष्ट करने का सुकरात पर आरोप लगाया। उसे मृत्युदण्ड दिया गया।

हमारे बहुत पाठक इस महान ऋषि के अन्तिम क्षणों के विषय में जानते हैं।



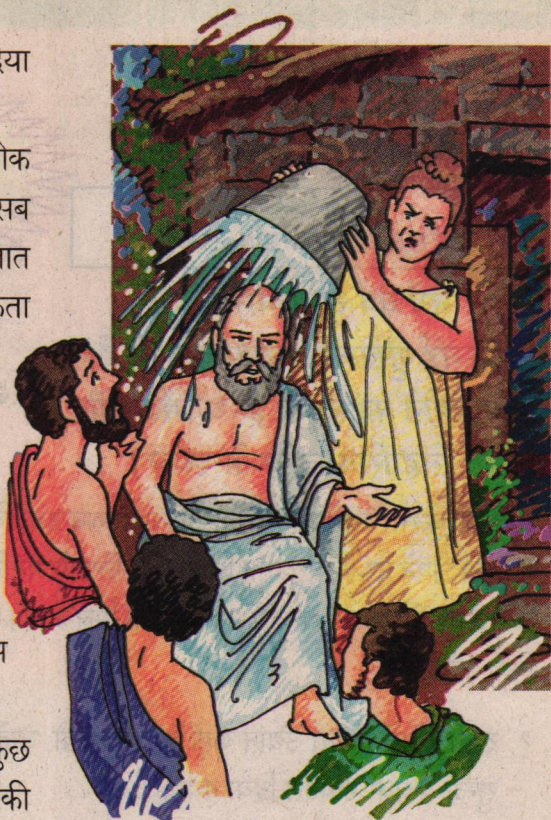
उसे हेम लॉक नाम का विष का प्याला दिया गया।

जब उसके चारों तरफ बैठे उसके शिष्य शोक मना रहे थे, तब उसने उनसे कहा, “तुम सब शीघ्र ही शहर चले जाओगे और मैं किसी अज्ञात लोक में चला जाऊँगा। लेकिन कौन कह सकता है कि कौन-सा बेहतर है--वह स्थान, जहाँ तुम अभी जाओगे अथवा वह स्थान जहाँ मैं जानेवाला हूँ।”

जो भी हो, हम जिस बात पर बल दे रहे हैं, वह है उसकी निश्चलता और संतुलित मनोभाव। वह व्यंग्यात्मक होता, विनोदपूर्ण होता, शेखीबाजों और अत्याचारियों का उपहास करता। परन्तु कभी क्रोध नहीं करता था।

एक दिन वह अपने घर के सामने बैठा कुछ नवयुवकों से बातचीत कर रहा था और उनकी शंकाओं का उत्तर दे रहा था और उन्हें बता रहा था कि अपने लिए कैसे चिन्तन करना चाहिये। घण्टों बीत गये। उसकी पत्नी ने उसे अनेक बार पुकारा। उसके किसी घरेलू काम के लिए सुकरात की मदद की जरूरत थी। पर यह विद्वान चर्चा में इतना मग्न था कि उसकी पुकार सुनने और कई बार उठ कर जाने के प्रयास के बावजूद युवकों की समस्याओं को सुलझाने में अपनी रुचि के कारण चर्चा में खोया रहा।

उसकी पत्नी की क्रोध भरी चीख-चिल्लाहट तेज और गर्जन के समान होती गई। अन्त में वह एक बाल्टी पानी के साथ आई और सुकरात के



सिर पर डाल लिया। उसके पास बैठे युवक अवाक् रह गये और विक्षुब्ध हो गये, पर सुकरात ने सिर्फ मुस्कुरा दिया और कहा, “मेरे लड़को, यहाँ इस बात का एक और उदाहरण है कि लोकप्रिय धारणा गलत हो सकती है। तुम सब ने सुना है कि गरजते बादल बरसते नहीं। पर अभी तुमने क्या महसूस किया? गरजता बादल सचमुच बरस सकता है। इसलिए पुनः मिलने तक इस पाठ के साथ लौट जाओ।”

उसके सुननेवाले ठहाका मारकर हँस पड़े। सुकरात ने भी यही किया। और तो और, उसकी पत्नी भी शामिल हो गई, यद्यपि वह लज्जित थी।

चन्दा मामा प्रश्नोत्तरी-१

Co-sponsored by
Infosys FOUNDATION, Bangalore

जो सही उत्तर देंगे,
उनमें से एक को २५० रुपये
दिये जायेंगे।*

नये वर्ष से प्रश्नोत्तरी की
एक नई शृंखला आरम्भ कर रहे हैं।
इस महीने का विषय है-धार्मिक और
ऐतिहासिक रुचि के स्थल।

*सही उत्तर देनेवाले एक से
अगर अधिक हों तो सबको ५०/- रुपये
पुरस्कार के रूप में दिये जायेंगे।

तुम्हें जो करना चाहिये: १. एक कागज पर सब उत्तर लिख लो। २. अपना नाम, उम्र तथा पिन कोड के साथ अपने घर का पूरा पता लिखो। ३. लिफाफे पर लिखो- चन्दा मामा प्रश्नोत्तरी-१, ४. डाक से भेज दो जो हमें २९ फरवरी २००८ तक मिल जाये। ५. उत्तर अप्रैल २००८ के अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

१. रददी चीजों से भरा उद्यान कहाँ है? याद रखो, उन्हें सुन्दर पदार्थों में बदल दिया गया है।

२. यह वास्तव में मन्दिर नहीं है, परन्तु इसकी वास्तुकला में मन्दिर, गिरजाघर तथा मस्जिद की वास्तु को समाविष्ट किया गया है जो धार्मिक बन्धुत्व का प्रतीक है। यह कहाँ स्थित है?

३. यह सिंहद्वार १७० फुट से अधिक ऊँचा है और द्वार तक पहुँचने के लिए १२० सीढ़ियाँ हैं। यह एक मुस्लिम शासक की दक्कन विजय की स्मृति में बनाया गया था। यह कहाँ है?

४. भारत का प्रथम राष्ट्रीय पार्क एक शिकारी के नाम पर है जो बाद में एक संरक्षक बन गया। वह कौन था और पार्क कहाँ है?

५. पाँच सौ वर्ष पुराने मन्दिर के निकट एक सरोवर है जो अपने कच्छपों के लिए विख्यात है। इन्हें आदरणीय और पूजनीय माना जाता है। मन्दिर इन्हीं के नाम पर प्रसिद्ध है। सरोवर और मन्दिर के नाम क्या हैं?



उल्लुओं की भाषा

अकबर को देखते ही बीरबल ताड़ गया कि वे क्या सोच रहे हैं। घुड़सवारी के लिए आवश्यक पोशाक उन्होंने पहन रखी थी और कालीन पर फैलाये गये तलवारों व भालों को ध्यान मग्न होकर देख रहे थे। बीरबल ने झुककर सलाम किया। चूँकि अकबर की दृष्टि हथियारों पर केंद्रित थी, इसलिए थोड़ी देर बाद उन्होंने मन ही मन गुनगुनाते हुए कहा, 'वाह, कितने उम्दे हथियार हैं!'

अकबर को शिकार करना बेहद पसंद था। हिरनों के सिरों से पूरे भवन को सजाना उन्हें कितना ही अच्छा लगता था। किन्तु बीरबल को जंगल में आजादी के साथ विचरते हुए वन्य मृगों का शिकार करना बिल्कुल ही पसंद नहीं था। वे स्वयं शिकार करने की क्रिया में भाग नहीं लेते थे। वे इसी बात को लेकर सोचा करते थे कि बादशाह की शिकार करने की आसक्ति को कैसे कम करूँ। इसके लिए वे कोई मार्ग ढूँढ़ने में लगे हुए थे।

“बीरबल, जानते हो, मैं क्या करने जा रहा हूँ?” अकबर ने पूछा। “दूसरों के मन को पढ़ने की विद्या से मैं अनभिज्ञ हूँ महाराज”, बीरबल ने मुस्कुराते हुए कहा।

“मैं जानता हूँ तुम यह विद्या बखूबी जानते हो। देखो, कड़ी धूप है, ठंडी हवा चल रही है।

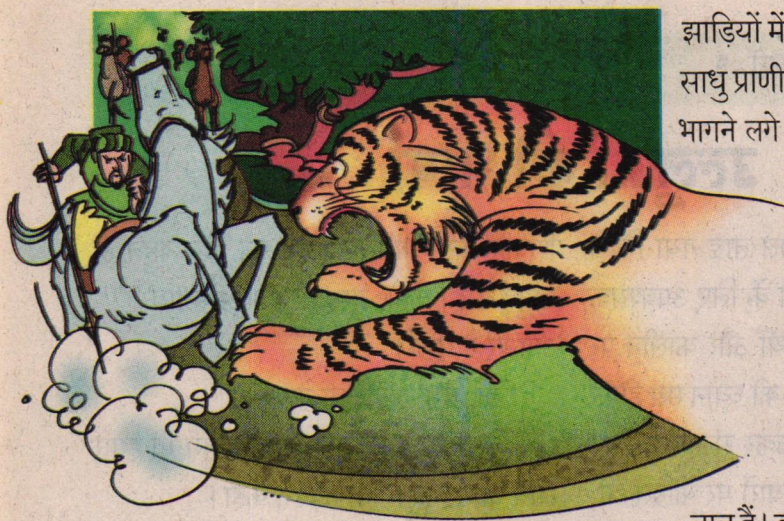
शिकार करने के लिए आज का दिन बहुत ही अनुकूल है। कहो, तुम्हारा क्या अभिप्राय है?” अकबर ने पूछा।

“हाँ, प्रभु”, बीरबल ने कहा।

“इसका यह मतलब हुआ कि तुम भी हमारे साथ आ रहे हो।” अकबर ने कहा।

“प्रभु की खुशी ही हमारी खुशी है”, बीरबल ने विनयपूर्वक कहा।





झाड़ियों में छिपे खरगोश, हिरण जैसे साधु प्राणी भय के मारे जंगल की ओर भागने लगे। राज परिवार उनका पीछा करने लगा।

ऊँचे पेड़ों से भरे समतल भूमि पर बादशाह पहुँचे। देखा गया कि एक बाघ उनकी ओर बढ़ता हुआ आ रहा है। उसकी आँखें एकदम

लाल हैं। डफलियों की ध्वनियों ने उसे

“मुझे मालूम है कि तुम्हें शिकार से चिढ़ है, बिल्कुल पसंद नहीं करते। तुम बहुत ही होशियार हो। सही मौके पर चमत्कार भरी बातें करने में तुम माहिर हो। किन्तु मैं यह नहीं जानता कि तुम शारीरिक रूप से बलवान हो या नहीं। तुम हमारे साथ शिकार करने आ जाओगे तो यह भी मालूम हो जायेगा।” अकबर ने मुस्कुराते हुए कहा।

झुककर सलाम करते हुए बीरबल ने कहा, “जैसा आपका हुक्म बादशाह।”

बीरबल के साथ अकबर परिवार व सेना सहित शिकार करने घोड़े पर सवार होकर निकल पड़ा। नगर पार करने के एक घंटे के बाद वे जंगल में पहुँचे।

जंगल में उनके सैनिकों ने तरह-तरह की आवाजों से जंगल को प्रतिध्वनित किया और डफले बजाये, जिससे वन्य मृग भय के बारे अपनी जगह से भागें। पूरा जंगल गूँज उठा। पक्षी उड़े,

नाराज कर दिया था। हथियारों से लोगों ने जब उसे अचानक घेर लिया तब क्षण भर के लिए वह रुक गया। पीछे मुड़कर जाने का मार्ग भी नहीं था। दिशाओं को प्रतिध्वनित करते हुए उसने गर्जना की। पंजा फैलाते हुए, पैने दांतों से भरे मुँह खोले वह अकबर पर दूट पड़नेवाला ही था।

अकबर ने भाले को ऊपर उठाया और उसके मुँह को निशाना बनाकर उसे ज़ोर से फेंका। बस, बाघ के मुँह के अंदर भाले के घुस जाने से बाघ ज़मीन पर गिर पड़ा। उसके मुँह से खून लगातार बहने लगा। बादशाह घोड़े पर से उतरे और म्यान से तलवार निकालकर बाघ की ओर गये। पर तलवार चलाने की कोई ज़रूरत नहीं पड़ी, वह बाघ छूटपटाता हुआ वहीं मर गया। राजा ने विजय के उत्साह से पूरित होकर अपना हाथ उठाया। पूरा परिवार आनंद विभोर होकर चिल्लाया, “अल्लाहो अकबर।”

शाम तक बादशाह ने एक और बाघ को मार डाला। सब लोग आराम करने एक सरोवर के पास गये। खाना खा चुकने के बाद अकबर ने कहा, “यहाँ की प्रकृति का सौंदर्य मुझे बहुत अच्छा लगा। यहीं थोड़ी और देर तक ठहरूँगा।” फिर उन्होंने परिवार को वहाँ से जाने का हुक्म दिया। उन्होंने बीरबल से पूछा, “क्या तुम मेरे साथ यहीं रह सकते हो?” बीरबल ने झुककर सलाम करते हुए कहा, “हाँ, अवश्य रहूँगा।”

दोनों एक पेड़ के नीचे बैठ गये। सूर्यास्त होने जा रहा था और अंधेरा भी धीरे-धीरे फैल रहा था। बीच-बीच में पक्षियों का कलरव भी सुनायी दे रहा था। अब वहाँ का वातावरण प्रशांत और गंभीर था। थोड़ी देर और बाद उल्लू एक के बाद एक चिल्लाने लगे। अकबर ने इस पर गौर किया और कहा, “हमें उल्लूओं की जबान नहीं मालूम है। हम नहीं जानते कि वे आपस में क्या बातें कर रहे हैं। कहीं हमारी हँसी तो उड़ा नहीं रहे हैं।”

“मैं उनकी भाषा जानता हूँ प्रभु। क्या मैं बताऊँ कि वे आपस में क्या बातें कर रहे हैं?” बीरबल ने पूछा।

“तो फिर देरी क्यों? उनकी भाषा जानते हो तो बताओ न।” अकबर ने कहा।

“प्रभु, वे आपस में दहेज के बारे में चर्चा कर रहे हैं। वर का बाप ऐसे चालीस जंगलों की माँग कर रहा

है, जहाँ जंतु ही न हों। वधू का बाप उल्लू बता रहा है कि मैं बीस जंगलों को ही दे पाऊँगा”, बीरबल ने कहा।

तब एक उल्लू चिल्ला पड़ा। “तब वधू के पिता ने कहा कि वर का परिवार छे और महीनों तक प्रतीक्षा कर सके तो और बीस जंगलों को दे पाऊँगा, जहाँ जंतु ही न हों।” बीरबल ने पुनः कहा।

“यह कैसे मुमकिन है? बीस जंगलों से एक उल्लू मात्र जंतुओं को कैसे भगा दे सकता है?” अकबर ने पूछा।

“इस आशा को लेकर वह वचन दे पा रहा है कि आप उसकी सहायता करेंगे”, बीरबल ने कहा।

“तुम क्या कह रहे हो?” गरजते हुए कहा अकबर ने।

“प्रभु, जब आप एक बार शिकार करने जंगल आते हैं, तब दो-तीन जंगल खाली हो जाते हैं।



यह उनका कहना है। अगले छे महीनों में आप कम से कम बीस बार शिकार करने यहाँ पधारेंगे। इसी आशा को लेकर बधू का बाप वचन दे रहा है”, बीरबल ने कहा।

इस बात पर अकबर थोड़ी देर तक मौन रह गया और फिर कहा, “तुमने बहुत ही खूब बताया बीरबल। तुमने मेरी आँखें खोल दीं। जंतु, पेड़-पौधे न हों तो जंगल ही नहीं रहेंगे। वन्य मृगों का शिकार करके मैं कितनी बड़ी गलती कर रहा हूँ। समझ गया। तुम्हें वचन देता हूँ कि आगे से शिकार करने जंगल नहीं आऊँगा।” अकबर ने सोचते हुए कहा।

बीरबल को विश्वास ही नहीं हुआ। उसने सोचा तक नहीं था कि इतनी जल्दी अकबर बादशाह में इतना बड़ा परिवर्तन आयेगा। परंतु वह कुछ कहे बिना चुप रहा।

“उलू अब क्या बता रहा है?” अकबर ने हँसते हुए पूछा।

“बधू का बाप कह रहा है, चूँकि बादशाह आगे से शिकार नहीं करेंगे, इसलिए तुम जो जंगल माँग रहे हो, वह नहीं दे सकता”, बीरबल ने कहा। “बहुत खूब”! कहते हुए बादशाह जोर से हँस पड़े।

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी

निम्नलिखित संकेतों के आधार पर

महापुरुषों की पहचान करें:

१. भारतीय तिरंगा विदेश में पहली बार स्वाधीनता से पूर्व फहराया गया। किसने और कहाँ फहराया?



२. उन्होंने ऑक्सफोर्ड में अध्यापन किया। सोवियत संघ के राजदूत थे। बाद में भारत के राष्ट्रपति बने? कौन?

३. एक नोबेल पुरस्कार विजेता ने एक विश्वविद्यालय की स्थापना की। कौन थे वे?



४. केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में वित्त मंत्री रहे, जो बाद में भारत के राष्ट्रपति बने। उनका नाम?

५. स्वाधीनता से पूर्व एक भारतीय प्रान्त के मुख्य मंत्री रहने के पश्चात संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा की अध्यक्षता की—एक मात्र भारतीय जिन्हें यह सम्मान मिला।



(उत्तर पृष्ठ ७४ पर)

सयानी भाभी

शिवन एक कुलीन परिवार में पैदा हुआ था। वह अपने माता-पिता का दूसरा बेटा था जिसका जन्म बड़े बेटे शंकरन की पैदाइश के दस वर्ष बाद हुआ था। कुछ दिनों के बाद उनकी माता बीमार पड़ गई और मरणासन्न हो गई। अपने पति और बेटों से अंतिम विदाई लेते हुए उसने ख़ास तौर पर शंकरन से कहा, “अपने पिता के चले जाने के बाद भी नन्हें शिवन का तुम्हें ध्यान रखना चाहिये।” इतना कहकर उसने सदा के लिए आँखें बन्द कर लीं।

जब शंकरन बड़ा हो गया तब उसके पिता ने उसे विवाह कर लेने के लिए सलाह दी, जिससे घर और उनकी देखभाल के लिए एक स्त्री रह सके। एक सम्पन्न परिवार की पार्वती से उसका विवाह निश्चित हो गया। शीघ्र ही, वह शंकरन के लिए एक स्नेहिल पत्नी, पिता के लिए एक कर्तव्यनिष्ठ बेटी और छोटे शिवन के लिए एक ममतामयी माँ सिद्ध हुई।

पार्वती शिवन का विशेष रूप से ध्यान रखती थी। हर रोज सुबह वह उसे स्कूल के लिए तैयार करती और जब वह स्कूल से वापस लौटता तब उसकी पसन्द का भोजन तैयार रखती। उसकी हर जरूरत का वह ख़याल रखती थी और शंकरन अथवा उसके पिता को शिवन के विषय में कभी

शिकायत करने का मौका नहीं देती थी। शिवन शीघ्र ही एक सुन्दर नवयुवक के रूप में बड़ा हो गया।

अब शिवन ने अपना अध्ययन पूरा कर लिया था, पर पार्वती नहीं चाहती थी कि वह काम के लिए बाहर जाये। पिता हमेशा राजा या उसके मंत्रियों से मिलने राजधानी के नगर में जाते रहते। उसका पति भू-सम्पत्ति की देखभाल करने तथा किरायेदारों से किराया उगाहने में व्यस्त रहता था। इसलिए वह घर में एक स्त्री का साथ पाने के





लिए तरस रही थी। उसने सोचा कि अब शिवन का विवाह हो जाना चाहिये।

एक दिन जब वह शिवन के साथ इस विषय पर चर्चा कर रही थी, तब शिवन ने भाभी को अपने दिल की बात बताई। मन्दिर में उसकी भेंट एक दिन गौरी से हो गई थी और वह उसे पसन्द करने लगा था। पार्वती ने भी उसे देखा और पता लगाने पर उसे मालूम हुआ था कि उसका परिवार भी इन्हीं की तरह सुखी-सम्पन्न है। पार्वती की नजर में दोनों की जोड़ी भी ठीक थी। इसलिए उसने शिवन को गौरी के समक्ष औपचारिक प्रस्ताव रखने की सलाह दी।

अगले दिन शिवन गौरी के घर गया। जब उसने गौरी के सामने उससे विवाह करने की

इच्छा प्रकट की, गौरी को आश्चर्य नहीं हुआ। उसने भी शिवन को देखा था और वह जानती थी कि शिवन का परिवार कुलीन है। किन्तु फिर भी उसके प्रस्ताव को सीधे स्वीकार करना नहीं चाहती थी।

गौरी ने कहा, “आशा करती हूँ कि यदि मैं तुम्हारी परीक्षा लूँ तो तुम बुरा नहीं मानोगे।” शिवन की गौरी से विवाह करने के तीव्र इच्छा थी। इसलिए उसने विरोध नहीं किया। वह राजी हो गया। तब गौरी ने अन्दर से एक पात्र लाकर उसे देते हुए कहा, “इसमें सरसों और तिल के बीज हैं। इन्हें अलग करके तिल के बीज मेरे पास कल लाना।” शिवन पात्र लेकर घर चला गया पर यह सोचता रहा, ‘क्या यह मूर्खतापूर्ण परीक्षा नहीं है?’

पार्वती चौखट पर मिल गई। “क्या हुआ शिवन? क्या गौरी से भेंट हुई? और यह पात्र तुम्हारे हाथ में क्यों है?”

शिवन ने गौरी से हुई बातचीत के बारे में बताते हुए कहा, “ओप्पोल (बड़ी दीदी), वह मुझसे विवाह करना चाहती तो है, पर मेरी परीक्षा लेना चाहती है। उसने तिल और सरसों के बीज से भरा यह पात्र दिया है और कहा है कि तिल के बीजों को अलग करके कल ले आना। मैं रात भर जागकर भी इसे नहीं कर पाऊँगा। क्या करूँ?”

पार्वती तुरन्त समझ गई कि गौरी एक चतुर लड़की है। वह मुस्कुराती हुई बोली, “घबराओ नहीं, शिवन। यह कल तक हो जायेगा।”

पार्वती पात्र को पिछवाड़े में ले गई और अपने

एक नौकर को बुलाकर किसी पेड़ से एक चींटी-घोंसला ले आने के लिए कहा। चींटियाँ प्रायः पत्तों से घोंसला बनाती हैं। नौकर दूढ़कर चींटियों का एक घोंसला ले आया। पार्वती उसे बरतन में रख कर चली गई।

दूसरे दिन सुबह तक चींटियाँ सरसों के सारे दाने ले जा चुकी थीं और तिल के बीज छोड़ गई थीं क्योंकि वे तिल के बीज नहीं खातीं। पार्वती ने शिवन को बुलाकर उसे पात्र दे दिया। उसने सोचा कि उसकी भाभी गौरी से अधिक सयानी है।

वह गौरी को बरतन वापस देने गया। गौरी मुस्कुराती हुई अन्दर गई और वापस आकर खाली बरतन देती हुई बोली, “इसमें ओस का पानी जमा कर कल ले आना। तुम्हारी होशियारी की यह दूसरी परीक्षा है।”

शिवन हतोत्साहित होकर घर जाते समय सोचने लगा, ‘सरसों और तिल अलग-अलग करना बल्कि आसान था। पर इतने सारे ओस कल तक मैं कैसे जमा करूँगा? शायद ओप्पोल कोई उपाय बतायेगी।’

शिवन को खाली बरतन के साथ वापस आते देख पार्वती को आश्चर्य हुआ। शिवन बहुत उदास और निराश लग रहा था। “अब क्या बात है शिवन?” पार्वती ने पूछा।

शिवन के बताने पर गौरी ने उसे सान्त्वना देते हुए कहा, “घबराओ नहीं अनिया (छोटा भाई)। मैं कुछ उपाय करती हूँ।” शिवन मुँह लटकाये चला गया।

पार्वती ने वहाँ के धोबियों को बुलाकर कहा, “कृपया मेरी मदद कीजिये। अपने सारे कपड़े आज रात को बाहर परसार दीजिये। उनमें ओस जमा हो जायेगा। कपड़ों को निचोड़ कर एक बरतन में ओस जमा कर लीजिये और कल प्रातःकाल मुझे लाकर दे दीजिये। क्या आप मेरी इतनी मदद करेंगे?”

धोबी राजी हो गये और दूसरे दिन सुबह ढेर सारा ओस का पानी पार्वती को दे गये। पार्वती ने गौरी के खाली बरतन में उस ओस को डालकर शिवन को गौरी के पास ले जाने को कहा।

“शायद अब तो तुम खुश हो!” शिवन ने मुस्कुराते हुए गौरी को ओस से भरा बरतन वापस करके कहा।



पार्वती बरतन में स्फटिक-सा निर्मल जल देखकर बहुत प्रसन्न हुई और बोली, “धन्यवाद शिवन। तुम बुद्धिमान हो। पर तुम्हारी बुद्धिमानी की एक और परीक्षा लेना चाहती हूँ। कृपया कल तक मुझे ऐसे एक सौ ताजे पान के पत्ते लाकर दो जो न तो हाथ से तोड़े गये हों और न चाकू से काटे गये हो।”

शिवन को सन्देह हुआ कि यह कैसे सम्भव हो सकता है! ‘बिना हाथ लगाये या चाकू के बिना पान के पत्ते कैसे लायें? यह असम्भव है!’ यही सोचता हुआ वह घर पहुँचा।

उसके उदास चेहरे को देखकर भाभी ने समझा कि या तो शिवन अपने उद्देश्य में विफल हो गया या कोई नई पहेली लेकर आया है। शिवन से गौरी



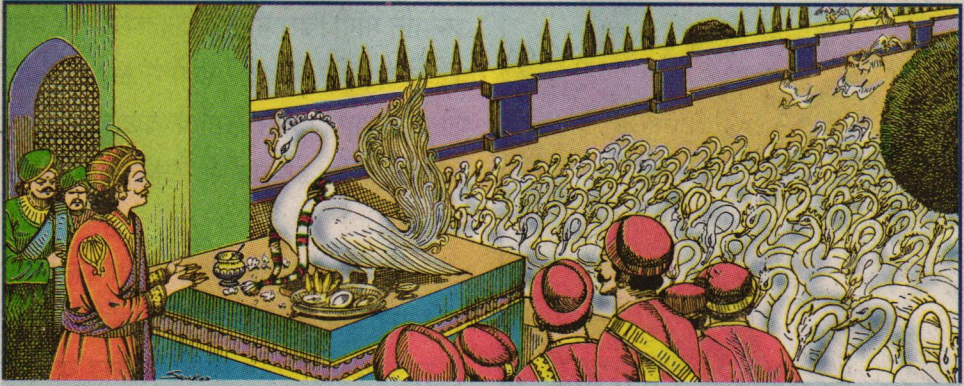
की नई पहेली के बारे में सुनकर बोली, “कोई बात नहीं, मैं इसका भी कोई उपाय सोचती हूँ। परन्तु, कल मैं भी तुम्हारे साथ गौरी से मिलने आऊँगी और उससे पूछूँगी कि कितनी और परीक्षाएँ हैं।”

जब पार्वती शिवन की समस्या के बारे में सोच रही थी तब उसे याद आई कि उसने तोता पाल रखा है। वह तोते को अपने पिछवाड़े के बाग में ले गई जहाँ उसने पान की लता लगा रखी थी। उसने तोते को पिंजड़े से बाहर छोड़ दिया। तोता पान के पत्तों को चोंच से काटकर गिराने लगा। पार्वती ने सौ से भी अधिक कोमल पत्तों को इकट्ठा कर लिया और तोते को फिर से पिंजड़े में बन्द कर दिया।

दूसरे दिन सुबह शिवन के साथ पार्वती भी गौरी के घर गई। उसे देखते ही गौरी घबरा गई और उसके आने का कारण समझ गई। वह झेंपती और शरमाती हुई बोली, “चेची (बड़ी दीदी), मैं देखना चाहती थी कि शिवन मुझे कितना चाहता है। यदि तुम्हारा देवर मेरी परीक्षा में विफल हो जाता तब भी मैं विवाह के लिए सहमत हो जाती, क्योंकि अब तक उसके समान मैंने किसी और को नहीं देखा है। मुझे माफ कर दीजिये।”

पार्वती ने प्यार से उसे गले लगा लिया और कहा, “तुम क्या समझती हो कि मैं उसे किसी और लड़की से विवाह करने देती।”

इस प्रकार सयानी और चतुर पार्वती ने शिवन और गौरी का विवाह करा दिया। उसके पति शंकरन और ससुर दोनों ने उसकी चतुराई की सराहना की।



सूरज के साथ होड़

प्राचीन काल में एक समय ब्रह्मदत्त काशी पर राज्य करते थे। उस समय चित्रकूट पर्वत पर नब्बे हजार हंस निवास करते थे। उसी समय बोधिसत्व ने एक हंस के रूप में जन्म लिया। उसके अन्दर अनेक उत्तम गुण थे। वह अत्यधिक सुन्दर था। साथ ही वह अत्यंत तेज गति से उड़ सकता था। इसी कारण वह नब्बे हजार हंसों का प्रधान बन गया।

ऐसे असंख्य उत्तम गुणों व शक्तियों के कारण हंसों के प्रधान को लोग राजहंस कहने लगे।

एक दिन राजहंस अपने दल के साथ सरोवर में विहार करके अपने निवास को लौट रहा था। मार्ग में वह काशी राज्य के ऊपर से होकर निकला। पक्षियों के उस विशाल दल को देखने पर ऐसा लगता था, मानो सारे काशी राज्य पर सोने का वितान बिछा दिया गया हो।

काशी के राजा ने बड़े आश्चर्य से उस दल की ओर देखा। उन सभी पक्षियों में तारों के बीच चन्द्रमा के समान शोभायमान राजहंस को देखकर राजा जैसे उस पर मुग्ध हो गये।

काशी नरेश उस राजहंस के राजसी ठाट, तेज आदि राजोचित लक्षणों को देख बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने सुन्दर फूल मालाएँ और पुजापा मँगवा कर राजहंस का अभिनन्दन किया।

राजहंस ने राजा का यह अपूर्व आतिथ्य बड़े ही स्नेहपूर्वक स्वीकार किया और सपरिवार कुछ दिन वहीं बिताकर अपने निवास को लौट गया।

उस दिन से राजहंस के प्रति काशी नरेश के मन में स्नेह बढ़ता गया। दिन रात वे उसी के बारे में सोचने लगे। वे पलक पांवड़े बिछाये राजहंस की प्रतीक्षा करते रहते कि न मालूम वह कब किस दिशा से उधर आ जाए।

जातक कथा



एक दिन चित्रकूट पर्वत प्रदेश के हंसों में से दो बाल हंस राजहंस के पास आए और बोले, “राजन! हम दोनों कई दिनों से सूर्य के साथ होड़ लगाने की इच्छा कर रहे हैं।”

इस पर राजहंस ने समझाया- “अरे बच्चो! सूरज के साथ तुम्हारी दौड़ कैसी! कहाँ सूरज और कहाँ नहीं जान तुम! शायद तुम लोग नहीं जानते कि सूर्य की गति क्या है? तुम उन के साथ दौड़ नहीं सकते, इस दौड़ में प्राणों का खतरा भी हो सकता है! अज्ञानता वश तुम लोगों ने यह निर्णय कर लिया होगा। इसलिए तुम दोनों अपना यह कुविचार छोड़ दो।”

पर उन बालहंसों को हित की ये बातें अच्छी न लगीं। कुछ दिनों के बाद फिर उन बालहंसों ने राजहंस के पास आकर सूर्य के साथ उड़ने की

अनुमति माँगी। इस बार भी राजहंस ने उन्हें मना कर दिया। फिर भी छोटे हंसों ने अपने विचार को नहीं त्यागा। कुछ दिनों के बाद तीसरी बार अनुमति माँगी। इस बार भी राजहंस ने स्वीकृति नहीं दी।

आखिर अपनी असमर्थता से अनजान हंस के वे दोनों बच्चे अपने नेता की स्वीकृति के बिना ही सूरज के साथ दौड़ लगाने के लिए युगन्धर पर्वत की चोटी पर पहुँचे। यह चोटी इतनी ऊँची थी, मानो आसमान से बातें कर रही हो।

इधर राजहंस ने अपने परिवार के सदस्यों की गिनती की तो पाया कि उन में दो हंसों की कमी है।

असली बात भाँपने में राजहंस को देर न लगी। वह उनके लिए चिन्तित हो उठा। फिर सोचा, अब चिन्ता करने से क्या लाभ? किसी तरह से उन दो हंसों को पता लगाना है और उनकी रक्षा करनी ही होगी।

राजहंस शीघ्र ही युगन्धर पर्वत की चोटी पर पहुँचा और बालहंसों से आँख बचा कर एक जगह बैठ गया।

दूसरे दिन सूर्योदय होते ही बालहंस सूर्य के साथ उड़ने लगे।

राजहंस ने भी उन का अनुसरण किया।

उन बालहंसों में से छोटा हंस दोपहर तक उड़ता रहा, फिर पंखों में जलन के कारण बेहोश हो गया। गिरते समय उसे राजहंस दिखाई पड़ा। वह निराश हो बोला, “राजन, मैं हार गया।”

इस पर राजहंस ने उसे सान्त्वना देते हुए

कहा, “कोई बात नहीं, मैं तुम्हारी सहायता के लिए हूँ।” इस प्रकार प्यार भरे शब्दों में समझाकर उसे अपने पंखों पर चढ़ा लिया और अपने निवास में अन्य सदस्यों के बीच छोड़ दिया।

इस के थोड़ी देर बात दूसरे बालहंस के पंखों में भी पीड़ा होने लगी, मानों उसे सुइयों से चुभोया जा रहा हो।

आखिर थककर वह भी बेहोश होने लगा।

उसने भी राजहंस को देख दीनतापूर्वक बचाने की प्रार्थना की। उसे भी राजहंस ने अपने पंखों पर बिठा कर चित्रकूट पर पहुँचा दिया।

अपने परिवार के दो पक्षियों को सूर्य से परास्त होते देख राजहंस की बहुत दुख हुआ। वह यह अपमान सहन नहीं कर पाया। इसलिए वह स्वयं सूरज के साथ होड़ लगाने चल पड़ा।

अपूर्व क्षिप्र गति रखने वाला राजहंस अपनी उड़ान प्रारंभ करने के कुछ ही देर बाद सूर्य बिम्ब से जा मिला और पलक मारते उसे भी पार करके और ऊपर उड़ता चला गया। उसने केवल सूर्य की शक्ति का अनुमान लगाना चाहा था अन्यथा उसे सूर्य से होड़ लगाने की आवश्यकता ही क्या थी।

राजहंस इसलिए थोड़ी देर तक अपनी इच्छानुसार चक्र काट कर भूलोक पर उतर आया और काशीराज्य में पहुँचा।

राजहंस की प्रतीक्षा में व्याकुल काशी नरेश उसे देखते ही आनन्द विभोर हो उठे।

राजहंस को राजा ने अपने स्वर्ण-सिंहासन



पर बिठाया तथा स्वर्ण थाल में खीर और स्वर्ण कलश में शीतल शरबत से उसका आतिथ्य किया। राजहंस ने राजा का आतिथ्य स्वीकार कर सूर्य के साथ उड़ने का सारा वृत्तांत विस्तार के साथ राजा को सुनाया।

सारा वृत्तांत सुनकर राजा राजहंस की अलौकिक शक्ति पर बहुत प्रसन्न हुए। फिर उन्होंने राजहंस से अनुरोध किया, “हे पक्षी राज, सूर्य के साथ होड़ लगाने से भी कहीं अधिक अपनी महान शक्ति और प्रज्ञा दिखाइए। उस दृश्य को देखने की कई दिनों से मेरी प्रबल इच्छा है।”

राजहंस ने राजा को अपनी शक्ति का परिचय देने की स्वीकृति देते हुए कहा, “राजन, आप के राज्य में बिद्युत से भी अधिक द्रुतगति के साथ बाण चलानेवाले धनुर्धारी हों तो ऐसे चार व्यक्तियों

को यहाँ बुलवाइए।” राजा ने ऐसे चार धनुर्धारियों को बुलवाया।

राजा के उद्यान में एक चौकोर स्तम्भ था। राजहंस ने उस के चतुर्दिक् चारों धनुर्धारियों को खड़ा कर दिया। इसके बाद वह अपने गले में एक घंटी बाँध कर स्तम्भ पर बैठ गया।

“मेरा संकेत पाते ही तुम चारों अपने बाण छोड़ दो। क्षण भर में मैं तुम चारों के बाण लाकर तुम्हारे सामने रख दूँगा। पर तुम लोग मेरे कंठ में बंधी घण्टी की ध्वनि से ही मेरी गति का परिचय पा सकते हो। तुम लोग मुझ को उड़ते हुए देख न सकोगे।” राजहंस ने उन धनुर्धारियों से कहा।

अपने वचन के अनुसार विद्युत की कौंध की अवधि के अन्दर राजहंस ने धनुर्धारियों के द्वारा छोड़े गये बाण लाकर उन के सामने रख दिये।

राजा तथा उनका परिवार विस्मय में आकर दातों तले अंगुली दबाने लगे।

इस पर राजहंस बोला, “राजन, आपने जो मेरी गति देखी है, यह मेरी निम्नतम गति है। इसके आधार पर आप अनुमान लगा सकते हैं कि मेरी

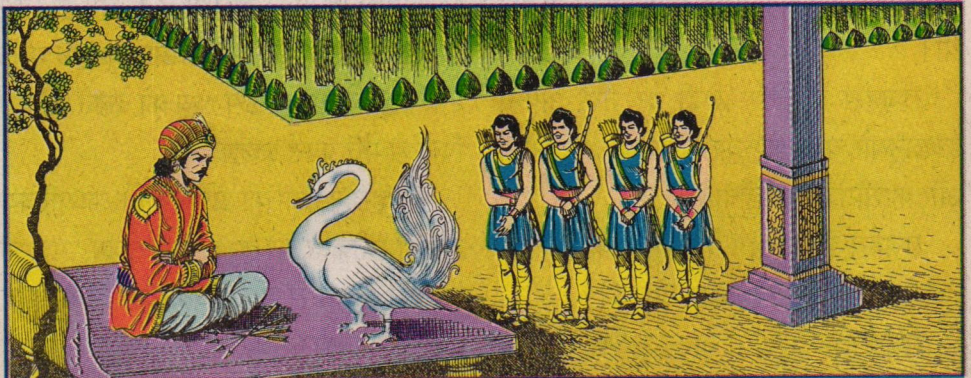
वास्तविक गति क्या होगी?” राजा बड़े ही आतुर होकर बोले- “हे पक्षीराज, तुम्हारे वेग का नमूना तो मैंने देख लिया लेकिन क्या इससे भी अधिक वेग रखनेवाला कोई है?”

इस पर राजहंस ने कहा, “क्यों नहीं? मुझ से भी अनन्त गुना अधिक वेग रखने वाली एक महाशक्ति है। वही काल नामक सर्प है। वह काल सर्प प्रति क्षण विश्व के जीवों को अवर्णनीय वेग के साथ नष्ट कर रहा है।”

ये बातें सुन कर राजा भय से कांप उठे।

तब राजहंस के रूप में बोधिसत्त्व ने काशी राजा को इस प्रकार तत्त्वोपदेश दिया, “राजन, जो लोग इस बात का स्मरण रखते हैं कि काल सर्प नामक कोई चीज़ है, उन्हें डरने की आवश्यकता नहीं है। आप जब तक नीति व धर्म के साथ शासन करते रहेंगे, तब तक आप को किसी का कोई भय न होगा। इसलिए आप विधिपूर्वक अपने कर्तव्य करते जाइए।”

बोधिसत्त्व के उपदेशानुसार काशी राजा ने धर्म मार्ग पर शासन करके अपार यश प्राप्त किया।





रामायण

राम ने मूर्छित तारा को देखा। तारा ने राम को देखकर उनके पास आकर कहा, “राम, मेरे पति ने आपका क्या बिगाड़ा था, जिसके कारण आपने उसका वध कर दिया। आपने मुझे अनाथ कर दिया है। मैं पति के बिना जीवित नहीं रह सकती। इसलिए जिस बाण से आपने मेरे पति को मारा है, उसी बाण से मुझे भी मारकर, मुझे भी मेरे पति के पास भेज दीजिये। जिस तरह आप सीता के लिए तड़प रहे हैं, उसी तरह मेरे लिये बाली भी उस लोक में तड़पेगा। बाली की मृत्यु के बाद मैं जीवित शव ही हूँ, इसलिए आप पर स्त्री हत्या का दोष भी न लगेगा।” वह यों कहकर रोने लगी।

राम ने तारा और सुग्रीव को यथोचित आश्वासन दिया। बाली के दाह-संस्कार का उत्तरदायित्व,

राम ने लक्ष्मण को सौंपा। तारा किष्किन्धा जाकर बाली को ले जाने के लिए एक पालकी ले आयी। सुग्रीव और अंगद ने बाली को उठाकर पालकी में बिठाया। बलवान वानर पालकी उठाकर चले। पीछे-पीछे किष्किन्धा नगर की स्त्रियाँ रोती चल रही थीं। एक नदी के किनारे रेत पर बाली की चिता की व्यवस्था की गई। अंगद ने विधि के अनुसार चिता को आग लगाई।

दहन क्रिया के बाद, सुग्रीव गीले कपड़े पहने मन्त्रियों के साथ राम के पास आया। तब हनुमान ने राम से कहा, “आपकी कृपा के कारण ही, सुग्रीव वानर राज्य प्राप्त कर सका। उसे राज्य का भार उठाना है। इसलिए आप आकर उसका विधिपूर्वक पट्टाभिषेक कीजिये।”

किष्किन्धा काण्ड - ४



इस पर राम ने कहा, “हनुमान, पिता की आज्ञा के अनुसार मुझे चौदह वर्षों तक ग्रामों में व नगरों में पैर नहीं रखना चाहिए। उससे वनवास की मर्यादा का उलंघन होता है। हमें तब तक वनवास में ही रह कर कन्दमूल पर निर्भर रहना है। इसलिए हम नगर में नहीं जायेंगे। अतः आप सब सुग्रीव को किष्किन्धा ले जाइये और उसका वहाँ विधि पूर्वक पट्टाभिषेक करवाइये।” राम ने सुग्रीव से अंगद को युवराज बनाने के लिए कहा। राम ने कहा कि चूँकि वर्षा ऋतु शुरू होनेवाली है, इसलिए वर्षा के खत्म होने तक ऋष्यमूक पर ही एक बड़ी गुफा में रहूँगा। कार्तिक मास के प्रारम्भ होते ही, सुग्रीव को रावण का पता लगाकर उस पर आक्रमण के लिए सन्नद्ध रहने के लिए कहा।

सुग्रीव किष्किन्धा गया। विधिपूर्वक उसने

वहाँ पट्टाभिषेक करवाया। किष्किन्धा के वानर बड़े सन्तुष्ट हुए। गज, गवाक्ष, गवय, शरभ, मन्धमादन, मैन्द, हनुमान, जाम्बवान, नल ने सोने के कलशों में रखे पानी से सुग्रीव का अभिषेक किया। पट्टाभिषेक के बाद, सुग्रीव ने अंगद का युवराज के पद पर पट्टाभिषेक करवाया। अंगद ने किष्किन्धा के नागरिकों को, जो उसका आदर सम्मान करते थे सन्तुष्ट किया। फिर सुग्रीव राम लक्ष्मण के पास गया और जो कुछ हुआ था, उसे सुनाया। किष्किन्धा वापिस जाकर वह अपनी पत्नी रूपा के साथ आराम से समय बिताने लगा।

सुग्रीव के राजा बन जाने के बाद, राम लक्ष्मण ने अपना निवास प्रसुण पर्वत पर एक विशाल गुफा में बदल लिया। इस गुफा में सब तरह की सुविधायें थीं। गुफा में बारिश की बौछार न आती थी, न तेज हवायें ही। समीप ही नदी थी। यही नहीं, यह गुफा किष्किन्धा के पास भी थी, किष्किन्धा के वानरों के गीत, वाद्य ध्वनि भी सुनी जा सकती थी। इस गुफा में राम दिन रात सीता के लिए तड़पते रहे। लक्ष्मण उन्हें आश्वासन देता जाता था। उन्हें कभी कभी यह भी सन्देह होता कि सुग्रीव मदद करेगा कि नहीं। वे इस प्रतीक्षा में थे कि कब ये चार मास बीत जायें और कब शरत्काल आ जाये।

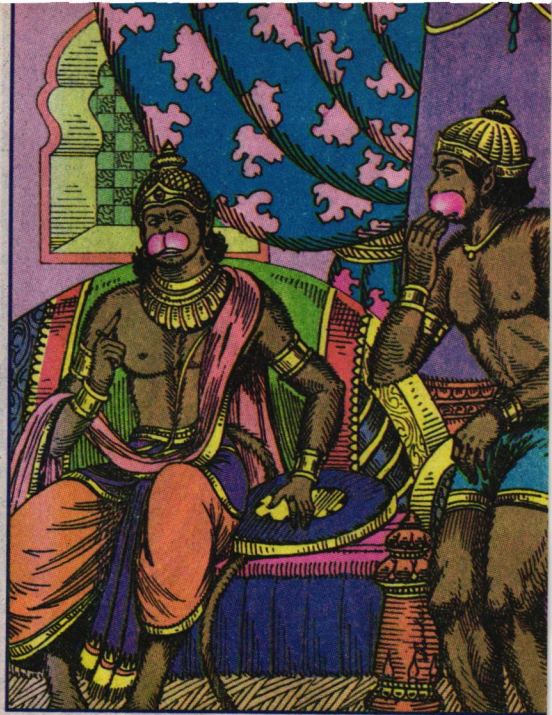
वर्षा ऋतु आयी और चली गई। सुग्रीव अपनी पत्नी रूपा और बाली की पत्नी तारा के साथ दिन रात इस तरह भोग विलास में मस्त रहा कि उसने मन्त्रियों पर राज्य भार छोड़ दिया और यह

भी भूल गया कि राम की मदद करने का समय आ गया है।

तब हनुमान ने सुग्रीव के पास आकर कहा, “तुम्हें राज्य और कीर्ति मिल गई है। शत्रु भय भी नहीं है। परन्तु मित्रों की मदद की जिम्मेवारी, अभी वैसी की वैसी ही है। इस तरह की बातों में लापरवाही करना ठीक नहीं है। यद्यपि राम तुम्हारी मदद की प्रतीक्षा बड़ी आतुरता से कर रहे हैं और पत्नी के वियोग में दुःखी हैं, तो भी राम ने तुम्हारी जिम्मेवारी के बारे में याद नहीं दिलाया है। यह उनकी उदारता और विशालता है। उन्होंने तुम्हारे दुख को अपना दुख समझ कर तुम्हारे साथ सच्ची मैत्री निभाई। सिर्फ तुम्हारी भलाई के लिए, तुम्हारी इच्छा की पूर्ति के लिए, तुम्हारी मान मर्यादा फिर से लौटाने के लिए बाली का वध किया जिसके साथ उनकी शत्रुता नहीं थी। यह सब उन्होंने मैत्री धर्म के पालन के लिए किया। लेकिन मैत्री धर्म के पालन की अब तुम्हारी बारी है। यदि उनके याद दिलाने से पहले ही हमने अपना काम शुरू कर दिया तो हम लापरवाही के दोषी नहीं ठहराये जायेंगे। यदि तुमने अपना वचन नहीं निभाया तो न सिर्फ लापरवाही के दोषी होंगे बल्कि विश्वासघात का अपराधी भी माने जाओगे। इस बात को याद रखो।”

इस प्रकार हनुमान ने सुग्रीव को अपने कर्तव्य और उत्तरदायित्व के प्रति सजग कराया।

यह सुन सुग्रीव चौंका। उसने नील को बुलाकर सेनाओं को एकत्र करने के लिए कहा।



यह घोषित करवा दिया कि जो वानर पन्द्रह दिनों में किष्किन्धा नहीं पहुँचेगा, उसको मरण दण्ड दिया जायेगा। जाम्बवान आदि मुखियाओं के पास अंगद को साथ लेकर नल को स्वयं जाने के लिए कहा।

एक दिन लक्ष्मण फलों की खोज में खूब घूम-घामकर गुफा में पहुँचा, तो राम अत्यन्त दुःखी बैठे थे। शरत्काल के साथ उनके वियोग का दुःख और भी बढ़ गया था। राम को उसने आश्वासन दिया, “दुःख अनावश्यक है। कर्तव्य पूरा करने के लिए धैर्य और उपाय की आवश्यकता है। सुग्रीव अपने वचन का पालन करेगा और रावण का पता लगायेगा। हमारे लिए इतना ही पर्याप्त है। हमलोग स्वयं रावण को मार कर सीता को ले आयेंगे।” राम ने कहा, “लक्ष्मण! वर्षा ऋतु चली



गई है। शरत्काल आ गया है। ये चार महीने मैंने बड़े कष्ट से काटे हैं। राजाओं के युद्ध पर जाने का समय आ गया है। पर सुग्रीव का अब तक कहीं पता नहीं है। वह कुछ तैयारियाँ भी करता नहीं मालूम होता। राम का कोई नहीं है। राज्य भ्रष्ट है। जंगलों में फिर रहा है। पत्नी को रावण ले गया है। मारा मारा हमारी शरण में आया है, शायद वह यह सोच रहा है। चूँकि अब उसका काम हो गया है, इसलिए शायद अब अपना वचन भूल गया है। तुम किष्किन्धा जाकर कहो कि वह वचन न निभानेवाला पुरुषाधम है। प्रत्युपकार न करनेवाले के शव को कौब्वे और गिद्ध भी नहीं छूते। शायद वह फिर बाणों की ध्वनि सुनना चाहता है। क्या इसलिए ही मैंने इस सुग्रीव से मैत्री करके बाली को मारा था? पर इस सुग्रीव को भी परिवार के साथ

मार सकता हूँ। इसलिए सुग्रीव के पास शीघ्र जाओ और उसे अपने कर्तव्य का स्मरण दिलाने के लिए जो उचित समझो, वह कहो।”

लक्ष्मण को भी सुग्रीव पर बड़ा गुस्सा आ रहा था। उसने राम से कहा, “उसे यह भी ख्याल नहीं रहा कि आपके कारण उसको राज्य प्राप्ति हुई। पत्नी प्राप्ति हुई। अब पी पीकर पत्नियों के संग मजा उड़ा रहा है। इस तरह के व्यक्ति को राजा नहीं रहने देना चाहिए। मुझे बड़ा गुस्सा आ रहा है। अभी जाकर मैं उसे बाली के पास भेज दूँगा। सीता को खोजने के लिए अंगद है ही और भी हनुमान आदि वानर वीर हैं।” बाणों को लेकर जाते हुए लक्ष्मण ने कहा।

राम ने लक्ष्मण को शान्त करते हुए कहा, “लक्ष्मण, जल्दबाजी न दिखाओ। मित्र वध करके निष्कारण पाप न करो। सुग्रीव ने समय पर न आने के सिवाय क्या अपराध किया है? तुम जाकर उससे मिठी ढंग से ही बात करो।”

लक्ष्मण किष्किन्धा पहुँचकर, सुग्रीव के घर गया। अति वेग से क्रुद्ध लक्ष्मण को जाते देखकर बड़े बड़े वानरों ने उसे शत्रु समझकर, उस पर फेंकने के लिए पेड़ उखाड़े। यह देख लक्ष्मण ने उनकी ओर घूरा। उसे घूरता देख वे दूर चले गये।

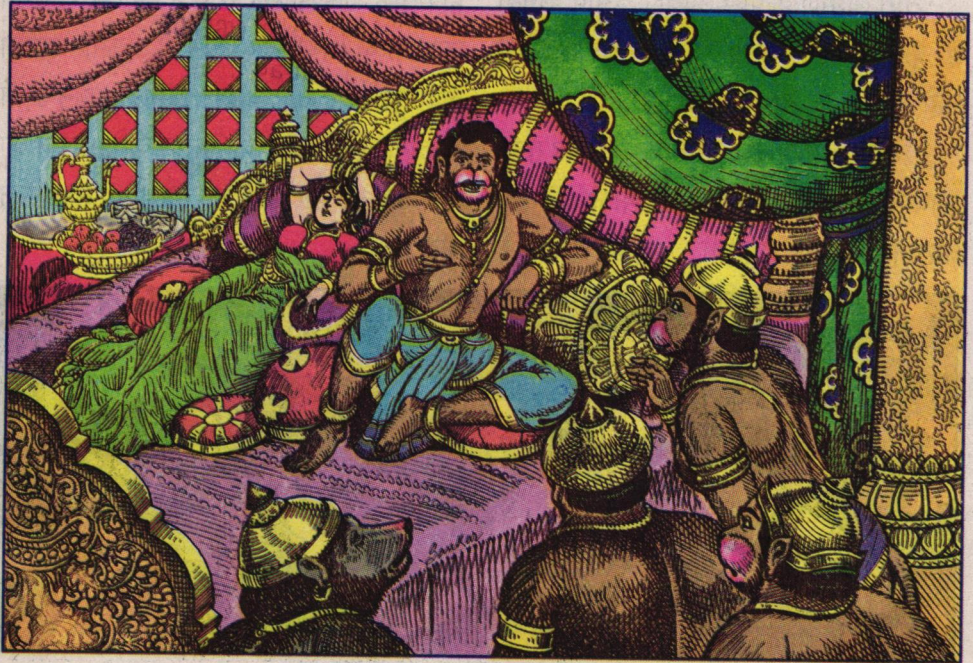
इस बीच सुग्रीव के मन्त्रियों ने कुछ वानरों को यह मालूम करने के लिए भेजा कि लक्ष्मण आ रहा है कि नहीं। उनके साथ आये हुए अंगद को देखकर लक्ष्मण ने कहा, “भाई, सुग्रीव से जाकर कहो कि राम की आज्ञा से मैं उससे मिलने आया

हूँ और उससे कुछ बात करना चाहता हूँ। यह पता लगाओ कि वह मुझ से बात करना चाहता है कि नहीं।” अंगद डरता-डरता सुग्रीव के पास गया। उसने उसको और अपनी माँ को प्रणाम करके जो कुछ लक्ष्मण ने कहने के लिए कहा था, कहा। क्योंकि सुग्रीव नशे में था, इसलिए उसने उसकी एक न सुनी। परन्तु लक्ष्मण के रौद्र रूप को और वानरों के कोलाहल को देखकर सुग्रीव का नशा कुछ हटा।

जब अंगद प्लक्ष और प्रभाव नाम के मन्त्रियों को लेकर सुग्रीव के पास पुनः गया, तब वह कुछ होश में था। उन्होंने उससे कहा कि लक्ष्मण उससे मिलने आया है। सुग्रीव जान गया कि लक्ष्मण खाली हाथ नहीं आया है, बल्कि हथियारों को लेकर आया है और गुस्से में है।

सुग्रीव ने मन्त्रियों से कहा, “मैंने कोई गलती नहीं की है। लक्ष्मण मुझ पर क्यों क्रुद्ध है? कहीं मेरे शत्रुओं ने उससे मेरी चुगली तो नहीं खायी है? तुम जैसे-तैसे उसके क्रोध का कारण पूछो। ऐसी बात नहीं कि मुझे राम-लक्ष्मण से भय है। पर मित्र के क्रुद्ध होने पर चिन्तित होना स्वाभाविक ही है। राम के उपकार का प्रत्युपकार करना मेरे लिए सम्भव नहीं है।”

तब हनुमान ने सुग्रीव से कहा, “राजा, राम शायद तुम पर कुछ ही बिगड़े हैं। सचमुच क्रुद्ध नहीं हुए हैं। तुमने शरत्काल के आने की परवाह न की। इसलिए ही लक्ष्मण आये हैं। अगर वह कुछ कह भी बैठे तो तुम सब सह लेना, क्योंकि गलती तुम्हारी ही है। राम को गुस्सा दिलाना किसी के लिए अच्छा नहीं है, और तुम्हारे लिए,



जिसका उन्होंने भला किया, सर्वथा, अनुचित है। इतना ही नहीं, यह कहना कि प्रत्युपकार सम्भव नहीं है, कृतघ्नता भी है। ऐसा लक्ष्मण से कभी न कहना। नहीं तो उसका क्रोध भड़क जायेगा। तुम्हें राम-लक्ष्मण से युद्ध करना पड़ेगा। तुम्हारी शान्ति, चैन और सुख जो भोग रहे हो, सब नष्ट हो जायेंगे। इसलिए राम-लक्ष्मण को नाराज कर अपने दुर्भाग्य को न्योता तुम्हारे हित में यह सलाह दे रहा हूँ।

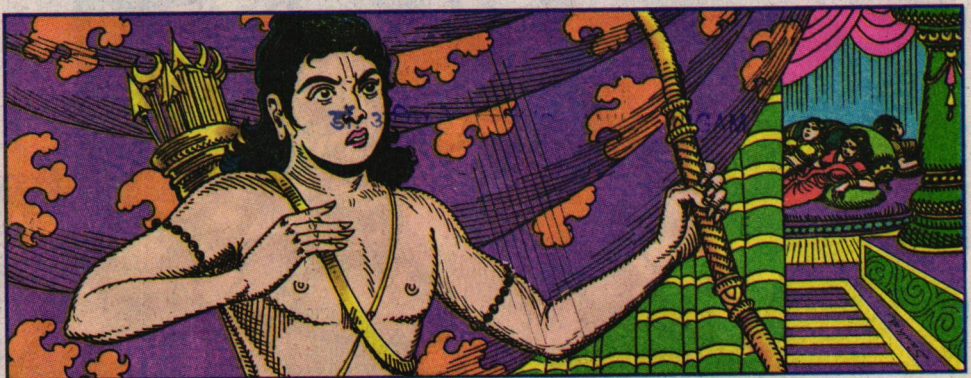
इस बीच लक्ष्मण, सुग्रीव के अन्तःपुर में आया। अन्दर स्त्रियों की आवाज सुनकर, वह रुक गया। लक्ष्मण के धनुष की आवाज सुनकर सुग्रीव उसके सामने जाते हुए डरा और उसने तारा को लक्ष्मण से बातें करने के लिए तारा लक्ष्मण के पास आयी। “आप, लक्ष्मण हैं, क्रुद्ध हैं? क्यों? क्या आपकी बात किसी ने नहीं मानी है?” तारा ने पूछा।

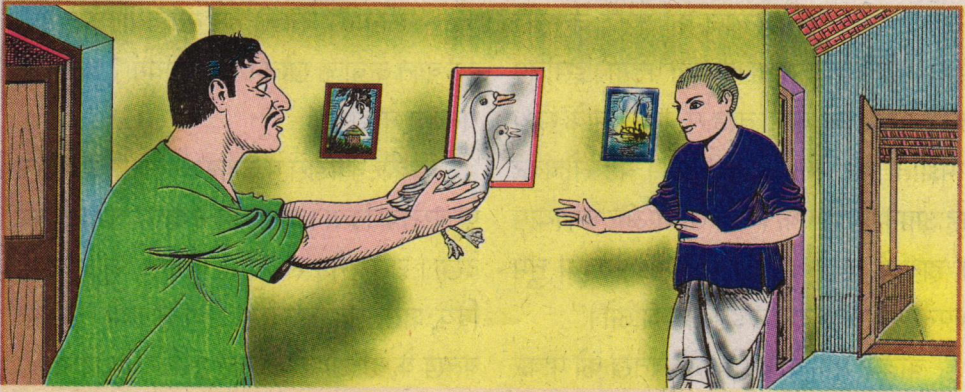
“सुग्रीव हमेशा नशे में रहता है और वह राज्य कार्य नहीं देखता। हमारी परवाह भी नहीं करता, क्या तुम यह नहीं जानती? युद्ध की तैयारी के

लिए चार महीने का समय लिया। समय समाप्त हो गया और हमारा कार्य अभी शुरू नहीं हुआ। हमें क्या करना है तुम ही बताओ।” लक्ष्मण ने तारा से कहा।

तारा ने उससे कहा, “सुग्रीव भोग विलास में मस्त है, यह देख क्रुद्ध न होओ। वह आपका नहीं भूला है। आपके काम पर उसने वानरों को नाराज करवा दिया है। दूर दूर पर्वतों से वानर लाखों खूबियों में आ रहे हैं।” यह कहकर वह उसको

अन्तःपुर में ले गई। तारा ने तारा के साथ लक्ष्मण अन्दर गया तो सुग्रीव पीकर कई स्त्रियों के बीच में बैठा था। लक्ष्मण यह देख बिगड़ा। उसने सुग्रीव को देखकर कहा, “तुमने उपकारी सुग्रीव को नाराज कर दिया, तुम कृतघ्न हो। तुम्हें कोई भी मार सकता है। राम से तुमने काम करवाया, तुमने अपने क अनुसार उसका काम तुम्हें नहीं किया। इसलिए अपने वचन के अनुसार मित्र धर्म का पालन करो। रावण का पता लगाओ और सीता को खोजो।” लक्ष्मण ने कहा।





सोने के अण्डे

एक गाँव में घनश्याम नामक एक गरीब युवक था। उसके अपना कहने वाला कोई न था। उसके रहने के लिए एक छोटी-सी झोंपड़ी थी। एक मुर्गी को वह पालता, दिन-भर कड़ी मेहनत करता और उससे जो कुछ मिलता, रूखा-सूखा खाकर अपना पेट भर लेता। अगर किसी दिन मजदूरी नहीं मिलती तो मुर्गी के दिये अण्डे पकाकर खा लेता और पानी पीकर सो जाता।

घनश्याम के पड़ोस में धनराज नामक एक अमीर था। धनराज लालची ही नहीं बल्कि ईर्ष्यालु भी था। दूसरों को खुश देख वह सहन नहीं कर पाता था। घनश्याम के पास कौड़ी भी न थी, फिर भी उसको निश्चित रहते देख धनराज का दिल कसक उठता था। उसकी मुर्गी को देख ईर्ष्या होती थी।

एक दिन जब घनश्याम बाहर गया, तब

मौका पाकर धनराज ने मुर्गी को मार कर खा लिया। घनश्याम ने घर लौटकर देखा तो उसकी मुर्गी गायब थी। मगर मुर्गी के पर धनराज के घर के आहाते में दिखाई दिये। इसलिए घनश्याम ने धनराज के घर जाकर पूछा, “तुमने मेरी मुर्गी को क्या किया? सच सच बता दो”।

“भाई साहब! मेरी बिल्ली कहीं से एक मुर्गी को पकड़ लायी। वह मुर्गी का गला काटने को थी, मैंने उसे बचाना चाहा, लेकिन क्या बताऊँ, वह मुर्गी मर ही गयी। लाचार होकर मैंने उसे पका कर खा लिया। मुझे क्या मालूम था कि वह मुर्गी तुम्हारी है।” धनराज ने जवाब दिया।

इस पर घनश्याम नाराज हो गया और बोला, “तुम मेरी मुर्गी लौटा दोगे या मैं राजा के पास जाकर शिकायत करूँ?”

धनराज डर गया; क्योंकि राजा सच

२५-वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

इन्साफ़-पसंद था। धनराज को ज़रूर जेल की सज़ा मिलेगी या जुर्माना चुकाना पड़ेगा। इसलिए उसने सोचा कि किसी तरह से घनश्याम के साथ समझौता कर लेना उचित होगा। यह सोचकर वह अपने घर से एक बतख लाया और घनश्याम के हाथ में रखते हुए बोला, “भाई साहब! तुम अपनी मुर्गी के बदले में इसे लेते जाओ।”

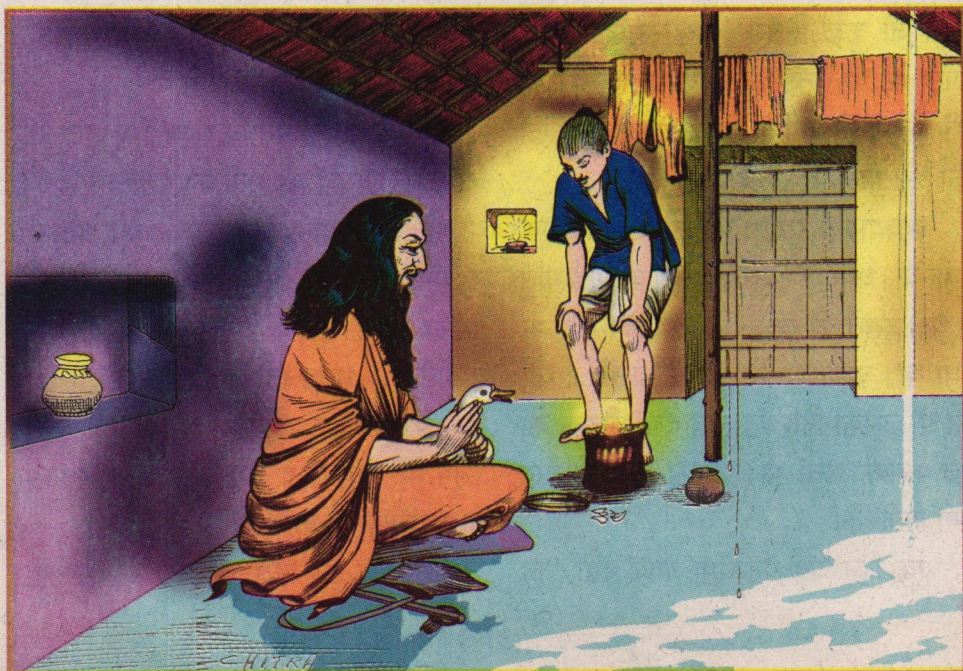
बढ़िया मुर्गी के बदले छोटे बतख को पाकर वह निराश हुआ, फिर भी झगड़ा करना अच्छा न समझकर चुपचाप बतख ले अपने घर चला गया। थोड़े दिन बाद बतख अण्डे देने लगा। बरसात का मौसम आया। एक दिन की रात को ज़ोर से पानी बरस रहा था। तब एक फ़कीर ने आकर धनराज का दरवाजा खटखटाया।

“कौन है? बेवक्त हमें तंग क्यों करते हो? इक वक्त दरवाजा खोलने कौन आयेगा? जाओ।” धनराज ने डाँटा।

फ़कीर ने पड़ोस में जाकर घनश्याम के दरवाजे पर दस्तक दिया। घनश्याम ने दरवाजा खोल कर देखा। उसे स्नेह से भीतर बुलाया, सूखे कपड़े दिये, शरीर सेंकने के लिए आग जलायी। उस पर बतख के दो अण्डे पकाकर फ़कीर को दिया।

“बेटा, बतख के ये अण्डे बड़े अच्छे हैं। देखूँ तो सही, तुम्हारा बतख कैसा है?” फ़कीर ने घनश्याम से पूछा। घनश्याम ने झाबे के नीचे से बतख को निकालकर फ़कीर के हाथ में दिया।

“बेटा! भगवान तुम्हारा भला करेगा।” इन शब्दों के साथ फ़कीर ने बतख पर हाथ फेरा, फिर



उसे घनश्याम के हाथ लौटा दिया। तब तक वर्षा थम गयी, इसलिए फ़कीर उसी अंधेरे में कहीं चला गया।

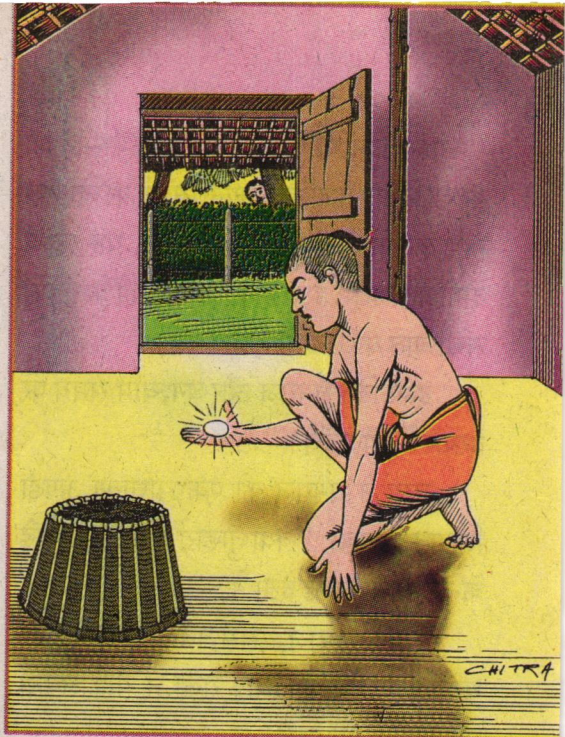
उसके दूसरे दिन से बतख ने सोने के अण्डे देना शुरू किया। इससे घनश्याम की गरीबी जाती रही। उस दिन से घनश्याम ने मजदूरी करना छोड़ दिया, साथ ही आराम से खा-पीकर जो कुछ बचता, उसे दान देने लगा। मगर वह उसी पुरानी झोंपड़ी में रहता था।

एक दिन धनराज ने खुद देखा कि घनश्याम बतखवाले झाबे के नीचे से एक सोने का अण्डा निकाल रहा है। फिर क्या था, धनराज ईर्ष्या से जल उठा। चूँकि वह बतख उसी का था, इसलिए उसकी ईर्ष्या दुगुनी हो गयी।

अगर धनराज घनश्याम से पूछता कि 'मेरे बतख को वापस लौटा दो।' तो वह नहीं देता। इसलिए धनराज अपने दो नौकरों को साथ ले सीधे राजा के दरबार में पहुँचा और शिकायत की, "महाराज, मेरा पड़ोसी घनश्याम रोज़ मेरे बतखों को हड़पता है। मैंने सोचा कि एक एक करके सबको बिलाव खाता जा रहा है, मगर कल घनश्याम को मेरे बतख को चुराते मेरे इन दो नौकरों ने देखा है। इसलिए महाराज से मेरा निवेदन है कि मेरे बतख को वापस दिलाने की कृपा करें।"

राजा ने अपने भटों को भेजकर घनश्याम को बतख के साथ राज दरबार में बुलाया।

"क्या यह सच है कि तुमने कल रात को धनराज के बतख को चुराया है?" राजा ने



घनश्याम से पूछा। घनश्याम समझ गया कि धनराज को बतख के सोने के अण्डे देने का समाचार मालूम हो गया है, इसीलिए वह यह चाल चल रहा है। उसने कहा, "महाराज! मैंने चोरी नहीं की। यह बतख धनराज का ही है। मगर कुछ दिन पहले इसने मेरी मुर्गी को मारकर खा डाला और बदले में मुझे यह बतख दिया है।"

"महाराज! यह झूठ बोलता है। कल इसको चोरी करते मेरे नौकरों ने अपनी आँखों से देखा है। मगर उसकी बात का गवाह कौन है?" धनराज ने कहा।

राजा ने यह कहकर उन दोनों को घर भेज दिया कि "फिलहाल इस बतख को मेरे पास ही रहने दो। कल फिर आ जाओ, तब मैं इन्साफ़ करूँगा।"

उस दिन भी बतख ने राजमहल में सोने का अण्डा दिया। राजा खुद अपनी आँखों पर विश्वास नहीं कर पाया। राजा ने सोचा कि यह रहस्य दोनों को मालूम हुआ होगा, मगर उन्हीं के मुँह से सच्ची बात कहलवानी होगी।

दूसरे दिन धनराज और घनश्याम समय पर दरबार में आ पहुँचे।

राजा ने धनराज को एक साधारण अण्डा दिखाते हुए पूछा, “क्या तुम्हारा बतख इस अण्डे के बराबर के अण्डे देता है?”

“नहीं महाराज, इससे बड़े अण्डे देता है।” धनराज ने जवाब दिया। राजा ने यही सवाल घनश्याम से भी पूछा।

“महाराज, वह मामूली अण्डे नहीं देता, बल्कि मेरा बतख रोज़ एक सोने का अण्डा देता है।” घनश्याम ने कहा।

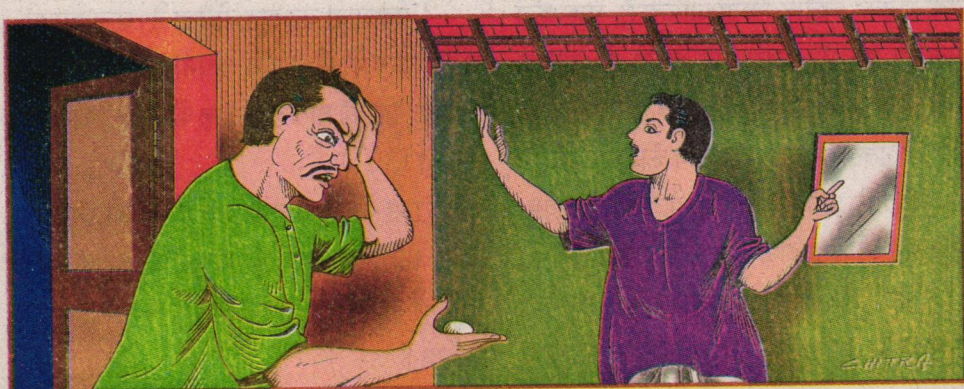
धनराज ने अपनी अक्लमंदी का परिचय देते हुए कहा, “यह कैसा सफ़ेद झूठ है, महाराज! बतख कहीं सोने के अण्डे देता है? असल में यह उसका बतख ही नहीं है।”

“तुम सच कहते हो। वह तुम्हारा ही बतख है। इसे तुम्हीं ले जाओ।” यह कहकर राजा ने एक साधारण बतख धनराज के हाथ देकर भेज दिया।

घनश्याम यह सोचकर चिंता में वहीं खड़ा रहा कि उसके साथ न्याय नहीं हुआ है, तब राजा ने उसे सांत्वना दी, “घनश्याम, तुम चिंता न करो। तुम्हारा बतख मेरे पास ही है। यह बतख सोने के अण्डे कैसे देता है? इसका रहस्य क्या है?”

घनश्याम ने फ़कीर का सारा समाचार राजा को कह सुनाया। घनश्याम की बातों को सुनकर राजा आश्चर्य में आ गया। उसने बिना कुछ सोचे घनश्याम को बतख के साथ राज दरबार में रह जाने को कहा।

धनराज जो बतख ले गया था, वह मामूली अण्डा ही देने लगा। जब उसे मालूम हुआ कि घनश्याम को दरबार में नौकरी मिल गयी, तब उसने सोचा कि उसकी करनी का अच्छा फल मिल गया है।





अपराजेय गरुड़

आदित्य धीरसेन के साथ
सूर्यपुरी जाता है जहाँ वे वज्रपुरी की घेराबन्दी
करने का निश्चय करते हैं। घेराबन्दी की अवधि में
आदित्य को अचानक मन्दिर स्थल पर वापस बुलाया
जाता है जहाँ राजा मानवेन्द्र के आग्रह पर अरुणा
के साथ विवाह सम्पन्न होता है।

मन्दिर से बाहर आते समय...

महाराज, मुझे अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए
वज्रपुरी जाने की आज्ञा दीजिये।
मैं दो-तीन दिनों में आप
सब से मिलूँगा।

आशा करती
हूँ राजकुमार हमलोगों
के पास शीघ्र ही
लौट आयेंगे।

आदित्य का
अपना उद्देश्य पूरा करना
महत्वपूर्ण है।

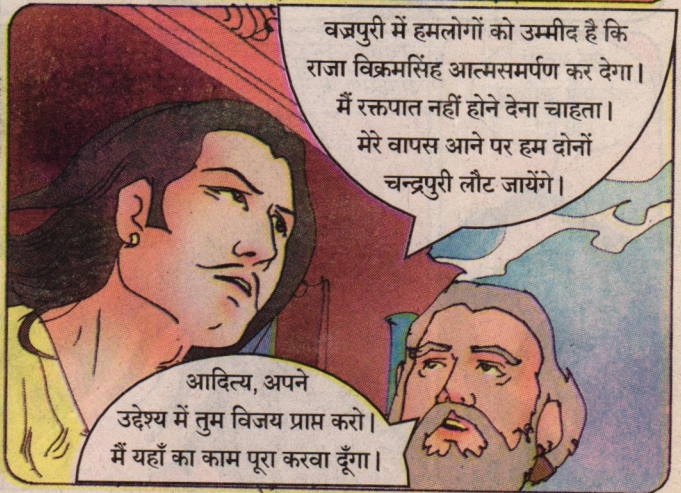
तुम अपने उद्देश्य पर जा
सकते हो। यदि अरुणा सहमत हो
तो मेरे साथ आ सकती है।

राजा और अरुणा को आदित्य और राजगुरु
विदा करते हैं।



हम सबको
बुद्धिमतापूर्ण निर्णय
के लिए राजा के
प्रति कृतज्ञ होना
चाहिये।

मुझे
दुख है कि
अरुणा को
अभी अकेली
जाना पड़ा।



वज्रपुरी में हमलोगों को उम्मीद है कि
राजा विक्रमसिंह आत्मसमर्पण कर देगा।
मैं रक्तपात नहीं होने देना चाहता।
मेरे वापस आने पर हम दोनों
चन्द्रपुरी लौट जायेंगे।

आदित्य, अपने
उद्देश्य में तुम विजय प्राप्त करो।
मैं यहाँ का काम पूरा करवा दूँगा।

आदित्य शिविर के निकट पहुँचने पर एक गरुड़ को शिविर स्थल के ऊपर मंडरा रहा है।



क्या यह मुझे सावधान करने आ रहा है?

तुम मेरी सुरक्षा के लिए चिन्तित हो। है न?



गरुड़ आदित्य के कन्धे पर बैठ जाता है।



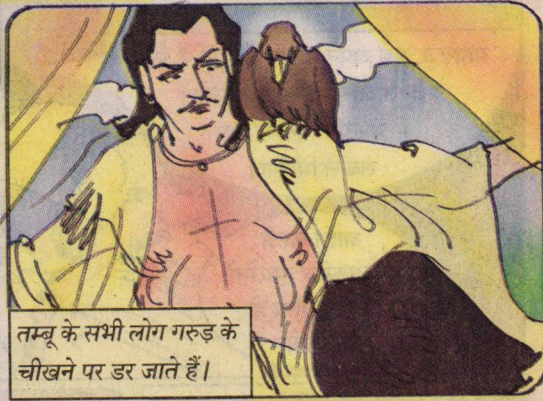
जब तक तुम मेरी रक्षा के लिए हो, मुझे कोई चिन्ता नहीं।

तम्बू में प्रवेश करने पर आदित्य देखता है कि पुष्पराज और धीरसेन बातचीत कर रहे हैं।



हमलोग चन्द्रपुरी से सेना वापस बुला लेंगे। रवीन्द्रदेव के बारे में..

उसे शीघ्र ही हमलोगों को सौंप देना होगा। आह! राजकुमार आदित्य आ गये।



तम्बू के सभी लोग गरुड़ के चीखने पर डर जाते हैं।

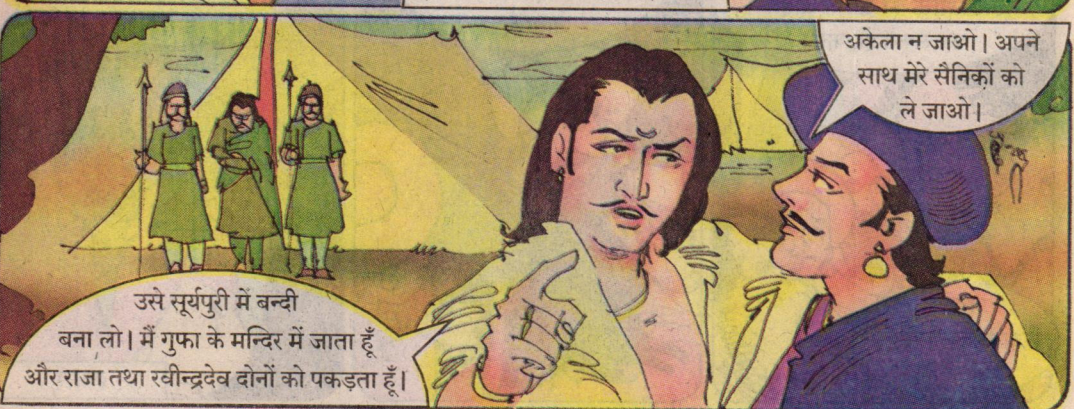
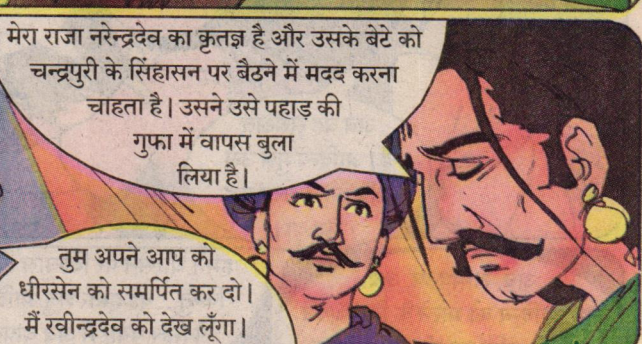
एक गरुड़! यह मुझे क्यों घूर रहा है?



अचानक गरुड़ आदित्य के कन्धे से उछल कर आक्रमण करने का प्रयास करता है।



ओय! बचाओ! बचाओ!!



राजा विक्रम सिंह तथा रवीन्द्रदेव एक गुप्त मार्ग में जंगल में पहुँचते हैं।

हम लोग गुफा के मन्दिर में जाने के लिए दो घोड़े लेंगे।

मार्ग के अन्त में...

आपत्काल के लिए घुड़साल! हमें दो घोड़े चाहिये!

जी हाँ, महाराज।

राजा और रवीन्द्रदेव घोड़ों पर सवार होकर पहाड़ की गुफा में जाते हैं।

गुफा के मन्दिर पर...

पिता! यह झूठे ही हो गया। राजा को गुप्त मार्ग मालूम था।

अब वह सुरक्षित है। आदित्य मुझे उसे साँप देने के लिए कह रहा था।

अब, आमपुरुष, अब तुम आदित्य को मारने के लिए अपने गुरु की शक्ति का जो भी आह्वान कर सकते हो, करो।

अवश्य, मैं अभी तुरन्त मन्दिर जाता हूँ।

हमने धीरसेन पर विश्वास किया, किन्तु... वह हमारे शत्रु आदित्य से मिल गया! मैं अब वापस जाता हूँ...

....और दोनों को पाठ पढ़ाता हूँ! रवीन्द्र, अपने पिता का ख्याल रखो और मेरे सन्देश का इन्तज़ार करो।

क्रमशः

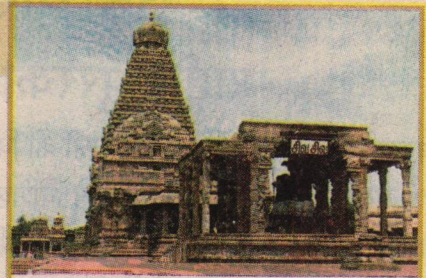
तीन चोला मन्दिर

तंजाऊर का बृहदीश्वर मन्दिर, गंगईकोण्डाचोलीश्वरम में एक और बृहदीश्वर मन्दिर तथा दारासुरम में ऐरावतेश्वर मन्दिर - इन तीनों मन्दिरों को प्रायः जीवन्त मन्दिर माना जाता है। इन मन्दिरों का निर्माण चोला राजाओं ने किया था जो ११ और १२ शताब्दी में दक्षिण भारत और कुछ पड़ोसी द्वीपों के शासक थे।

तंजाऊर के बृहदीश्वर मन्दिर का निर्माण १० वीं शताब्दी में राजाराज चोला ने कराया और उसकी रूपरेखा वास्तुकार सामा वर्मा ने तैयार की। केन्द्रीय मन्दिर, जिसे पेरिया मन्दिर (बड़ा मन्दिर) कहा जाता है, एक किले के अन्दर है, जिसकी दीवारें बाद में १६ वीं शताब्दी में निर्मित की गई थीं। विमान लगभग ६५ मी. ऊँचा और विश्व भर में सबसे अधिक ऊँचा है। इसकी रूपरेखा इस प्रकार बनाई गई है कि विमान की छाया दोपहर में वर्ष की किसी अवधि में भी नहीं पड़ती। इस मन्दिर की मीनार भी एकल शिला से निर्मित की गई है।

राजेन्द्र चोला-I द्वारा निर्मित गंगईकोण्डाचोलीश्वरम में बृहदीश्वर मन्दिर का निर्माण कार्य सन् १०३५ में पूरा हुआ। इसमें गर्भगृह के ऊपर ५३ मी. ऊँचा विमान (मीनार) है जिसमें ऊपर की ओर एक ललित घुमाव दिया गया है जब कि इससे भिन्न, तंजाऊर के मन्दिर में सीधी मीनार है। दारासुरम का ऐरावतेश्वर मन्दिर परिसर राजाराज चोला-II द्वारा निर्मित किया गया था। इसकी मुख्य विशेषता है २४ मी. ऊँचा इसका विमान।

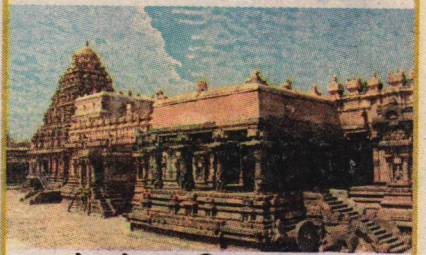
ये तीनों मन्दिर चोला वास्तुकला के विशिष्ट उदाहरण हैं और एक हजार वर्ष पुरानी तमिल सभ्यता का प्रतिनिधित्व करते हैं। तंजाऊर के बृहदीश्वर मन्दिर को सन् १९८७ में विश्व विरासत घोषित किया गया; अब तीनों मन्दिरों को “बड़े जीवन्त मन्दिरों” के रूप में ख्याति मिली तब यूनेस्को ने सन् २००४ में अन्य दो मन्दिरों को भी उसके विस्तार के रूप में जोड़ दिया।



बृहदीश्वर मन्दिर - तंजाऊर



बृहदीश्वर मन्दिर - गंगईकोण्डाचोलीश्वरम



ऐरावतेश्वर मन्दिर - दारासुरम

समाचार पत्रों में बच्चे

राष्ट्रीय पुरस्कार

मदुराई की सात वर्षीया एम.लवीनाश्री को विगत बाल दिवस पर १४ नवम्बर को वर्ष २००६ के लिए विशिष्ट उपलब्धि के लिए राष्ट्रीय बाल पुरस्कार दिया गया। तीन वर्ष की उम्र में उसने तिरुक्कुरल के सभी १,३३० दोहों को कण्ठस्थ सुनाया और लिमका बुक में प्रविष्टि हासिल की। तब से वह भिन्न-भिन्न साहित्यिक मंचों पर प्रदर्शन कर पुरस्कार पाती रही है जिनमें तमिलनाडु सरकार की ओर से दिये गये नकद पुरस्कार भी शामिल हैं। लवीनाश्री अब तीसरी कक्षा की छात्रा है।



विश्व उपाधि

गोवा की इवाना मारिया फरतादो ने अन्ताल्या, तुर्की में विगत २८ नवम्बर को शतरंज में अण्डर-८ विश्व उपाधि बरकरार रखी। उसने अन्तिम राउण्ड में काजकस्तान की झांसया अब्दुमलिक को हराया। वह कोनरु हम्पी तथा द्रोणावल्ली हरिका के बाद भारत की तीसरी लड़की है जिसने विश्व एज-ग्रूप उपाधि को एक बार से अधिक जीता है। विश्व चैम्पियन विश्वनाथन आनन्द ने लड़की की विजय की सराहना करते



हुए कहा कि उसे इस बात पर बहुत प्रसन्नता हुई कि एक और एज-ग्रूप विश्व चैम्पियन है।

संगीत निर्देशक

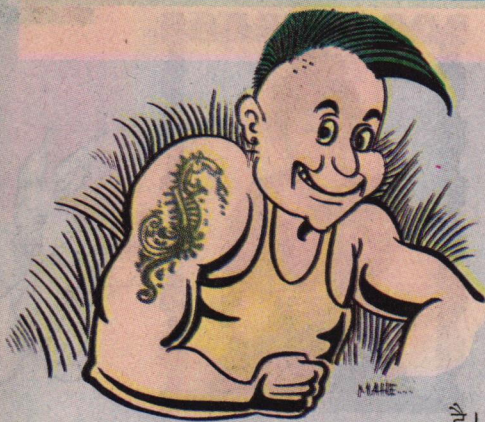
केरल का क्लिलोन निवासी चौदह वर्षीय वैसाख विजय “अड्यारागम” अलबम का संगीत निर्देशक है, जिसमें श्रीनिवास, मधु बालाकृष्णन, विधु प्रताप तथा मिनमिनी जैसे प्रसिद्ध मलयालम गायकों ने अपनी आवाज दी है। सन २००३ में पहली बार उसने मंच पर के.जे.यसुदास के साथ गाया था। चार वर्षों में वह संगीत निर्देशक बन गया है। अभी वह एर्नाकुलम के एक स्कूल में नवी कक्षा का छात्र है।



आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

टैटू



टैटू चाहे बाहों पर हो या पैरों, टखनों या शरीर के किसी अन्य भाग पर हो, यह त्वचा में सूई से स्याही द्वारा चित्रांकित किया जाता है। हाथ से पकड़े एक उपकरण में लगी सूई से त्वचा के एक भाग डर्मिज की कोशिकाओं में स्याही डाली जाती है। इससे टैटू फीका नहीं पड़ता और न फैलता है।

टैटू या गोदना प्राचीन काल से प्रचलन में है। कुछ वैज्ञानिकों का विश्वास है कि गोदना का प्राचीनतम ज्ञात प्रमाण हिममानव, मानव शरीर की ममी की त्वचा पर पाये निशानों से मिलता है जो ईसा पूर्व ३३०० वर्ष पुराना है। ईसा पूर्व २,००० वर्ष पुराने मिस्री तथा नूबियन ममीज पर पाये गये टैटूज को अधिक व्यापक स्वीकृति दी गई है।

अभी, विश्व की सेनाओं में इसका व्यापक प्रचलन है, क्योंकि इससे आसानी से उनकी पहचान की जा सकती है।

तुम्हारा प्रतिवेश

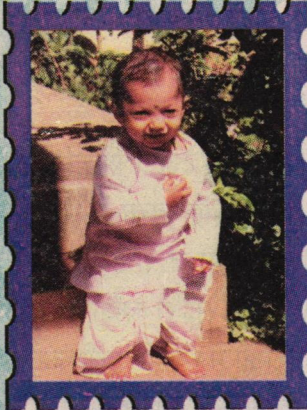
नाम में बहुत कुछ होता है

दक्षिण कोरिया का तट प्रचण्ड तूफान **मेमी** से आक्रान्त हुआ। इसमें भारी जान-माल की क्षति हुई। **मेमी** स्त्रीवाचक नाम है। ऑस्ट्रेलिया के मौसम विशेषज्ञ क्लेमेण्ट एल. रेग ने चक्रवातों के नामकरण का प्रचलन आरम्भ किया। वे, **साकार** और **एकेम** जैसे बाइबिल के नामों तक ही अटके रहे।



द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमरीकी रेडियो पर एक तूफान की चेतावनी प्रसारित की गई। आपरेटर को इस धुन की सीटी लगाते सुना गया, “एवरी लिटल ब्रीज सीम्स टु व्हिसपर लूईस।” यह प्रचलन का अंगुआ बन गया और चक्रवातों को सामान्य दैनिक लोगों के नाम दिये जाने लगे।

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

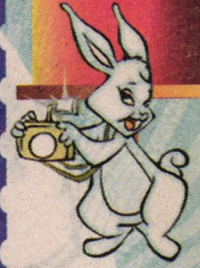


MAHANTESH C. MORABAD

क्या तुम कुछ
शब्दों में ऐसा
चित्र परिचय
बना सकते हो,
जो एक दूसरे
से संबंधित
चित्रों के
अनुकूल हो?



MAHANTESH C. MORABAD



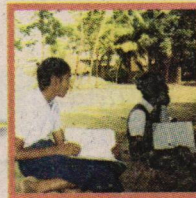
चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दा मामा,

जे वि एल प्लाजा, छठी मंजिल, नं. ६२६ (पु. नं. ५०१), अण्णा सालई, तेनाम्पेट, चेन्नई - ६०० ०१८.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का
पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

मोहित कुमार भाटी,
अजीत कॉलोनी, तरतोली रोड
पो-आबूरोड, जिला-सिरोही
राजस्थान-३०७०२६.

विजयी प्रविष्टि



चल रहा है इम्तिहान, मुझे पढ़ना है यार।
गुडया और गुड्डे का देखो यह प्यार ॥

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी के उत्तर:

१. मादाम भीखाजी कामा, स्टूटगार्ट, जर्मनी में;
२. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन;
३. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विश्व भारती;
४. आर. वेंकटरमन;
५. श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित, संयुक्त प्रान्त।

CALL IT A MAGAZINE PLUS!



**MUCH MORE
THAN A MAGAZINE
FOR TINY-TOTS –
TO KINDLE YOUR
YOUNG ONE'S
IMAGINATION**

**The young and the old
react thus:**

The info-park pages are very
useful as they help us to know
various facts about different
topics. (January 2008)

- S. Athreya Uppili (8), Bangalore

The page for Parents and Teachers is a
wonderful addition to the unique
Junior Chandamama. Very often, I see
my son poring over the pages when he runs to me for
a meaning, explanation or clarification. (January 2008)

- Kamaljit Arora, Chandigarh

**JUNIOR CHANDAMAMA MAKES AN IDEAL BIRTHDAY GIFT
FOR YOUR CHILD OR HIS/HER FRIEND.**

Annual subscription (12 issues delivered at door) Rs. 170. Payment
by Cheque / D.D. favouring Chandamama India Ltd.
(Please add Rs. 90 on non-Chennai cheques)

Please mail to : **Chandamama India Ltd.**, JVL Plaza, 6th floor, 626 Anna Salai, Teynampet, Chennai - 600 018
Tel : (044) 24334455 Telefax : 24322103 email : chandamama@chandamama.com web : www.chandamama.com

**Write down the child's name, age, class, school, and complete residential address with PIN code.
Allow 4 weeks for the first copy to arrive by post.**



* Contest To Appear In The
April, May And June Issues



बुब्बा के कारनामे



चार नन्हें बच्चे एक मनोरंजन पार्क में पंक्ति में खड़े बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं।



वे लोग उत्तेजित होकर रोलर कोस्टर में चढ़ने के लिए इन्तजार में हैं।



जैसे ही वे उस पर चढ़ने लगे, एक बड़ा लड़का उन्हें रोकता है।



छोटे बच्चे अनुरोध करते हैं।



उदास होकर जब जाने लगते हैं, तब बुब्बा सीटी मारता है और कुछ बुब्बालू फेंकता है।



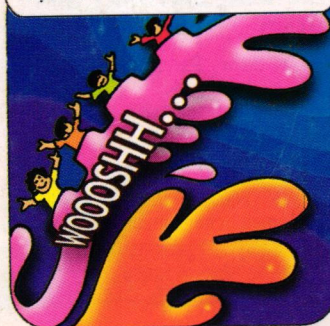
क्या रोलर कोस्टर चाहिये, बच्चों? बस, इसे जरा मुँह में रखो।



वे बुब्बालू कैंडी खाते हैं और बुलबुले बनाते हैं।



हर बुलबुले से जूसी मस्ती का बहुत बड़ा रोलर कोस्टर बन जाता है...



...जो बच्चों को बेतहाशा सवारी का मजा देता है। चकर खाते, धूमते और मुड़ते हुए।

